Bachelor of Arts

Hindi-1

(DBAPCO106H24)

Self-Learning Material

(SEM I)

Jaipur National University

Centre for Distance and Online Education

Established by Government of Rajasthan
Approved by UGC under Sec 2(f) of UGC ACT 1956
&
NAAC A+ Accredited

अनुक्रमणिका

पाठ्यक्रम परिचय	(i)
इकाई 1 हिंदी ध्वनियों का स्वरूप एवं विकास (व्याकरण)	01 – 25
इकाई 2 साहित्यिक खण्ड	26 – 60
इकाई 3 हिंदी भाषा का विकास	61– 68
इकाई 4 लेखन कौशल	69 – 78

EXPERT COMMITTEE विशेषज्ञ समिति

Prof. Rita Arora
Department of Humanities
JNU, Jaipur

Prof. Anshu Bhatia
Department of Humanities
JNU, Jaipur

COURSE CORRDINATOR पाठ्यक्रम समन्वयक

Dr. Renu Sharma
Department of Humanities
JNU, Jaipur

UNIT PREPARATION इकाई तैयारी

Unit Writers	**Assisting & Prof Reading**	**Unit Editor**
Dr. Renu Sharma Department of Humanities JNU, Jaipur (Unit 1 – 2) Dr. Vishnu Sharma Department of Humanities JNU, Jaipur (Unit 3 – 4)	Dr. Grishma Shukla Department of Humanities JNU, Jaipur	Dr. Renu Sharma Department of Humanities JNU, Jaipur

Secretarial Assistance:

Mr. Shubham

COURSE INTRODUCTION पाठ्यक्रम परिचय

हिंदीभारत में संचार की एक प्राथमिक भाषा और ,आर्यन समूह का हिस्सा-यूरोपीय भाषा परिवार के भीतर इंडो-इंडो , दक्षिण एशिया में एक प्रमुख सांस्कृतिक घटक है। हिंदी में विभिन्नप्रकार की ध्वनियाँ हैं जिनमें ,स्वरछोटे और : ,अनुनासिक स्वर ,लंबे स्वरव्यंजन महाप्राण और अनाप्राणित व्यंजन के लिए विशिष्ट ध्वनियाँ तथा लिंग पुल्लिंग) (या स्त्रीलिंग, संख्या के लिए विभक्ति (वाचिक ,तिरछा ,प्रत्यक्ष) और केस (एकवचन या बहुवचन)शामिल हैं। हिंदी व्याकरण लिंगवाचक संज्ञाओं ,पूर्वसर्गों के स्थान पर उपसर्गों और विषय-वस्तु-क्रिया शब्द क्रम का उपयोग करता है।

पाठ्यक्रम में 4 इकाइयाँ हैं। प्रत्येक इकाई में एक उपविषय विखंडन होता है। जो छात्र इकाइयां पूरी कर लेंगे उन्हें हिंदी भाषा की गहन समझ होगी।

प्रत्येक इकाई के अंदर अनुभाग और उप-खंड होते हैं। प्रत्येक इकाई उद्देश्यों के एक विवरण के साथ शुरू होती है जो उन लक्ष्यों की रूपरेखा प्रस्तुत करती है जिन्हें हम आशा करते हैं कि आप पूरा करेंगे। इकाई के प्रत्येक खंड में कई कार्य हैं जिन्हें आपको पूरा करने की आवश्यकता है। इकाई के अंत में ,आपको अपने उत्तरों की तुलना हमारे उत्तरों से करनी चाहिए।

एक असाइनमेंट इस पाठ्यक्रम पर आधारित होगा। आपको पूरा किया हुआ असाइनमेंट उस अध्ययन केंद्र समन्वयक को ईमेल करना होगा जिसे आपको सौंपा गया था। मूल्यांकन के बादआपको टिप्पणियो ,ं के साथ असाइनमेंट वापस मिलता है जो आपको एक बेहतर विद्यार्थी बनने में मदद करेगा।

हम कामना करते हैं कि आप पाठ्यक्रम का आनंद लें। कृपया इकाइयों में शामिल सभी अभ्यासों और गतिविधियों को आज़माएँ। हमें यकीन है कि यदि आप इसका अनुसरण करेंगे तो आप हिंदी भाषा में बेहतर हो जाएंगे।

Course Outcomes:

1. हिंदी भाषा की विभिन्न विधाओं का अध्ययन में उपयोग कर सकेंगे।
2. हिंदी भाषा के वर्णों का विश्लेषण कर सकेंगे।
3. हिंदी भाषा व्याकरण की व्याहारिक उपयोगिता का मूल्यांकन कर सकेंगे।
4. हिंदी भाषा के उद्भव और विकास का प्रत्यास्मरण कर सकेंगे।
5. हिंदी की लिपियों व बोलियों से अवगत हो सकेंगे।
6. हिंदी भाषा का प्रयोग प्रभावशाली संप्रेषण व लेखन के रूप में कर सकेंगे।

Acknowledgements:

हमने जो सामग्री उपयोग की है वह पूरी तरह से शैक्षिक प्रकृति की है। इस पुस्तक में पुनरुत्पादित सामग्रियों के कॉपीराइट स्वामियों का यथासंभव पता लगाया गया है। संपादक किसी भी उल्लंघन के लिए क्षमा चाहते हैं ,और वे इस पुस्तक के बाद के संस्करणों में ऐसी किसी भी सामग्री को सुधारने में प्रसन्न होंगे।

इकाई 1 व्याकरण
हिंदीध्वनियोंकास्वरूपएवंविकास

• भाषामेंउच्चारणकीसबसेभौतिकईकाइस्वनहैंजिसेध्वनिकेरूपमेंदेखाऔरविश्लेषितकियाजासकताहै।
•
इसकीअवधारणाभाषानिरपेक्षहोतीहै।स्वनियोंकाउच्चरितरूपस्वनकहलातहै।अर्थातजबस्वनिमउच्चरित होतेहैंतोवहीस्वनकहलातेहै।
• ध्वनिशब्दध्वनधातुकेसाथईप्रत्ययजोड़नेसेबनताहैइसकाअर्थहैआवाज।
मानवजबबोलताहैउसकेमुखविवरसेवायुनिकलतीहैजोवागेन्द्रियकेद्वाराकुछवाणीप्रकटकरतीहै।उसीको स्वनअथवाध्वनिकहाजाताहै।स्वनभाषाकामूलआधारहै।औरस्वनचिन्होकेसमूहकानामभाषाहै।स्वनअथ वाध्वनिहीवाणी, वाक, बोलीआदिकेरूपमेंव्यक्तहोतीहै।
•
व्यक्तिकेमुखमेंविविधप्रकारकीध्वनियोंकेउत्पन्नकरनेकीक्षमताहोतीहै।येविविधध्वनियोंमुखसेनिःसृत होनेकेकारणविविधप्रकारकीहोतीहैपरन्तुभाषाविज्ञानकेअन्तर्गतहमसंगीतयाअन्यपशु-
पक्षियोंकीध्वनियोंकाअध्ययननहींकरतेअपितुकेवलउनध्वनियोंकावर्णनकरतेहैंजिनकासम्बन्धभाषासे होताहैं।उन्हीध्वनियोंकावर्गीकरणएवंविश्लेषणकरकेयहदेखनेकाप्रयत्नकरतेहैंकिउननिःसृतध्वनियों केवर्गीकरणकेमूलआधारक्याहै।उनआधारोंपरध्वनियोंकावर्गीकरणकिसप्रकारकियाजासकताहै।
• वर्गीकरणकेआधार
1स्थान
2 प्रयत्न
3 इन्द्रिययाकरण
• स्थानकेआधारपरमुख्यता 8 स्थानऐसेहैंजोध्वनियोंकेउच्चारणकीदृष्टीसेअत्यन्तमहत्वपूर्णहोतेहैं।
1 काकल
2 कण्ठ
3 तालव्य
4 मूर्धन्य
5 वर्त्स
6 दाँत
7. ओष्ठ
8 जिल्ह्या
• प्रयत्नकेआधारपर -
मुखविविरकेभीतरओष्ठसेलेकरकण्ठष्यतकध्वनियातथाकंठ्यकेनीचेध्वनिउच्चारणमेंप्रत्येकव्यक्तिप्र यासकरताहैउसेप्रयत्नकहतेहैंयहाँदोभेटहोतेहै।
1 आभ्यन्तरप्रयत्न
2 वाह्यप्रयत्न
आभ्यन्तरके 5 भेदहोतेहैं।
1. स्पृष्ट
2 ईषत्स्पृष्ट
3. ईषदविवृत्ति
4. विवृत

5. संवृत
वाह्यप्रयत्नके 11 भेद-
• विवार
०सवार
०श्वास
०नाट
घोष
• अघोष
• अत्पप्राण
• महाप्राण
०उदान्त
०अनुदान्त
• स्वरित
करणकेआधारपर -
मुखविवरमेंस्थितउनइन्द्रियोंकोकरणकहतेहैंजोशततगतिशीलरहकरध्वनियोंकेउच्चारणमेंसहायतापहुंचायाकरतीहैंस्थानऔरकरणमेंअन्तरहीयहहैंकिस्थानतोस्थिरएवंचलहोतीहै।
इसदृष्टिसेअधरोष्ठ, जिह्या, कोमलताल, स्वरतन्त्रीकोकरणकहाजासकताहै।
ध्वनिभेद-
ध्वनियोंकेदोभेदमानेजातेहैं
०स्वर
• व्यंजन

प्रश्न अभ्यास

1-स्थानकेआधारध्वनियोंकेउच्चारण ke bhed likhiye?
2- ध्वनिkise कहाजाताहै?

स्वर

वे ध्वनियाँ जिनके उच्चारण में वायु बिना किसी अवरोध के बाहर निकलती है, स्वर कहलाते है।स्वर (Vowels) वर्ण व्याकरण में वर्णों का महत्वपूर्ण भाग होते हैं। स्वर वर्ण वो वर्ण होते हैं जिनमें आवाज केंद्रीय रूप से उत्पन्न होती है, और उनका उच्चारण बिना किसी व्यंजन के किया जा सकता है। स्वर वर्ण शब्दों के मूल ध्वनियों को प्रतिष्ठापित करते हैं और उनके साथ व्यंजन वर्णों का संरचना बनाने में मदद करते हैं।

स्वर वर्ण हिंदी में अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः आदि होते हैं

स्वर के भेद

उच्चारण समय या मात्रा के आधार पर स्वरो के तीन भेद है।
ह्रस्व स्वर : – इन्हे मूल स्वर तथा एकमात्रिक स्वर भी कहते है। इनके उच्चारण में सबसे कम समय लगता है। जैसे – अ, इ, उ, ऋ।

दीर्घ स्वर : – इनके उच्चारण में **ह्रस्व** स्वर की अपेक्षा दुगुना समय लगता है अर्थात दो मात्राए लगती है, उसे दीर्घ स्वर कहते है। जैसे – आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ प्लुत स्वर : – संस्कृत में प्लुत को एक तीसरा भेद माना जाता है, पर हिन्दी में इसका प्रयोग नहीं होता जैसे – ओउम् ।
प्रयत्न के आधार पर: – जीभ के प्रयत्न के आधार पर तीन भेद है।
अग्र स्वर : – जिन स्वरों के उच्चारण में जीभ का अगला भाग ऊपर नीचे उठता है, अग्र स्वर कहते है जैसे – इ, ई, ए, ऐ ।
पश्च स्वर : – जिन स्वरों के उच्चारण में जीभ का पिछला भाग सामान्य स्थिति से उठता है, पश्च स्वर कहे जाते जैसे – ओ, उ, ऊ, ओ, औ तथा ऑ ।
मध्य स्वर : – हिन्दी में 'अ' स्वर केन्द्रीय स्वर है। इसके उच्चारण में जीभ का मध्य भाग थोड़ा – सा ऊपर उठता है।
मुखाकृति के आधार पर :
संवृत : – वे स्वर जिनके उच्चारण में मुँह बहुत कम खुलता है। जैसे – इ, ई, उ, ऊ।
अर्द्ध संवृत : – वे स्वर जिनके उच्चारण में मुख संवृत की अपेक्षा कुछ अधिक खुलता है जैसे – ए, ओ ।
विवृत : – जिन स्वरों के उच्चारण में मुख पूरा खुलता है। जैसे – आ ।
अर्द्ध विवृत : – जिन स्वरों के उच्चारण में मुख आधा खुलता है। जैसे – अ, ऐ, औ।
ओष्ठाकृति के आधार पर :
वृताकार : – जिनके उच्चारण में होठो की आकृति वृत के समान बनती है। जैसे – उ, ऊ, ओ, औ ।
अवृताकार : – इनके उच्चारण में होठो की आकृति अवृताकार होती है। जैसे – इ, ई, ए, ऐ ।
उदासीन : – 'अ' स्वर के उच्चारण में होठ उदासीन रहते है।
'ऑ स्वर अंग्रेजी से हिन्दी में आया है।

प्रश्न अभ्यास

1-- मात्रा के आधार पर स्वरो के भेद likhiye.

2-वृताकार tatha अवृताकार swaro me antar bataye.

व्यंजन

व्यंजन (Consonants) वर्ण व्याकरण में वर्णों का एक महत्वपूर्ण भाग होते हैं। ये वर्ण भाषा में ऐसे ध्वनियों को प्रतिष्ठापित करते हैं जिनमें आवाज के उत्पन्न होने के लिए व्यंजन के स्थान पर कोई बाधक नहीं होता। व्यंजन वर्णों के उच्चारण के लिए व्यक्ति को स्वरोंKOसाथजोडNE की आवश्यकता होती है, जैसे कि क, ख, ग, घ, आदि।
व्यंजन वर्ण वह होते हैं जिनमें आवाज व्यंजन के स्थान पर उत्पन्न होता है, और उनके उच्चारण के लिए स्वरों के सहयोग की आवश्यकता होती है। व्यंजन वर्ण हिंदी में क, ख, ग, घ, च, छ, ज, झ, ट, ठ, ड, ढ, त, थ, द, ध, प, फ, ब, भ, म, य, र, ल, व, श, ष, स, ह, क्ष, त्र, ज्ञ आदि होते हैं।

व्यंजन के भेद

स्पर्श : – जिनके उच्चारण में मुख के दो भिन्न अंग – दोनों ओष्ठ, नीचे का ओष्ठ और ऊपर के दांत, जीभ की नोक और दांत आदि एक दूसरे से स्पर्श की स्थिति में हो, वायु उनके स्पर्श करती हुई बाहर आती हो। जैसे : – क्, च्,ट्, त्, प्, वर्गों की प्रथम चार ध्वनियाँ ।

संघर्षी : – जिनके उच्चारण में मुख के दो अवयव एक – दूसरे के निकट आ जाते है और वायु निकलने का मार्ग संकरा हो जाता है तो वायु घर्षण करके निकलती है, उन्हें संघर्षी व्यंजन कहते है। जैसे – ख, ग, ज, फ, श, ष्, स्।
स्पर्श संघर्षी : – जिन व्यंजनों के उच्चारण में पहले स्पर्श फिर घर्षण की स्थिति हो। जैसे – च्, छ, ज, झ्।
नासिक्य : – जिन व्यंजनों के उच्चारण में दात, ओष्ठ, जीभ आदि के स्पर्श के साथ वायु नासिका मार्ग से बाहर आती है। जैसे – ङ, ञ, ण, न, म
पार्श्विक : – जिन व्यंजनो के उच्चारण में मुख के मध्य दो अंगो के मिलने से वायु मार्ग अवरुद्ध होने के बाद होता है। जैसे – ल्।
लुण्ठित : – जिनके उच्चारण में जीभ बेलन की भाँति लपेट खाती है। जैसे – र्।
उत्क्षिप्त : – जिनके उच्चरण में जीभ की नोक झटके से तालु को छूकर वापस आ जाती है, उन्हें उत्क्षिप्त व्यंजन कहते है। जैसे – द्।
अर्द्ध स्वर : – जिन वर्णों का उच्चारण अवरोध के आधार पर स्वर व व्यंजन के बीच का है। जैसे – य्, व्

प्रश्न अभ्यास1-लुण्ठित V उत्क्षिप्त व्यंजनों ME KYA ANTAR HE.

2-व्यंजन और स्वर में अंतर BATAEYE.

संज्ञा

किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, गुण, जाति, भाव, क्रिया, द्रव्य आदि का ज्ञान कराने वाले शब्द या नाम को संज्ञा कहा जाता है। संज्ञा के कारण हम किसी वस्तु, व्यक्ति, स्थान और जाति के बारे में सही जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

उदाहरण–: सीता (व्यक्ति), आगरा (स्थान), पुस्तक (वस्तु), सोना (क्रिया), क्रोधित (भाव) आदि। ये दिए गए सभी नाम संज्ञा है। जिसके कारण हमें किसी के बारे में जानकारी मिलती है।

1- ताजमहल आगरा में स्थित है।

इस वाक्य में आगरा किसी स्थान का नाम है। इसलिए यह संज्ञा है

2- मोहन ने पुस्तक को मेज पर रख दिया।

इस वाक्य में मोहन (किसी व्यक्ति का नाम), पुस्तक (वस्तु), और मेज (वस्तु) संज्ञा का बोध करवाते है।
संज्ञा 3 प्रकार की होती है–:
व्यक्तिवाचक संज्ञा
जातिवाचक संज्ञा(द्रव्यवाचक संज्ञा ,समूहवाचक संज्ञा)
भाववाचक संज्ञा

1)व्यक्तिवचक संज्ञा

जिस शब्द से किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु, स्थान, प्राणी आदि के नाम को व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते है। इस संज्ञा में व्यक्तियों के नाम, वस्तुओं के नाम, दिशाओं के नाम, देशों के नाम, समुद्रों के नाम, पुस्तकों के नाम, पर्वतों के नाम, समाचार पत्रों के नाम आदि शामिल होते हैं।
उदहारण- दिल्ली (जगह का नाम), सुभाष चंद्र बोस (किसी विशेष व्यक्ति का नाम), मेज (वस्तु का नाम)।

1- मोहन स्कूल जा रहा है।
इसमें मोहन एक व्यक्ति का नाम है, इसलिए यह व्यक्तिवाचक संज्ञा है।
2- गीता दिल्ली घूमने गई है।
इस वाक्य में गीता एक विशेष व्यक्ति और दिल्ली एक स्थान का नाम है। इसलिए यह व्यक्तिवाचक संज्ञा है।

2) जातिवाचक संज्ञा

जिस शब्द या संज्ञा से किसी एक ही व्यक्ति या वस्तु की पूरी जाति या वर्ग के बारे में जानकारी मिलें, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते है। यह संज्ञा किसी एक विशेष की बातें नहीं करती है बल्कि पूरी जाति का बोध करवाती है। इसमें पशु – पक्षियों, प्राकृतिक तत्वों, वस्तुओं तथा किसी काम आदि के वर्ग को शामिल किया जाता है।
उदाहरण- लड़का, नदी, गाड़ी, पर्वत, पेड़ आदि।यह सभी शब्द अपने वर्ग व पूरी जाति का बोध कराते हैं। इसलिए यह जातिवाचक संज्ञा हैं।
1-हमारे देश में अनेक पर्वत है।
इस वाक्य में पर्वत से उसकी पूरी जाति व वर्ग का ज्ञान हो रहा है, इसलिए यह जातिवाचक संज्ञा है।
2-हमारे बगीचे में पेड़ लगे हुए है।
इस वाक्य में पेड़ से सारी जाति और वर्ग का बोध होता है, इसलिए यह जातिवाचक संज्ञा है।
Eske do bhed he -

द्रव्यवाचक संज्ञा

संज्ञा के जिस शब्द से किसी पदार्थ के द्रव्य तथा वस्तु के नाप–तोल का बोध हो उसे द्रव्यवाचक संज्ञा कहते है। इस संज्ञा में वस्तु को गिना नहीं जा सकता है, उसका परिणाम होता है। यह पदार्थ तरल रूप में होता है।
उदाहरण - पानी, लोहा, तेल, घी, दालआदि।
1-नदियों में पानी बहता है।
इस वाक्य में पानी के बहने अर्थात द्रव्य का बोध हो रहा है। इसलिए इस वाक्य में द्रव्यवाचक संज्ञा है।
2- गाड़ी में एक लीटर पेट्रोल डलवा देना।
इस वाक्य में पेट्रोल के नाप तोल का बोध हो रहा है, इसलिए इस वाक्य में द्रव्यवाचक संज्ञा है।

समूहवाचक संज्ञा

संज्ञा के जिस शब्द से किसी समूह का बोध हो तो उसे समूहवाचक संज्ञा कहते है। यह अलग-अलग या एक-एक व्यक्ति का बोध नहीं करवाता।
उदहारण– टीम, सेना, कक्षा,
1- भारतीय सेना देश की रक्षा करती है।
इस वाक्य में सेना से पूरे समूह का बोध होता है, इसलिए इस वाक्य में समूहवाचक संज्ञा है।
2- सभी खिलाड़ियों ने मिलकर एक टीम बना ली है।
इस वाक्य में टीम से खिलाड़ियों के समूह का बोध होता है, इसलिए इस वाक्य में समूहवाचक संज्ञा है।

3) भाववाचक संज्ञा

जिस संज्ञा से किसी व्यक्ति या वस्तु के भाव, गुण, धर्म, भाव और दशा का ज्ञान हो, उसे भाववाचक संज्ञा कहते है। इससे उन सभी की अवस्था का भी पता चलता है। प्रत्येक पदार्थ का धर्म होता है जैसे मिठाई में मिठास, वीरों के वीरता, बच्चों में चंचलता, पानी में शीतलता आदि।
उदाहरण-खुशी, बचपन, कठोर, प्रेम, मिठास आदि के बोध को भाववाचक संज्ञा कहते है।
ताजमहल की सुंदरता का वर्णन करना बहुत ही कठिन है। आम के पक जाने पर वह मिठास से भर जाता है।
इन पंक्तियों में **सुंदरता और मिठास शब्द भाववाचक संज्ञा शब्द के उदाहरण हैं**। क्योंकि ये शब्द भावनाओं और गुण के बोधक शब्द हैं।

प्रश्न अभ्यास
1-**द्रव्यवाचक संज्ञा tatha समूहवाचक संज्ञा me antar spast kare.**
2-**संज्ञा** kise kahte he. Udaharan sahit samjhaeye.

सर्वनाम

संज्ञा के स्थान पर आने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं। जैसे: तुम, हम, आप, उसका, आदि I सर्वनाम 2 शब्दों का योग करके बनता है: सर्व+नाम, इसका यह अर्थ है कि जो नाम शब्द के स्थान पर उपयुक्त होता है उसे सर्वनाम कहते हैं।

उदाहरण: वह मोहन है।
इस वाक्य में'वह' सर्वनामहै। जो व्यक्ति के नाम की जगह पर मौजूद है।

अन्य शब्दों में समझें तो सर्वनाम उन शब्दों को कहा जाता है, जिन शब्दों का प्रयोग संज्ञा अर्थात किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान आदि,के नाम के स्थान पर करते हैं। इसमें मैं, तुम, तुम्हारा, आप, आपका, इस, उस, यह, वह, हम, हमारा ,आदि शब्द आते हैं।
उदाहरण:
मैं लिखना पसंद करती हूँ।
मुझे संगीत बहुत पसंद है।
वह कल माँ के साथ बाजार जाएगी।
उसने मुझे फोन किया था।
मेरे पास एक बुक है।
हम कल मेले जायेंगें।
तुम कौन हो?
यहां बरसात हो रही है।
वहां जाना मना है।
वह फुटबॉल खेल रहा है।
रेखांकित शब्द सर्वनाम है क्योंकि वे संज्ञा के स्थान पर आये हैं।
मूल सर्वनाम कितने होते हैं?
हिंदी के मूल सर्वनाम 11 होते हैं, जैसे-

मैं	वह	क्या
तू	जो	कोई
आप	सो	कुछ
यह	कौन	–

जरूर पढ़ें: उपसर्ग और प्रत्यय

सर्वनाम के भेद
प्रयोग की दृष्टि से देखा जाए तो सर्वनाम के 6 भेद होते हैं, जैसे कि-

पुरुषवाचक सर्वनाम
निश्चयवाचक (संकेतवाचक) सर्वनाम
अनिश्चयवाचक सर्वनाम

संबंधवाचक सर्वनाम
प्रश्नवाचक सर्वनाम
निजवाचक सर्वनाम

पुरुषवाचक सर्वनाम
जो सर्वनाम जो उत्तम पुरुष (बोलने वाले), मध्यम पुरुष (सुनने वाले) और अन्य पुरुष (जिसके बारे में बात की जाये) के लिए आता है, उसे पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे : उसने, वह, मैं, तुम, उस आदि।

उदाहरण : मुझे पता था कि कल तुम घर जाओगी।

पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन प्रकार होते है:

उत्तम पुरुष
मध्यम पुरुष
अन्य पुरुष
उत्तम पुरुष

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	मैं	हम
कर्म	मुझे/ मुझको	हमें /हमको
संबंध	मेरा /मेरे	हमारा/ हमारे
	मेरी	हमारी

मध्यम पुरुष

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	तू	तुम
कर्म	तुझे /तुझको	तुम्हें/ तुमको
संबंध	तेरा/ तेरे	तुम्हारा
	तेरी	तुम्हारे/ तुम्हारी

अन्य पुरुष

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	यह /वह	ये / वे
कर्म	इसे / इसको/उसे/उसको	इन्हें /इनको/ उन्हें /उनको
संबंध	इसका/ उसका /इसके /उसके	इनका/ उनका /इनके/उनके
	इसकी / उसकी	इनकी/ उनकी

निश्चयवाचक सर्वनाम
जिस सर्वनाम में पास या दूर किसी व्यक्ति या वस्तु की ओर संकेत का बोध हो वह निश्चयवाचक सर्वनाम कहलाता है। क्योंकि ये संकेत करता है इसलिए इसे संकेतवाचक सर्वनाम भी कहते हैं। जैसे:

यह मेरी पेंसिल है।
यह मीना की ड्रेस है, वह सीता की ड्रेस है।
वह घर बहुत दूर है।
निश्चयवाचक और पुरुषवाचक सर्वनाम में अंतर व समानता
सीता बाजार गयी और उसने पीली फ्रॉक खरीदी।
यह फ्रॉक मेरी है, वह मीना की है।
दोनों वाक्य देखने में लगभग सामान लग रहे होंगे लेकिन इनमें बहुत अंतर है। पहले वाक्य में एक ही व्यक्ति की बात हो रही है इसलिए यह पुरुषवाचक सर्वनाम है लेकिन दूसरे वाक्य में जैसा कि आपको परिभाषा से पता है इसमें दूर और पास या संकेत का भाव प्रकट हो रहा है इसलिए यह निश्चयवाचक सर्वनाम है।

अनिश्चयवाचक सर्वनाम
जिस सर्वनाम से किसी निश्चित व्यक्ति या पदार्थ का बोध नहीं होता हो उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे :

बाहर कोई है।
मुझे कुछ नहीं मिला।
किसी ने मुझे फोन किया पता नहीं कौन था।
कोई दरवाजा बजाकर चला गया।
सरल शब्दों में कहें तो ऊपर दिए वाक्यों में किसी व्यक्ति या वस्तु के बारे में निश्चित नहीं है कि कौन है, क्या लिया, किसने फोन किया आदि इसलिए यह अनिश्चयवाचक सर्वनाम के उदाहरण हैं। कोई, कुछ, किसी आदि सर्वनाम शब्द आने पर ज्यादातर अनिश्चयवाचक सर्वनाम होता है तो यह ध्यान रखें।

संबंधवाचक सर्वनाम
संज्ञा के स्थान पर आने वाले जिन दो सर्वनाम शब्दों से संबंध का भाव प्रकट होता है उसे संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे:

तुमनें जो कार मांगी थी, यह वही कार है।
तुम जो बोलोगे मैं वैसा ही करूँगा।
प्रश्नवाचक सर्वनाम
Sarvanam in Hindi में अब जानते हैं अगला सर्वनाम का भेद जो है प्रश्नवाचक सर्वनाम। जिन सर्वनाम शब्दों से किसी प्रश्न का बोध होता है उसे उसे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे:

तुम कौन हो?
तुम्हें क्या चाहिए?
तुम यहां कब आयी?
वहां कौन गिरा था?
यहां क्या रखा है?
निजवाचक सर्वनाम
जो सर्वनाम तीनों पुरुष (उत्तम, मध्यम और अन्य) में अपना होने की अवस्था या भाव या अपनापन; निजता का वह निजवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे:

आप अपना काम खुद कर लेना।
मैं अकेला ही कार साफ़ कर लूंगा।
वह स्वयं स्कूटी से स्कूल चली जाती है।

विशेषण

जिन शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता प्रकट होती हैं उन्हे विशेषण कहते हैं।

विशेषण के प्रयोग से व्यक्ति, वस्तु का यथार्थ स्वरूप तो प्रकट होता ही हैं साथ ही भाषा को प्रभावशीलता भी बढ़ जाते हैं।

विशेषण की परिभाषा :-
जो शब्द संज्ञा (विशेष्य) व सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं।

जैसे :- बड़ा लड़का, लाल मिर्च, चार आदमी।

विशेष्य किसे कहते हैं :-
जिन संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताई जाए वे विशेष्य कहलाते हैं।

प्रविशेषण किसे कहते हैं :-
विशेषण शब्द की भी विशेषता बतलाने वाले शब्द 'प्रविशेषण' कहलाते हैं।

उदाहरण से समझिए :-

विशेषण के भेद / प्रकार :-
मूलतः अर्थ की दृष्टि से विशेषण के चार भेद होते हैं :-

1. गुणवाचक विशेषण

2. संख्यावाचक विशेषण

3. परिमाणवाचक विशेषण

4. संकेतवाचक / सार्वनामिक विशेषण

1. गुणवाचक विशेषण किसे कहते हैं
गुणवाचक विशेषण की परिभाषा :-

जो शब्द संज्ञा व सर्वनाम शब्दों के गुण, दोष, रंग, स्वाद, आकार, स्पर्श, समय, दिशा, दशा या अवस्था स्थान का बोध कराते है, गुणवाचक विशेषण कहलाते हैं।

यथा :-

गुणबोधक :- अच्छा, भला, शिष्ट, सभ्य, नम्र, सुशील, कर्मठ इत्यादि।
दोषबोधक :- बुरा, अशिष्ट, असभ्य, उदंड, दुस्शील, आलसी इत्यादि।
रंगबोधक :- काला, लाल, हरा, पीला, मटमैला, सफेद, चितकबरा आदि।
कालबोधक :- नया, पुराना, ताजा, प्राचीन, नवीन, क्षणिक, क्षणभंगुर इत्यादि।
स्थानबोधक :- भारतीय, चीनी, राजस्थानी, जयपुरी, बिहारी, मद्रासी इत्यादि।
गंधबोधक :- खुशबूदार, सुगंधित, बदबूदार इत्यादि।
दिशाबोधक :- पूर्वी, पश्चिमी, उतरी, दक्षिणी, भीतरी, बाहरी, ऊपरी इत्यादि।
अवस्थाबोधक :- गीला, सुखा, जला हुआ, पिघला हुआ इत्यादि।
दशाबोधक :- रोगी, स्वस्थ, अस्वस्थ, अमीर, बीमार, सुखी, दुखी, गरीब इत्यादि।
आकारबोधक :- मोटा, छोटा, लंबा, पतला, गोल, चपटा, अंडाकार इत्यादि।
स्पर्शबोधक :- कठोर, कोमल, मखमली, मुलायम, चिकना, खुरदरा इत्यादि।
स्वादबोधक :- खट्टा, मीठा, कसैला, नमकीन, चरपरा, कड़ुआ, तीखा इत्यादि।
पुरुषवाचक विशेषण के उदाहरण :-

पुराना कमीज
काला कुता
मीठा आम

2. संख्यावाचक विशेषण किसे कहते हैं
संख्यावाचक विशेषण की परिभाषा :-

जो शब्द संज्ञा व सर्वनाम शब्दों की संख्या का बोध कराते है, उन्हें संख्या वाचक विशेषण कहते हैं। इसमें वस्तुओ की गणना या गिनती होती है।

जैसे :-

मैदान में पांच बच्चे खेल रहे हैं।
कक्षा में कुछ छात्र बैठे हैं।

उक्त उदाहरणों में 'पांच' निश्चित संख्या तथा 'कुछ' अनिश्चित संख्या का बोध होता हैं।

अतः संख्यावाचक विशेषण भेद दो हैं :-

(i) निश्चित संख्यावाचक विशेषण : –

जिन विशेषण शब्दों से निश्चित संख्या का बोध होता हैं। उन्हें निश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।

उदाहरण :-

दस आदमी, पंद्रह लड़के, पचास रुपए इत्यादि।

गणनावाचक :- एक, दो, तीन, चार…..

कर्मवाचक :- पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा….

आवृति वाचक :- दुगुना, तिगुना, चौगुना….

समुदाय वाचक :- दोनों, तीनों, चारों…..

(ii) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण :-

जिन विशेषण शब्दों से निश्चित संख्या का बोध न हो उन्हें अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।

उदाहरण :-

(i) आज भी देश में लाखों लोग भुखमरी के शिकार हैं।

(ii) रेल दुर्घटना मैं सैंकड़ों यात्री घायल हो गए।

(iii) मुझे हजार-दो हजार रुपए दे दो।

3. परिमाणवाचक विशेषण किसे कहते हैं :-
परिमाणवाचक विशेषण की परिभाषा :-

जो शब्द संज्ञा शब्दों के नाप तथा तौल का बोध कराते हैं। उन्हें परिमाण वाचक विशेषण कहते हैं।

इसमें नाप तथा तौल वाली वस्तुएं आती है।

परिमाणवाचक विशेषण के उदाहरण :-

थोड़ा दूध दीजिए, बच्चा भूखा है।

रामू के खेत में दस क्विंटल गेंहू पैदा हुवे।

उक्त वाक्यों में थोड़ा दूध अनिश्चयवाचक परिमाण तथा दस क्विंटल निश्चित परिमाण का बोध कराते है।

अतः परिमाणवाचक विशेषण के भी दो भेद हैं :-

(i) निश्चित परिमाणवाचक विशेषण :-

निश्चित मात्रा का बोध कराने वाले विशेषण शब्द निश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं।

जैसे :-

दो मीटर कपड़ा

पांच लीटर तेल
एक क्विंटल चावल इत्यादि

(ii) अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण :-

निश्चित मात्रा का बोध न कराने ,अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं।

उदाहरण :-

सारा कपड़ा

ज्यादा लीटर तेल, एक मुट्ठी गेंहू, दो थैली दूध, थोड़े केले।

नोट :-

संख्यावाचक एवं परिमाणवाचक विशेषण में अंतर :-

(i) संख्यावाचक में गणना होती है जबकि परिमाण में नापा, मापा या तोला जाता हैं।

(ii) संख्यावाचक में संख्या के बाद कोई संज्ञा या सर्वनाम शब्द होता है जबकि परिमाणवाचक में संख्या के बाद नाप, माप, तौल की इकाई होती है और उसके बाद पदार्थ (जातिवाचक संज्ञा) होती हैं।

4. संकेतवाचक / सार्वनामिक विशेषण किसे कहते हैं
जो सर्वनाम शब्द संज्ञा शब्दों की ओर संकेत करते हुवे विशेषता प्रकट करते हैं। उन्हें संकेतवाचक विशेषण कहते हैं।

ये शब्द सर्वनाम के होते है तथा विशेषण की तरह प्रयुक्त होते हैं, इसलिए इन्हें सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।

इसमें सार्वनामिक शब्दों के तुरंत बाद संज्ञा शब्द आता हैं, परंतु यह नियम उतम पुरुष, मध्यम पुरुष तथा निजवाचक सर्वनाम शब्दों पर लागू नहीं होता हैं।

सार्वनामिक विशेषण और सर्वनाम में अंतर :-

यदि इन शब्दों का प्रयोग संज्ञा या सर्वनाम शब्द से पहले हो तो यह 'सार्वनामिक विशेषण' कहलाते हैं, और यदि ये अकेले अर्थात संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त हो तो ' सर्वनाम ' कहलाते हैं।

उदाहरण :-

(i) यह मेरा घर हैं।

यहां यह सर्वनाम शब्द हैं।

(ii) यह घर मेरा हैं।

यहां यह सार्वनामिक विशेषण है और घर संज्ञा।

(iii) उसको में आज भी याद करता हैं। (निश्चय वाचक सर्वनाम)

(iv) उस देवी को मैं आज भी याद करता हूं। (सार्वनामिक विशेषण)

क्रिया

क्रिया की परिभाषा

क्रिया शब्द से कुछ करना या होना समझा जाता है।
जैसे पढ़ना, खाना, पीना और जाना आदि
दूसरे शब्दों में, क्रिया का अर्थ है कार्य करना। क्रिया शब्दों या पदों से कहा जाता है जो बताते हैं कि कुछ हो रहा है या किया जा रहा है।

क्रिया के बिना व्याकरण में कोई वाक्य पूरा नहीं होता। यह भी माना जाता है कि यह व्याकरण में विकार पैदा करता है | लिंग, वचन और पुरुष इसका रूप निर्धारित करते हैं। क्रिया प्रत्येक वाक्य में बहुत महत्वपूर्ण है। प्रत्येक वाक्य में एक क्रिया होती है। किसी काम या घटना को क्रिया बताती है। समय सीमा हमें क्रिया से बताई जाती है। क्रिया का रूप हमें बताता है कि कार्य वर्तमान में हुआ है, अतीत में हुआ है या भविष्य में होगा।
क्रिया एक वाक्य में इतना महत्त्वपूर्ण है कि कर्ता या अन्य योजकों का प्रयोग न होने पर भी वाक्य का अर्थ केवल क्रिया से समझा जा सकता है;
(1) जल लाओ।
(2) चुपचाप बैठ जाएँ।
(3) शांत रहो।
(4) चले जाओ।
यही कारण है कि शब्दों से किसी कार्य को करने या होने का संकेत मिलता है, उसे "क्रिया" कहते हैं। क्रिया का निर्माण धातू से होता है। जब धातू में ना लगा दिया जाता है, तब क्रिया बनती है।
धातु –
जिस मूल रूप से क्रिया को बनाया जाता है उसे धातु कहते है। यह क्रिया का ही एक रूप होता है। धातु को क्रिया का मूल रूप कहते हैं।
जैसे –
खा + ना = खाना
पढ़ + ना = पढ़ना
जा + ना = जाना

लिख + ना = लिखना
क्रिया के भेद जानने से पहले हमें कर्ता, कर्म और क्रिया को अच्छे से समझना अति आवश्यक है।
कर्ता – काम करने वाले को कर्ता कहते हैं।
जैसे –
रमा खाना बना रही है|
सीता झाड़ू लगा रही है|
उपर्युक्त वाक्यों में रमा, सीता के द्वारा कार्य किया जा रहा है अतः रमा, और सीता कर्ता है।
कर्म – कर्ता जो काम करता है, उसे कर्म कहते हैं।
जैसे –
रमा खाना बना रही है।
उपर्युक्त वाक्य में कर्ता (रमा) के द्वारा "खाना" बनाने का कार्य किया जा रहा है, अतः कर्म है "खाना"।
कर्म को जानने के लिए हम क्रिया पर "क्या" "किसको" का प्रश्न करते है।
प्रश्न – रमा क्या बना रही है?
उत्तर – खाना (कर्म)
एक ही वाक्य में कर्ता, कर्म और क्रिया को किस तरह पहचाननेगे? उदाहरण देखिए –
वेदांत फल खाता है|
(कर्ता) (कर्म) (क्रिया)
प्रश्न- कौन फल खाता है?
उत्तर- वेदांत (कर्ता)
प्रश्न- वेदांत क्या खाता है?
उत्तर– फल (कर्म)
प्रश्न- वेदांत क्या करता है?
उत्तर- खाता है (क्रिया)
कर्म के आधार पर क्रिया के भेद
कर्म की दृष्टि से क्रिया के निम्नलिखित दो भेद होते हैं –
1. अकर्मक क्रिया
2. सकर्मक क्रिया
1. अकर्मक क्रिया
अकर्मक क्रिया का अर्थ होता है, कर्म के बिना या कर्म रहित। जिन क्रियाओं को कर्म की जरूरत नहीं पडती और क्रियाओं का फल कर्ता पर ही पड़ता है, उन्हें अकर्मक क्रिया कहते हैं।
जैसे – तैरना, कूदना, सोना, उछलना, मरना, जीना, रोना, हँसता, चलता, दौड़ता, होना, खेलना, बैठना, मरना, घटना, जागना, उछलना, कूदना आदि।
उदहारण –
(i) वह चढ़ता है।
(ii) वे हंसते हैं।
(iii) नीता खा रही है।
(iv) पक्षी उड़ रहे हैं।
(v) बच्चा रो रहा है।
2. सकर्मक क्रिया
सकर्मक का अर्थ होता है, कर्म के साथ या कर्म सहित। जिस क्रिया का प्रभाव कर्ता पर न पड़कर कर्म पर पड़ता है उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। अथार्त जिन शब्दों की वजह से कर्म की आवश्यकता होती है उसे सकर्मक क्रिया होती है।

मैं एक किताब पढ़ रहा हूँ

वह एक नया घर बना रहा है

वह मेरे साथ खेल रही है

मैंने एक गीत गा दिया

संरचना या प्रयोग के आधार पर क्रिया के भेद

संरचना या प्रयोग के आधार पर क्रिया के भेद इस प्रकार हैं-

मुख्य क्रिया, सहायक क्रिया, संयुक्त क्रिया, नामधातु क्रिया, प्रेरणार्थक क्रिया, पूर्वकालिक क्रिया आदि।

1- मुख्य क्रिया--

क्रिया का एक अंश जो मुख्य अर्थ प्रदान करता है, उसे मुख्य क्रिया कहते हैं अथवा कर्ता या कर्म के मुख्य कार्यों को व्यक्त करने वाली क्रिया 'मुख्य क्रिया' कहलाती है।

जैसे –

1. राधा दूध लाई।

2. मोहन ने दुकान खोली।

2- सहायक क्रिया--

सहायक क्रिया उसे कहते हैं जो क्रिया पदबंध में मुख्य अर्थ न देकर उसकी सहायक हो अर्थात् मुख्य क्रिया के अलावा जो भी अंश शेष रह जाता है, उसे सहायक क्रिया कहते है।

जैसे –

1. पिताजी अख़बार पढ चुके हैं।

2. माता जी खाना बनाने लगीं।

उपर्युक्त वाक्यों में मुख्य क्रिया 'पढ़'तथा 'बनाने'के साथ 'चुकी और 'लगीं'सहायक क्रियाएँ जुड़ी हैं।

3- संयुक्त क्रिया—

जब दो या दो से अधिक क्रियाएँ आपस में मिलकर एक पूर्ण क्रिया बनाती हैं, तो उन्हें संयुक्त क्रिया कहते हैं।

मैं दिल्ली गया था।

सीता पढ़ रही है।

– उपर्युक्त पहले वाक्य मे दो क्रियाएँ है = गया + था।

– दूसरे वाक्य में तीन क्रियाएँ मिलकर = पढ़ + रही + है।

– इस प्रकार एक से अधिक क्रिया होने तथा उसका संयुक्त रूप प्रयुक्त होने के कारण ये संयुक्त क्रियाएँ है।

4- नामधातु क्रिया

संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण शब्दों के अंत में प्रत्यय लगाकर जो क्रिया बनती है, उसे नामधातु क्रिया कहते हैं।

संज्ञा शब्द से –

फ़िल्म + आना = फ़िल्माना

दुख + ना = दुखना

विशेषण शब्द से –

साठ + इयाना = सठियाना

गरम + आना = गरमाना

सर्वनाम शब्द से –

अपना + आना = अपनाना

5--प्रेरणार्थक क्रिया

जहाँ कर्ता अपना कार्य स्वयं न करके किसी अन्य को कार्य करने की प्रेरणा देता है, वहाँ प्रेरणार्थक क्रिया होती है।
जैसे –
पिता ने बेटे से अख़बार मँगवाया।
मालकिन नौकरानी से सफाई करवाती है।
उपर्युक्त वाक्यों में कर्ता स्वयं अपना काम न करके किसी अन्य से कार्य करवा रहे हैं।
-प्रथम वाक्य में पिता स्वयं अखबार न लाकर बेटे से मँगवा रहे हैं।
6--पूर्वकालिक क्रिया
वह क्रिया जिसका पूरा होना दूसरी क्रिया से पूर्व पाया जाता है, उसे पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं, अर्थात् मुख्य क्रिया से पहले होने वाली क्रिया पूर्वकालिक क्रिया कहलाती है। पूर्व आने वाली क्रिया मूल धातु के साथ 'कर' लगाकर बनती है।
जैसे –
1. गीता ने सुनकर कविता लिखी।
इस वाक्य में 'लिखी'से पहले 'सुनकर'क्रिया का प्रयोग हुआ है। अतः ये पूर्वकालिक क्रिया है।
प्रश्न-अभ्यास
1--क्रिया का मूल रूप क्या है और क्रिया के सामान्य रूप किस प्रकार बनाए जाते हैं?
2--कर्म के आधार पर क्रिया के कितने भेद होते हैं? विस्तार से लिखिए।
3-- पूर्वकालिक क्रिया TATHA प्रेरणार्थक क्रिया ME ANTAR LIKHE.

क्रिया विशेषण

क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्दों को क्रिया-विशेषण कहते हैं। निम्नलिखित वाक्यों में पदों के रूप और कार्य देखें:

- (क) लता मंगेशकर अच्छा गाती है। (रीति)
- (ख) दीपावली कल मनाई जाएगी। (समय)
- (ग) प्रकाश भी वहाँ गया है। (स्थान)
- (घ) उसे भी थोड़ा लिखने दो। (परिमाण)

ये शब्द क्रिया के होने का तरीका रीति, स्थान, समय तथा परिमाण आदि बताकर उसकी (क्रिया की) विशेषता बता रहे हैं।
क्रिया-विशेषण के भेद
क्रिया-विशेषण के चार भेद हैं:

- 1. रीतिवाचक क्रिया-विशेषण
- 2. कालवाचक क्रिया-विशेषण
- 3. स्थानवाचक क्रिया-विशेषण,
- 4. परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण

क्रिया के साथ कहाँ, कब, कैसे, कितना लगाकर प्रश्न करने पर जो अविकारी शब्द उत्तर में आते हैं, वे क्रिया-विशेषण होते हैं। जैसे:

- (क) बच्चे कहाँ खेल रहे हैं? बाहर, अंदर, ऊपर, नीचे, यहाँ, वहाँ (स्थान)।
- (ख) पिताजी कब आएँगे? आज, कल, परसों, अभी (समय)
- (ग) छात्र कैसे गाते हैं? धीरे-धीरे, अच्छी तरह, ध्यानपूर्वक (रीति)
- (घ) उसकी बहन कितना पढ़ती है? थोड़ा, ज्यादा, बहुत, काफी (परिमाण)

रीतिवाचक क्रिया-विशेषण
जिन अविकारी शब्दों (क्रिया-विशेषण) से क्रिया के होने के तरीके (रीति) का पता चलता है, उन्हें रीतिवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं। जैसे:
1. वे हमारी कहानी ध्यानपूर्वक सुन रहे थे।
2. माँ ने पुत्री को भली-भाँति समझा दिया था।
रीतिवाचक क्रिया-विशेषण-धीरे-धीरे, सहसा, नहीं, अतएव, तेज, जैसे, वैसे, मत, वृथा आदि।

कालवाचक क्रिया-विशेषण
विशेषण जिन क्रिया-विशेषण शब्दों से क्रिया के होने के समय का पता चलता है, उन्हें कालवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं। जैसे:
1-नरेश अब जा चुका है।
2-माता जी अभी गई हैं।
कालवाचक क्रिया विशेषण – आज, कल, परसों, अब, जब, कब, अभी, आजकल, सदैव, रात-भर, लगातार, निरंतर ,रोज, हरदिन, प्रतिदिन, प्रतिवर्ष
स्थानवाचक क्रिया-विशेषण
क्रिया के होने का स्थान या दिशा आदि को बताने वाले क्रिया-विशेषण स्थानवाचक क्रिया-विशेषण कहलाते हैं। जैसे:
1-पिता जी अन्दर बैठे हैं।
2- बच्चे बाहर खेल रहे हैं।
स्थानवाचक क्रिया विशेषण - आस-पास, आगे, पीछे, जहाँ, तहाँ, आर-पार, ऊपर, नीचे, दाएँ, बाएँ, इधर-उधर, चारों ओर
परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण
विशेषण जो क्रिया की मात्रा, नाप-तौल बताते हैं उन्हें परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं। जैसे:
1-अब मैं बिलकुल थक चुका हूँ।
2- उतना खाना चाहिए जितना पच सके।
परिमाणवाचक क्रिया विशेषण - खूब, जरा, अत्यंत, अधिक, कम, जरा, थोड़ा, काफी, पर्याप्त, जितना, कितना, इतना, उतना, थोड़ा-थोड़ा, क्रम से, बारी-बारी से
विशेषण और क्रिया-विशेषण

विशेषण और क्रिया-विशेषण आपने पढ़ा है कि संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द "विशेषण" होते हैं, जबकि क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द "क्रिया विशेषण" होते हैं। एक ही शब्द को विशेषण और क्रिया-विशेषण दोनों के रूप में प्रयोग किया जाता है। आपको इस पद को ध्यानपूर्वक पढ़कर उसके प्रयोग के आधार पर ही पद विशेषण है या क्रिया-विशेषण है। आइए, कुछ वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़कर उनमें अंतर करने का अभ्यास करें:

विशेषण	क्रिया-विशेषण
सीता के पास कुछ खिलौने हैं।	सीता कुछ खा रही है।
रोहन के पास बहुत पुस्तकें हैं।	रोहन बहुत खाता है।
कुछ लड़कियाँ आ रही हैं।	लड़कियाँ कुछ उदास हैं।
संदीप अच्छा लड़का है।	संदीप अच्छा गाता है।

प्रश्न-अभ्यास

1-क्रिया विशेषण से आप क्या समझते हैं?

2-विशेषण और क्रिया विशेषण में क्या अंतर है उदाहरण sahit likhiyeI

3-क्रियाविशेषण कितने प्रकार के होते हैं?

कारक

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से वाक्य का सम्बन्ध किसी दूसरे शब्द के साथ जाना जाए, उसे कारक (Karak) कहते हैं। कारक (Karak) संज्ञा या सर्वनाम शब्दों का वह रूप होता है जिसका सीधा सम्बन्ध क्रिया से ही होता है।
वाक्य में प्रयुक्त शब्द आपस में सम्बद्ध होते हैं। क्रिया के साथ संज्ञा का सीधा सम्बन्ध ही कारक (Karak) है। कारक को प्रकट करने के लिये संज्ञा और सर्वनाम के साथ जो चिन्ह लगाये जाते हैं, उन्हें विभक्तियाँ कहते हैं।
जैसे– पेड़ पर फल लगते हैं।

कारक	विभक्तियाँ
कर्ता	ने
कर्म	को
करण	से, द्वारा
सम्प्रदान	को, के लिये, हेतु
अपादान	से (अलग होने के अर्थ में)
सम्बन्धका, की, के, रा, री, रे	
अधिकरण	में, पर
सम्बोधन	हे! अरे! ऐ! ओ! हाय!

कर्ता कारक
संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के करने वाले का बोध हो, उसे कर्ताKarak कहते हैं। इसका चिन्ह 'ने' कभी कर्ता के साथ लगता है, और कभी वाक्य में नहीं होता है, अर्थात लुप्त होता है। कर्ता कारक उदाहरण –

1. रमेश ने पुस्तक पढ़ी।
2. सुनील खेलता है।

कर्मकारक
संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप पर क्रिया का प्रभाव या फल पड़े, उसे कर्म कारक कहते हैं। कर्म के साथ 'को' विभक्ति आती है। इसकी यही सबसे बड़ी पहचान होती है। कभी-कभी वाक्यों में 'को' विभक्ति का लोप भी होता है। कर्म कारक के उदाहरण –

1. उसने सुनील को पढ़ाया।
2. कविता पुस्तक पढ़ रही है।

करण कारक
जिस साधन से अथवा जिसके द्वारा क्रिया पूरी की जाती है, उस संज्ञा को करण कारक कहते हैं। इसकी मुख्य पहचान 'से' अथवा 'द्वारा' है। करण कारक के उदाहरण –

- रहीम गेंद से खेलता है।
- आदमी चोर को लाठी द्वारा मारता है।

सम्प्रदान कारक

जिसके लिए क्रिया की जाती है, उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं। इसमें कर्म कारक 'को' भी प्रयुक्त होता है, किन्तु उसका अर्थ 'के लिये' होता है। करण कारक के उदाहरण –

1. सुनील रवि के लिए गेंद लाता है।
2. माँ बच्चे को खिलौना देती है।

अपादान कारक

अपादान का अर्थ है- अलग होना। जिस संज्ञा अथवा सर्वनाम से किसी वस्तु का अलग होना मालूम चलता हो, उसे अपादान कारक कहते हैं। करण कारक की तरह अपादान कारक का चिन्ह भी 'से' है, परन्तु करण कारक में इसका अर्थ सहायता होता है और अपादान में अलग होना होता है। अपादान कारक के उदाहरण –

1. हिमालय से गंगा निकलती है।
2. आसमान से बूँदें गिरी।

सम्बन्ध कारक

संज्ञा अथवा सर्वनाम के जिस रूप से एक वस्तु का सम्बन्ध दूसरी वस्तु से जाना जाये, उसे सम्बन्ध कारक कहते हैं। इसकी मुख्य पहचान है – 'का', 'की', के। सम्बन्ध कारक के उदाहरण –

- राहुल की किताब मेज पर है।
- सुनीता का घर दूर है।

अधिकरण कारक

संज्ञा के जिस रूप से क्रिया के आधार का बोध होता है, उसे अधिकरण कारक कहते हैं। इसकी मुख्य पहचान है 'में', 'पर' होती है । अधिकरण कारक के उदाहरण –

- घोंसले में चिडिया है।
- सड़क पर गाड़ी खड़ी है।

सम्बोधन कारक

संज्ञा या जिस रूप से किसी को पुकारने तथा सावधान करने का बोध हो, उसे सम्बोधन कारक कहते हैं। इसका सम्बन्ध न क्रिया से और न किसी दूसरे शब्द से होता है। यह वाक्य से अलग रहता है। इसका कोई कारक चिन्ह भी नहीं है। सम्बोधन कारक के उदाहरण–

- रमा ! देखो कैसा सुन्दर दृश्य है।
- लड़के! जरा इधर आ।

अभ्यास प्रश्न

1-कर्म कारक और संप्रदान कारक में क्या अंतर है?
2-करण और अपादान कारक में अंतर LIKHIYE ?
3- कारक किसे कहते हैं इसके आठ भेद कौन कौन से हैं?

शब्द शुद्धि

भाषा विचारों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है और शब्द भाषा की सबसे छोटी सार्थक इकाई है। भाषा के माध्यम से ही मानव मौखिक एवं लिखित रूपों में अपने विचारों को अभिव्यक्त करता है। इस वैचारिक अभिव्यक्ति के लिए शब्दों का शुद्ध प्रयोग आवश्यक है। अन्यथा अर्थ का अनर्थ होने में भी देर नहीं लगती। कई बार क्षेत्रीयता, उच्चारण भेद और व्याकरणिक ज्ञान के अभाव के कारण वर्तनी संबंधी अशुद्धियाँ हो जाती हैं।

शुद्ध-अशुद्ध शब्दकोश
शुद्ध और अशुद्ध शब्द के शब्दकोश नीचे दिए गए हैं-

अशुद्ध शब्द	शुद्ध शब्द
अंगुर	अंगूर
अकांक्षा	आकांक्षा
अतिथी	अतिथि
अत्मा	आत्मा
सुर्य	सूर्य
शांती	शांति
लड़ायी	लड़ाई
मुनी	मुनि
पोधा	पौधा
पत्नि	पत्नी
देस	देश
दवाइ	दवाई
तिथी	तिथि
ठिक	ठीक
जरुरी	जरूरी

वाक्य शुद्धि

वाक्य शुद्धि (Vakya shuddhi kya hai hindi mein) उसे कहते है, जिसमें वाक्य की अशुद्धि को दूर करके उसे शुद्ध रूप में लिखा जाता हो।

उदाहरण-

अशुद्ध- यह कैसे संभव हो सकता है?

शुद्ध- यह कैसे संभव है?

अशुद्ध- तुम वापस लौट जाओ।

शुद्ध- तुम वापस जाओ।

अशुद्ध वाक्यों के शुद्ध वाक्य

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
वचन-संबंधी अशुद्धियाँ	
पाकिस्तान ने गोले और तोपों से आक्रमण किया।	पाकिस्तान ने गोलों और तोपों से आक्रमण किया।
उसने अनेकों ग्रंथ लिखे।	उसने अनेक ग्रंथ लिखे।
महाभारत अठारह दिनों तक चलता रहा।	महाभारत अठारह दिन तक चलता रहा।
तेरी बात सुनते-सुनते कान पक गए।	तेरी बातें सुनते-सुनते कान पक गए।
पेड़ों पर तोता बैठा है।	पेड़ पर तोता बैठा है।
लिंग संबंधी अशुद्धियाँ	
उसने संतोष का साँस ली।	उसने संतोष की साँस ली।
सविता ने जोर से हँस दिया।	सविता जोर से हँस दी।
मुझे बहुत आनंद आती है।	मुझे बहुत आनंद आता है।
वह धीमी स्वर में बोला।	वह धीमे स्वर में बोला।
राम और सीता वन को गई।	राम और सीता वन को गए।
विभक्ति-संबंधी अशुद्धियाँ	
मैं यह काम नहीं किया हूँ।	मैंने यह काम नहीं किया है।
मैं पुस्तक को पढ़ता हूँ।	मैं पुस्तक पढ़ता हूँ।
हमने इस विषय को विचार किया।	हमने इस विषय पर विचार किया
आठ बजने को दस मिनट है।	आठ बजने में दस मिनट है।
वह देर में सोकर उठता है।	वह देर से सोकर उठता है।
संज्ञा संबंधी अशुद्धियाँ	
मैं रविवार के दिन तुम्हारे घर आऊँगा।	मैं रविवार को तुम्हारे घर आऊँगा।
कुत्ता रेंकता है।	कुत्ता भौंकता है।
मुझे सफल होने की निराशा है।	मुझे सफल होने की आशा नहीं है।
गले में गुलामी की बेड़ियाँ पड़ गई।	पैरों में गुलामी की बेड़ियाँ पड़ गई।
सर्वनाम की अशुद्धियाँ	
गीता आई और कहा।	गीता आई और उसने कहा।
मैंने तेरे को कितना समझाया।	मैंने तुझे कितना समझाया।
वह क्या जाने कि मैं कैसे जीवित हूँ।	वह क्या जाने कि मैं कैसे जी रहा हूँ।
विशेषण-संबंधी अशुद्धियाँ	
किसी और लड़के को बुलाओ।	किसी दूसरे लड़के को बुलाओ।
सिंह बड़ा बीभत्स होता है।	सिंह बड़ा भयानक होता है।
उसे भारी दु:ख हुआ।	उसे बहुत दु:ख हुआ।
सब लोग अपना काम करो।	सब लोग अपना-अपना काम करो।
क्रिया-संबंधी अशुद्धियाँ	
क्या यह संभव हो सकता है ?	क्या यह संभव है ?

मैं दर्शन देने आया था।	मैं दर्शन करने आया था।
वह पढ़ना माँगता है।	वह पढ़ना चाहता है।
बस तुम इतने रूठ उठे बस	तुम इतने में रूठ गए।
तुम क्या काम करता है ?	तुम क्या काम करते हो ?

मुहावरे-संबंधी अशुद्धियाँ

युग की माँग का यह बीड़ा कौन चबाता है।	युग की माँग का यह बीड़ा कौन उठाता है।
वह श्याम पर बरस गया।	वह श्याम पर बरस पड़ा।
उसकी अक्ल चक्कर खा गई।	उसकी अक्ल चकरा गई।
उस पर घड़ों पानी गिर गया।	उस पर घड़ों पानी पड़ गया।

क्रिया-विशेषण-संबंधी अशुद्धियाँ

वह लगभग दौड़ रहा था।	वह दौड़ रहा था।
सारी रात भर मैं जागता रहा।	मैं सारी रात जागता रहा।
तुम बड़ा आगे बढ़ गया।	तुम बहुत आगे बढ़ गए।
इस पर्वतीय क्षेत्र में सर्वस्व शांति है।	इस पर्वतीय क्षेत्र में सर्वत्र शांति है।

वाक्य रचना

वाक्य की परिभाषा -वह शब्द समूह जिससे पूरी बात समझ में आ जाये, 'वाक्य' कहलाता है।

सरल शब्दों में- सार्थक शब्दों का व्यवस्थित समूह जिससे अपेक्षित अर्थ प्रकट हो, वाक्य कहलाता है।
जैसे- विजय खेल रहा है, बालिका नाच रही है।

वाक्य के भाग
वाक्य के दो भेद होते है-

(i) उद्देश्य (Subject)

(ii) विद्येय (Predicate)

(i) उद्देश्य (Subject) :- वाक्य में जिसके विषय में कुछ कहा जाये उसे उद्देश्य कहते हैं।

सरल शब्दों में- जिसके बारे में कुछ बताया जाता है, उसे उद्देश्य कहते हैं।

जैसे- पूनम किताब पढ़ती है।

सचिन दौड़ता है।

उद्देश्य के भाग

उद्देश्य के दो भाग होते है-

(i) कर्ता

(ii) कर्ता का विशेषण या कर्ता से संबंधित शब्द

(ii) विद्येय (Predicate):- उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाता है, उसे विद्येय कहते है।

जैसे- पूनम किताब पढ़ती है।

दूसरे शब्दों में- वाक्य के कर्ता (उद्देश्य) को अलग करने के बाद वाक्य में जो कुछ भी शेष रह जाता है, वह विधेय कहलाता है। इसके अंतर्गत विधेय का विस्तार आता है।

जैसे- लंबे-लंबे बालों वाली लड़की अभी-अभी एक बच्चे के साथ दौड़ते हुए उधर गई।
विधेय के भाग- विधेय के छ: भाग होते है-

(i) क्रिया
(ii) क्रिया के विशेषण
(iii) कर्म
(iv) कर्म के विशेषण या कर्म से संबंधित शब्द
(v) पूरक
(vi)पूरक के विशेषण

वाक्य भेद

वाक्य अनेक प्रकार के हो सकते हैं। उनका विभाजन हम दो आधारों पर कर सकते हैं।

अर्थ के आधार पर वाक्य के भेद

अर्थ के आधार पर वाक्य के निम्नलिखित आठ भेद हैं।

विधानवाचक

जिन वाक्यों में क्रिया के करने या होने की सूचना मिले, उन्हें विधानवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे- मैंने दूध पिया। वर्षा हो रही है।

निषेधवाचक

जिन वाक्यों से कार्य न होने का भाव प्रकट होता है, उन्हें निषेधवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे- मैंने दूध नहीं पिया। मैंने खाना नहीं खाया।

आज्ञावाचक

जिन वाक्यों में आज्ञा, प्रार्थना, उपदेश आदि का ज्ञान होता है, उन्हें आज्ञावाचक वाक्य कहते हैं; जैसे- बाज़ार जाकर फल ले आओ। बड़ों का सम्मान करो।

प्रश्नवाचक

जिन वाक्यों से किसी प्रकार का प्रश्न पूछने का ज्ञान होता है, उन्हें प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे- सीता तुम कहाँ से आ रही हो? तुम क्या पढ़ रहे हो?

इच्छावाचक

जिन वाक्यों से इच्छा आशीष एवं शुभकामना आदि का ज्ञान होता है, उन्हें इच्छावाचक वाक्य कहते हैं; जैसे- तुम्हारा कल्याण हो। भगवान तुम्हें लंबी उमर दे।

संदेहवाचक

जिन वाक्यों से संदेह या संभावना व्यक्त होती है, उन्हें संदेहवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे- शायद शाम को वर्षा हो जाए। वह आ रहा होगा, पर हमें क्या मालूम। हो सकता है राजेश आ जाए।

विस्मयवाचक

जिन वाक्यों से आश्चर्य, घृणा, क्रोध शोक आदि भावों की अभिव्यक्ति होती है, उन्हें विस्मयवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे- वाह-कितना सुंदर दृश्य है। उसके माता-पिता दोनों ही चल बसे। शाबाश तुमने बहुत अच्छा काम किया।

संकेतवाचक

जिन वाक्यों में एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया पर निर्भर होता है। उन्हें संकेतवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे- यदि परिश्रम करोगे तो अवश्य सफल होंगे। पिताजी अभी आते तो अच्छा होता। अगर वर्षा होगी तो फ़सल भी होगी।

रचना के आधार पर वाक्य के भेद

रचना के आधार पर वाक्य के निम्नलिखित तीन भेद होते हैं-

सरल वाक्य/साधारण वाक्य

जिन वाक्यों में केवल एक ही उद्देश्य और एक ही विधेय होता है, उन्हें सरल वाक्य या साधारण वाक्य कहते हैं, इन वाक्यों में एक ही क्रिया होती है; जैसे- मुकेश पढ़ता है। राकेश ने भोजन किया। इसमें कर्ता के साथ उसके विस्तारक विशेषण और क्रिया के साथ विस्तारक सहित कर्म एवं क्रिया-विशेषण आ सकते हैं। जैसे-अच्छा बच्चा मीठा दूध अच्छी तरह पीता है। यह भी साधारण वाक्य है।

संयुक्त वाक्य

दो अथवा दो से अधिक साधारण वाक्य जब सामानाधिकरण समुच्चयबोधकों जैसे- (पर, किन्तु, और, या आदि) से जुड़े होते हैं, तो वे संयुक्त वाक्य कहलाते हैं। ये चार प्रकार के होते हैं।

1. संयोजक- जब एक साधारण वाक्य दूसरे साधारण या मिश्रित वाक्य से संयोजक अव्यय द्वारा जुड़ा होता है। जैसे-गीता गई और सीता आई।
2. विभाजक- जब साधारण अथवा मिश्र वाक्यों का परस्पर भेद या विरोध का संबंध रहता है। जैसे- वह मेहनत तो बहुत करता है पर फल नहीं मिलता।
3. विकल्पसूचक- जब दो बातों में से किसी एक को स्वीकार करना होता है। जैसे- या तो उसे मैं अखाड़े में पछाड़ूँगा या अखाड़े में उतरना ही छोड़ दूँगा।
4. परिणामबोधक- जब एक साधारण वाक्य दसूरे साधारण या मिश्रित वाक्य का परिणाम होता है। जैसे- आज मुझे बहुत काम है इसलिए मैं तुम्हारे पास नहीं आ सकूँगा।

मिश्रित/मिश्र वाक्य

जिन वाक्यों में एक मुख्य या प्रधान वाक्य हो और अन्य आश्रित उपवाक्य हों, उन्हें मिश्रित वाक्य कहते हैं। इनमें एक मुख्य उद्देश्य और मुख्य विधेय के अलावा एक से अधिक समापिका क्रियाएँ होती हैं, जैसे- ज्यों ही उसने दवा पी, वह सो गया। यदि परिश्रम करोगे तो, उत्तीर्ण हो जाओगे। मैं जानता हूँ कि तुम्हारे अक्षर अच्छे नहीं बनते।

विशेष-

1. इन वाक्यों में एक मुख्य या प्रधान उपवाक्य और एक अथवा अधिक आश्रित उपवाक्य होते हैं जो समुच्चयबोधक अव्यय से जुड़े होते हैं।
2. मुख्य उपवाक्य की पुष्टि, समर्थन, स्पष्टता अथवा विस्तार हेतु ही आश्रित वाक्य आते है।

आश्रित वाक्य तीन प्रकार के होते हैं-

1. संज्ञा उपवाक्य।
2. विशेषण उपवाक्य।
3. क्रिया-विशेषण उपवाक्य।

1. संज्ञा उपवाक्य- जब आश्रित उपवाक्य किसी संज्ञा अथवा सर्वनाम के स्थान पर आता है तब वह संज्ञा उपवाक्य कहलाता है। जैसे- वह चाहता है कि मैं यहाँ कभी न आऊँ। यहाँ कि मैं कभी न आऊँ, यह संज्ञा उपवाक्य है।
2. विशेषण उपवाक्य- जो आश्रित उपवाक्य मुख्य उपवाक्य की संज्ञा शब्द अथवा सर्वनाम शब्द की विशेषता बतलाता है वह विशेषण उपवाक्य कहलाता है। जैसे- जो घड़ी मेज पर रखी है वह मुझे पुरस्कारस्वरूप मिली है। यहाँ जो घड़ी मेज पर रखी है यह विशेषण उपवाक्य है।
3. क्रिया-विशेषण उपवाक्य- जब आश्रित उपवाक्य प्रधान उपवाक्य की क्रिया की विशेषता बतलाता है तब वह क्रिया-विशेषण उपवाक्य कहलाता है। जैसे- जब वह मेरे पास आया तब मैं सो रहा था। यहाँ पर जब वह मेरे पास आया यह क्रिया-विशेषण उपवाक्य है।[1]

इकाई 2
साहित्यिक खण्ड

शिक्षणअधिगम –
साहित्यिकरचनाएँपढ़करहिंदीभाषामेंअनेकलाभहोतेहैं।इससेभाषाकासमझऔरव्याकरणमेंसुधारहोताहै
,
साथहीभावनात्मकसमझभीविकसितहोतीहै।साहित्यिकरचनाओंकेमाध्यमसेहमविभिन्नविचारोंऔरदृ
ष्टिकोणोंकोसमझपातेहैं, जोहमारेसोचनेऔरसमझनेकीक्षमताकोबढ़ाताहै।इसकेअलावा,
येरचनाएँहमेंहिंदीसाहित्यऔरसांस्कृतिकविरासतसेभीपरिचितकरातीहैं,
जिससेहमारीसांस्कृतिकपहचानमजबूतहोतीहै।

निराला'
निरालाकाजन्मबंगालमेंमेदिनीपुरजिलेकेमहिषादलगाँवमेंहुआथा।उनकापितृग्रामउत्तरप्रदेशकागढ़को
ला (उन्नाव)
है।उनकेबचपनकानामसूर्यकुमारथा।बहुतछोटीआयुमेंहीउनकीमाँकानिधनहोगया।निरालाकीविधिवत
स्कूलीशिक्षानवींकक्षातकहीहुई।पत्नीकीप्रेरणासेनिरालाकीसाहित्यऔरसंगीतमेंरुचिपैदाहुई।सन् 1918
मेंउनकीपत्नीकादेहांतहोगयाऔरउसकेबादपिता, चाचा, चचेरेभाईएक-
एककरसबचलबसे।अंतमेंपुत्रीसरोजकीमृत्युनेनिरालाकोभीतरतकझकझोरदिया।अपनेजीवनमेंनिराला
नेमृत्युकाजैसासाक्षात्कारकियाथाउसकीअभिव्यक्तिउनकीकईकविताओंमेंदिखाईदेतीहै।
सन् 1916
मेंउन्होंनेप्रसिद्धकविताजूहीकीकलीलिखीजिससेबादमेंउनकोबहुतप्रसिद्धिमिलीऔरवेमुक्तछंदकेप्रवर्तक
भीमानेगए।निरालासन् 1922 मेंरामकृष्णमिशनद्वाराप्रकाशितपत्रिकासमन्वयकेसंपादनसेजुड़े।सन्
1923-24
मेंवेमतवालाकेसंपादकमंडलमेंशामिलहुए।वेजीवनभरपारिवारिकऔरआर्थिककष्टोंसेजूझतेरहे।अपने
स्वाभिमानीस्वभावकेकारणनिरालाकहींटिककरकामनहींकरपाए।अंतमेंइलाहाबादआकररहेऔरवहींउ
नकादेहांतहुआ।
छायावादऔरहिंदीकीस्वच्छंदतावादीकविताकेप्रमुखआधारस्तंभनिरालाकाकाव्य-
संसारबहुतव्यापकहै।उनमेंभारतीयइतिहास,
दर्शनऔरपरंपराकाव्यापकबोधहैऔरसमकालीनजीवनकेयथार्थकेविभिन्नपक्षोंकाचित्रणभी।भावोंऔर
विचारोंकीजैसीविविधता, व्यापकता -
औरगहराईनिरालाकीकविताओंमेंमिलतीहैवैसीबहुतकमकवियोंमेंहै।उन्होंनेभारतीयप्रकृतिऔरसंस्कृति
केविभिन्नरूपोंकागंभीरचित्रणअपनेकाव्यमेंकियाहै।भारतीयकिसानजीवनसेउनकालगावउनकीअने
ककविताओंमेंव्यक्तहुआहै।
यद्यपिनिरालामुक्तछंदकेप्रवर्तकमानेजातेहैंतथापिउन्होंनेविभिन्नछंदोंमेंभीकविताएँलिखीहैं।उनकेकाव्य
-
संसारमेंकाव्यरूपोंकीभीविविधताहै।एकओरउन्होंनेरामकीशक्तिपूजाऔरतुलसीदासजैसीप्रबंधात्मकक
विताएँलिखींतोदूसरीओरप्रगीतोंकीभीरचनाकी।उन्होंनेहिंदीभाषामेंगज़लोंकीभीरचनाकीहै।उनकीसामा
जिकआलोचनाव्यंग्यकेरूपमेंउनकीकविताओंमेंजगह-जगहप्रकटहुईहै।
निरालाकीकाव्यभाषाकेअनेकरूपऔरस्तरहैं।रामकीशक्तिपूजाऔरतुलसीदासमेंतत्समप्रधानपदावलीहै
तोभिक्षुकजैसीकवितामेंबोलचालकीभाषाकासृजनात्मकप्रयोग।भाषाकाकसाव,
शब्दोंकीमितव्ययिताऔरअर्थकीप्रधानताउनकीकाव्य-भाषाकीजानी-पहचानीविशेषताएँहैं।

निरालाकीप्रमुखकाव्यकृतियाँहैं-परिमल, गीतिका, अनामिका, तुलसीदास, कुकुरमुत्ता, अणिमा, नएपत्ते, बेला, अर्चना, आराधना,
गीतगुंजआदि।निरालानेकविताकेअतिरिक्तकहानियाँऔरउपन्यासभीलिखे।उनकेउपन्यासोंमेंबिल्लेसुर बकरिहाविशेषचर्चितहुआ।उनकासंपूर्णसाहित्यनिरालारचनावलीकेआठखंडोंमेंप्रकाशितहोचुकाहै।

वह तोड़ती पत्थर

वह तोड़ती पत्थर;
देखा मैंने उसे इलाहाबाद के पथ पर-
वह तोड़ती पत्थर।

कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार;
श्याम तन, भर बंधा यौवन,
नत नयन, प्रिय-कर्म-रत मन,
गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार-बार प्रहार:-
सामने तरु-मालिका अट्टालिका, प्राकार।

चढ़ रही थी धूप;
गर्मियों के दिन,
दिवा का तमतमाता रूप;
उठी झुलसाती हुई लू
रुई ज्यों जलती हुई भू,
गर्द चिनगीं छा गई,
प्रायः हुई दुपहर :-
वह तोड़ती पत्थर।

देखते देखा मुझे तो एक बार
उस भवन की ओर देखा, छिन्नतार;
देखकर कोई नहीं,
देखा मुझे उस दृष्टि से
जो मार खा रोई नहीं,
सजा सहज सितार,
सुनी मैंने वह नहीं जो थी सुनी झंकार।

एक क्षण के बाद वह काँपी सुघर,
ढुलक माथे से गिरे सीकर,
लीन होते कर्म में फिर ज्यों कहा-
"मैं तोड़ती पत्थर।"

व्याख्या

इसकवितामेंकवि ‘निराला’
जीएकपत्थरतोड़नेवालीमजदूरिनकेमाध्यमसेशोषितसमाजकेजीवनकीविषमताकावर्णनकरते हुए कहते हैंकि, मैंने एक महिला को पत्थर तोड़ते हुए देखा। कवि इलाहाबाद के किसी रास्ते पर उस महिला को पत्थर तोड़ते हुए देखते है। वह एक ऐसे पेड़ के नीचे बैठी है, जहा छाया नहीं मिल रही आस पास भी कोई छायादार जगह नहीं हैं। इस प्रकार कवि शोषित समाज की विषमता का वर्णन करते है ओर बताते है की मजदूर वर्ग अपना काम पूरी लग्न के साथ करते है। कवी महिला के रूप का वर्णन करते हुए कहते है, की महिला का रंग सावला है, परिपक्व अर्थात् युवा काल में आ गई है। आंखो में चमक, और मन अपने कार्य में लगा रखा हैं। और पत्थर तोड़ रही हैं। सूरज अपने चरम पर जा पहुंचा है, गर्मी बढ़ती जा रही है। कवि बताते है दिन में सबसे कष्टदायक समय यही हैं। धरती - आसमान सब इस भीषण गर्मी से झुलस रहे है। अचानक महिला की नज़र उस भवन की ओर जाती हैं जहां कवि है, उसे देख कर ऐसा प्रतीत हो रहा की उस सितार से मेरा हो, ओर उसकी ध्वनि कवि कनो को भी सुनाई दे रही है परन्तु महिला रो नहीं रही है। कवि बताना चाहते हैं की महिला अपनी गरीबी के कारण दुखी है परन्तु उसने अभी तक अपनी हिम्मत नहीं हारी है। अचानक महिला को अपने कार्य का स्मरण होता है और एकाएक एक फिर से अपने कार्य में लग जाती है। ओर केहरी है, में तोड़ती पत्थर।

प्रश्नअभ्यास

1. पत्थर तोड़ने वाली जहा बैठी थी सके सामने किसका दृश्य है।
2. कविता का मूल भाव क्या है?
3. तोड़ती पत्थर कविता में स्त्री पत्थर कैसे तोड़ रही है?
4. श्रमिक युवती को देखकर कवि ने क्या महसूस किया?
5. वह तोड़ती पत्थर के लेखक कौन है?

मैथिलीशरण गुप्त

मैथिलीशरणगुप्तकाजन्म३अगस्त१८८६मेंपितासेठरामचरणकनकनेऔरमाताकाशीबाईकीतीसरीसंतानकेरूपमेंउत्तरप्रदेशमेंझांसीकेपासचिरगांवमेंहुआ।माताऔरपितादोनोंहीवैष्णवथे।विद्यालयमेंखेलकूदमें अधिकध्यानदेनेकेकारणपढ़ाईअधूरीहीरहगयी।रामस्वरूपशास्त्री, दुर्गादत्तपंत, आदिनेउन्हेंविद्यालयमेंपढ़ाया।घरमेंहीहिन्दी, बंगला, संस्कृतसाहित्यकाअध्ययनकिया।मुंशीअजमेरीजीनेउनकामार्गदर्शनकिया।१२वर्षकीअवस्थामेंब्रजभाषा मेंकनकलतानामसेकवितारचनाआरम्भकिया।आचार्यमहावीरप्रसादद्विवेदीकेसम्पर्कमेंभीआये।उनकी कवितायेंखड़ीबोलीमेंमासिक "सरस्वती" मेंप्रकाशितहोनाप्रारम्भहोगई।

प्रथमकाव्यसंग्रह "रंगमेंभंग" तथाबादमें "जयद्रथवध" प्रकाशितहुई।उन्होंनेबंगालीकेकाव्यग्रन्थ "मेघनाथवध", "ब्रजांगना" काअनुवादभीकिया।सन् 1912 - 1913 ई. मेंराष्ट्रीयभावनाओंसेओत-प्रोत "भारतभारती" काप्रकाशनकिया।उनकीलोकप्रियतासर्वत्रफैलगई।संस्कृतकेप्रसिद्धग्रन्थ "स्वप्नवासवदत्ता" काअनुवादप्रकाशितकराया।सन्१९१६-१७ई. मेंमहाकाव्य 'साकेत' कीरचनाआरम्भकी।उर्मिलाकेप्रतिउपेक्षाभावइसग्रन्थमेंदूरकिये।स्वतःप्रेसकीस्थापनाकरअपनीपुस्तकें

छापनाशुरुकिया।साकेततथापंचवटीआदिअन्यग्रन्थसन्१९३१मेंपूर्णकिये।इसीसमयवेराष्ट्रपितागांधीजी केनिकटसम्पर्कमेंआये। 'यशोधरा' सन्१९३२ई. मेंलिखी।गांधीजीनेउन्हें "राष्टकवि" कीसंज्ञाप्रदानकी। 16 अप्रैल 1941
कोवेव्यक्तिगतसत्याग्रहमेंभागलेनेकेकारणगिरफ्तारकरलिएगए।पहलेउन्हेंझाँसीऔरफिरआगराजेलले जायागया।आरोपसिद्धनहोनेकेकारणउन्हेंसातमहीनेबादछोड़दियागया।सन् 1948
मेंआगराविश्वविद्यालयसेउन्हेंडी.लिट. कीउपाधिसेसम्मानितकियागया।१९५२-
१९६४तकराज्यसभाकेसदस्यमनोनीतहुये।सन्१९५३ई.
मेंभारतसरकारनेउन्हेंपद्मविभूषणसेसम्मानितकिया।तत्कालीनराष्ट्रपतिडॉ॰राजेन्द्रप्रसादनेसन्१९६२ ई. मेंअभिनन्दनग्रन्थभेंटकियातथाहिन्दूविश्वविद्यालयकेद्वाराडी.लिट.
सेसम्मानितकियेगये।वेवहाँमानदप्रोफेसरकेरूपमेंनियुक्तभीहुए।१९५४मेंसाहित्यएवंशिक्षाक्षेत्रमेंपद्मभूष णसेसम्मानितकियागया।चिरगाँवमेंउन्होंने१९११मेंसाहित्यसदननामसेस्वयंकीप्रैसशुरूकीऔरझांसीमें १९५४-५५मेंमानस-मुद्रणकीस्थापनाकी।

इसीवर्षप्रयागमें "सरस्वती"
कीस्वर्णजयन्तीसमारोहकाआयोजनहुआजिसकीअध्यक्षतागुप्तजीनेकी।सन्१९६३ई०मेंअनुजसियाराम शरणगुप्तकेनिधननेअपूर्णनीयआघातपहुंचाया।१२दिसम्बर१९६४ई.
कोदिलकादौरापड़ाऔरसाहित्यकाजगमगाताताराअस्तहोगया।७८वर्षकीआयुमेंदोमहाकाव्य, १९खण्डकाव्य, काव्यगीत, नाटिकायेंआदिलिखी।उनकेकाव्यमेंराष्ट्रीयचेतना,
धार्मिकभावनाऔरमानवीयउत्थानप्रतिबिम्बितहै। 'भारतभारती' केतीनखण्डमेंदेशकाअतीत,
वर्तमानऔरभविष्यचित्रितहै।वेमानववादी,
नैतिकऔरसांस्कृतिककाव्यधाराकेविशिष्टकविथे।हिन्दीमेंलेखनआरम्भकरनेसेपूर्वउन्होंनेरसिकेन्द्र नामसेब्रजभाषामेंकविताएँ, दोहा, चौपाई, छप्पयआदिछंदलिखे।येरचनाएँ 1904-05 केबीचवैश्योपकारक (कलकत्ता), वेंकटेश्वर (बम्बई) औरमोहिनी (कन्नौज)
जैसीपत्रिकाओंमेंप्रकाशितहुई।उनकीहिन्दीमेंलिखीकृतियाँइंदु, प्रताप,
प्रभाजैसीपत्रिकाओंमेंछपतीरहीं।प्रतापमेंविदग्धहृदयनामसेउनकीअनेकरचनाएँप्रकाशितहुई।

भारतवर्षकीश्रेष्ठता

भू-लोककागौरवप्रकृतिकापुण्यलीला-स्थलकहाँ ?

फैलामनोहरगिरीहिमालयऔरगंगाजलजहाँ।

सम्पूर्णदेशोंसेअधिककिसदेशकाउत्कर्षहै,

उसकाकिजोऋषिभूमिहै, वहकौन ? भारतवर्षहै॥१५॥

हाँ, वृद्धभारतवर्षहीसंसारकासिरमौरहै,

ऐसापुरातनदेशकोईविश्वमेंक्याऔरहै ?

भगवानकीभव-भूतियोंकायहप्रथमभण्डारहै,

विधिनेकियानर-सृष्टिकापहलेयहींविस्तारहै॥१६॥

यहपुण्यभूमिप्रसिद्धहै, इसकेनिवासी 'आर्य्य' हैं;

विद्या, कला-कौशल्यसबके, जोप्रथमआचार्य्यहैं।

संतानउनकीआजयद्यपि, हमअधोगतिमेंपड़े;

परचिन्हउनकीउच्चताके, आजभीकुछहैंखड़े

व्याख्या

भारत की श्रेष्ठता" कविता में मैथिलीशरण गुप्त ने भारत के गौरवशाली अतीत का वर्णन किया है। उसने बताया है कि भारत ही विश्व का वह देश है जहाँ सर्वप्रथम सृष्टि आरम्भ हुई तथा यहाँ से ही समस्त विश्व में ज्ञान का प्रकाश फैला। समस्त संसार को ज्ञान-विज्ञान, कला-कौशल तथा सभ्यता-संस्कृति सिखाने वाला देश भारत ही है। गुप्त जी का संदेश है कि भारतीयों को अपने गौरवशाली अतीत का स्मरण करना चाहिए तथा निराशा और उत्साहहीनता त्यागकर देशोत्थान के कार्य में जुट जाना चाहिए। हमें स्वदेश प्रेम करना चाहिए तथा राष्ट्र को उन्नति के शिखर पर पहुँचाना चाहिए।

प्रश्न अभ्यास

1. भारत की श्रेष्ठता" कविता में गुप्त जी ने क्या संदेश दिया है?
2. भारतकीश्रेष्ठता' मेंअभिव्यक्तविचारोंकोअपनेशब्दोंमेंलिखिए।
3. भारतवर्षकेअतीतकीविशेषताओंपरप्रकाशडालिए।

4. आर्यकौनथे? गुप्तजीनेउनकेसम्बन्धमेंकवितामेंक्याबतायाहै?

हरिवंशराय

हरिवंशरायबच्चनकाजन्म 27 नवंबर 1907
कोइलाहाबादकेपासप्रतापगढ़जिलेकेएकछोटेसेगाँवपट्टीमेंहुआथा।हरिवंशरायने 1938
मेंइलाहाबादविश्वविद्यालयसेअँग्रेज़ीसाहित्यमेंएम. एकियाव 1952
तकइलाहाबादविश्वविद्यालयमेंप्रवक्तारहे।
1926 मेंहरिवंशरायकीशादीश्यामासेहुईथीजिनकाटीबीकीलंबीबीमारीकेबाद 1936
मेंनिधनहोगया।इसबीचवेनितांतअकेलेपड़गए। 1941 मेंबच्चननेतेजीसूरीसेशादीकी।
1952 मेंपढ़नेकेलिएइंग्लैंडचलेगए, जहांकैम्ब्रिजविश्वविद्यालयमेंअंग्रेजीसाहित्य/काव्यपरशोधकिया।
1955
मेंकैम्ब्रिजसेवापसआनेकेबादआपकीभारतसरकारकेविदेशमंत्रालयमेंहिन्दीविशेषज्ञकेरूपमेंनियुक्तहोग
ई।

आपराज्यसभाकेमनोनीतसदस्यभीरहेऔर 1976 मेंआपकोपद्मभूषणकीउपाधीमिली।इससेपहलेआपको 'दोचट्टानें' (कविता-संग्रह) केलिए 1968 मेंसाहित्यअकादमीकापुरस्कारभीमिलाथा।हरिवंशरायबच्चनका 18 जनवरी, 2003 कोमुंबईमेंनिधनहोगयाथा।
बच्चनव्यक्तिवादीगीतकवितायाहालावादीकाव्यकेअग्रणीकविहैं।
अपनीकाव्य-यात्राकेआरम्भिकदौरमेंआप 'उमरखैय्याम' केजीवन-दर्शनसेबहुतप्रभावितरहेऔरउनकीप्रसिद्धकृति, 'मधुशाला' उमरखैय्यामकीरूबाइयोंसेप्रेरितहोकरहीलिखीगईथी।मधुशालाकोमंचपरअत्यधिकप्रसिद्धिमिलीऔरबच्चनकाव्यप्रेमियोंकेलोकप्रियकविबनगए।
हरिवंशरायबच्चनकीमुख्य-कृतियां
मधुबाला, मधुकलश, निशानिमंत्रण, एकांतसंगीत, सतरंगिनी, विकलविश्व, खादीकेफूल, सूतकीमाला, मिलन, दोचट्टानेंवआरतीऔरअंगारेइत्यादिबच्चनकीमुख्यकृतियांहैं।

पथकीपहचान

पूर्व चलने के बटोही, बाट की पहचान कर ले

पुस्तकों में है नहीं छापी गई इसकी कहानी,
हाल इसका ज्ञात होता है न औरों की ज़बानी,
अनगिनत राही गए इस राह से, उनका पता क्या,
पर गए कुछ लोग इस पर छोड़ पैरों की निशानी,
यह निशानी मूक होकर भी बहुत कुछ बोलती है,
खोल इसका अर्थ, पंथी, पंथ का अनुमान कर ले
पूर्व चलने के बटोही, बाट की पहचान कर ले।

है अनिश्चित किस जगह पर सरित, गिरि, गह्वर मिलेंगे,
है अनिश्चित किस जगह पर बाग वन सुंदर मिलेंगे,
किस जगह यात्रा ख़तम हो जाएगी, यह भी अनिश्चित,
है अनिश्चित कब सुमन, कब कंटकों के शर मिलेंगे
कौन सहसा छूट जाएँगे, मिलेंगे कौन सहसा,
आ पड़े कुछ भी, रुकेगा तू न, ऐसी आन कर ले।
पूर्व चलने के बटोही, बाट की पहचान कर ले।
कौन कहता है कि स्वप्नों को न आने दे हृदय में,
देखते सब हैं इन्हें अपनी उमर, अपने समय में,
और तू कर यत्न भी तो, मिल नहीं सकती सफलता,
ये उदय होते लिए कुछ ध्येय नयनों के निलय में,
किन्तु जग के पंथ पर यदि, स्वप्न दो तो सत्य दो सौ,
स्वप्न पर ही मुग्ध मत हो, सत्य का भी ज्ञान कर ले।
पूर्व चलने के बटोही, बाट की पहचान कर ले।

स्वप्न आता स्वर्ग का, दृग-कोरकों में दीप्ति आती,
पंख लग जाते पगों को, ललकती उन्मुक्त छाती,

रास्ते का एक काँटा, पाँव का दिल चीर देता,
रक्त की दो बूँद गिरतीं, एक दुनिया डूब जाती,
आँख में हो स्वर्ग लेकिन, पाँव पृथ्वी पर टिके हों,
कंटकों की इस अनोखी सीख का सम्मान कर ले
पूर्व चलने के बटोही, बाट की पहचान कर ले।
यह बुरा है या कि अच्छा, व्यर्थ दिन इस पर बिताना,
अब असंभव छोड़ यह पथ दूसरे पर पग बढ़ाना,
तू इसे अच्छा समझ, यात्रा सरल इससे बनेगी,
सोच मत केवल तुझे ही यह पड़ा मन में बिठाना,
हर सफल पंथी यही विश्वास ले इस पर बढ़ा है,
तू इसी पर आज अपने चित्त का अवधान कर ले।
पूर्व चलने के बटोही, बाट की पहचान कर ले।

व्याख्या

पथकीपहचानकवितामेंकविनेमनुष्यकोजीवनपथपरआगेबढ़नेसेपहलेसावधानकियाहैकियात्राआरंभ करनेसेपहलेमनुष्यकोअपनेलक्ष्यवमार्गकानिर्धारणकरलेनाचाहिए।इसलक्ष्यकानिर्धारणहमेंस्वयंहीकर नापड़ताहै।यहकहानीपुस्तकोंमेंनहींछपीहोती।जितनेभीमहापुरुषहुएहैंउन्होंनेभीअपनेलक्ष्यकानिर्धारण स्वयंहीकियाथा।कविनेपथिककोअच्छे -
बुरेकीशंकाकिएबिनाआस्थाकेसाथअपनेमार्गपरचलनेकोकहाहै,
जिससेलक्ष्यतकपहुँचनेकीयात्रासरलहोजाएगी।यदिहमअपनेमनमेंयहसोचलेंकियहीमार्गसहीएवंसरलहै तोहमलक्ष्यकीप्राप्तिआसानीसेकरसकतेहैं।जितनेभीमहापुरुषोंनेअपनेलक्ष्यकीप्राप्तिकीहै,
वेमार्गकीकठिनाइयोंसेनहींघबराएऔरअपनेमार्गपरनिरंतरबढ़तेरहे।उचितमार्गकीपहचानसेहीजीवनमें सफलताप्राप्तकीजासकतीहै।जीवनकेमार्गमेंकबकठिनाइयाँआएँगीऔरकबसुखमिलेगा,
यहनिश्चितरूपसेनहींकहाजासकता।अर्थात्यहसबअनिश्चितहैकिकबकोईहमसेबिछड़जाएगाऔरकबहमें कोईमिलेगा,
कबहमारीजीवनयात्रासमाप्तहोजाएगी।कविमनुष्यकोहरविपत्तिसेसामनाकरनेकाप्रणलेनेकीप्रेरणादेतेहैं ।कल्पनाकरनामनुष्यकास्वभावहै।कविकेअनुसारजीवनकेसुनहरेसपनेदेखनागलतबातनहींहै।अपनी आयुकेअनुरूपसभीकल्पनाकरतेहैं।परंतुइससंसारमेंकल्पनाएँबहुतकमऔरयथार्थबहुतअधिकहैं।इसलिए तूकल्पनाओंकेस्वप्नमेंनडूब,
वरन्जीवनकीवास्तविकताओंकोदेख।जबमनुष्यस्वर्गकेसुखोंकीकल्पनाकरताहैतोउसकीआँखोंमेंप्रस न्नताभरजातीहै।पैरोंमेंपंखलगजातेहैंऔरहृदयउनसुखोंकोपानेकोलालायितहोजाताहैपरंतुजबयथार्थ (सत्य)
सामनेआताहैतोमनुष्यनिराशहोजाताहै।हमारेआँखोंमेंभलेहीस्वर्गकेसुखोंकेसपनेहोपरंतुहमारेपैरधरात लपरहीजमेहोनेचाहिए।राहकेकाँटेहमेंजीवनमार्गकीकठिनाइयोंकासंदेशदेतेहैं।इसलिएइनकष्टोंसेलड़ने केलिएसोच-विचारकरहीकार्यकरोऔरएकबारआगेबढ़नेपरविघ्न-बाधाओंसेमतघबराओ।
कवि कहता है कि विवेकपूर्ण कार्य का चुनाव करने के पश्चात उसकी अच्छाई-बुराई पर सोचना व्यर्थ है- क्योंकि उस पथ को छोड़कर दूसरे पर चलना भी सम्भव नहीं हो सकेगा। कठिनाइयाँ तो हर मार्ग में होती हैं। इसलिए हे पंथी, अपने निश्चित कार्य को श्रेष्ठ समझकर उसे तुरन्त शुरू कर दे।

प्रश्न अभ्यास

1. पथ की पहचान कविता में कवि ने पथ पर चलने के पहले क्या करने को कहा?
2. जीवनसे पहले हमें किसकी पहचान कर लेनी चाहिए पथ पर आगे बढ़ने-?
3. ‘कंटको की इस अनोखी सिख का सम्मान कर ले’ यहां ‘कंटक’ किसका प्रतीक है?
4. ‘पूर्व चलने के बटोही बाट की पहचान कर ले’। इसमें ‘बटोही’ किसे कहा गया है?

सुभद्राकुमारीचौहान

सुभद्राकुमारीकाजन्मनागपंचमीकेदिन 16 अगस्त 1904 कोइलाहाबाद (उत्तरप्रदेश) केनिकटनिहालपुरगाँवमेंएकसम्पन्नपरिवारमेंहुआथा।
सुभद्राकुमारीकोबचपनसेहीकाव्य-ग्रंथोंसेविशेषलगाववरूचिथा।आपकाविद्यार्थीजीवनप्रयागमेंहीबीता।अल्पायुआयुमेंहीसुभद्राकीपहलीकविताप्रकाशितहुईथी।सुभद्राऔरमहादेवीवर्मादोनोंबचपनकीसहेलियाँथीं।सुभद्राकुमारीकाविवाहखंडवा (मद्यप्रदेश) निवासी 'ठाकुरलक्ष्मणसिंह' केसाथहुआ।पतिकेसाथवेभीमहात्मागांधीकेआंदोलनसेजुड़गईऔरराष्ट्र-प्रेमपरकविताएंकरनेलगी।
साहित्यकृतियां
आपकापहलाकाव्य-संग्रह 'मुकुल' 1930 मेंप्रकाशितहुआ।इनकीचुनीहुईकविताएँ 'त्रिधारा' मेंप्रकाशितहुईहैं। 'झाँसीकीरानी' इनकीबहुचर्चितरचनाहै।
कविता : अनोखादान, आराधना, इसकारोना, उपेक्षा, उल्लास, कलह-कारण, कोयल, खिलौनेवाला, चलतेसमय, चिंता, जीवन-फूल, झाँसीकीरानीकीसमाधिपर, झांसीकीरानी, झिलमिलतारे, ठुकरादोयाप्यारकरो, तुम, नीम, परिचय, पानीऔरधूप, पूछो, प्रतीक्षा, प्रथमदर्शन, प्रभुतुममेरेमनकीजानो, प्रियतमसे, फूलकेप्रति, बिदाई, भ्रम, मधुमयप्याली, मुरझायाफूल, मेरागीत, मेराजीवन, मेरानयाबचपन, मेरीटेक, मेरेपथिक, यहकदम्बकापेड़-2, यहकदम्बकापेड़, विजयीमयूर, विदा, वीरोंकाहोकैसावसन्त, वेदना, व्याकुलचाह, समर्पण, साध, स्वदेशकेप्रति, जलियाँवालाबागमेंबसंत
सुभद्राजीकोप्रायःउनकेकाव्यकेलिएहीजानाजाताहैलेकिनउन्होंनेराष्ट्रीयआंदोलनमेंभीसक्रियभागीदारीकीऔरजेलयात्राकेपश्चातआपकेतीनकहानीसंग्रहभीप्रकाशितहुए, जोनिम्नलिखितहैं:
बिखरेमोती (1932)
उन्मादिनी (1934)
सीधे-सादेचित्र (1947)
निधन:
15 फ़रवरी 1948 कोएकसड़कदुर्घटनामेंआपकानिधनहोगया।

झाँसीकीरानी

सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,

बूढ़े भारत में भी आई फिर से नई जवानी थी,

गुमी हुई आज़ादी की क़ीमत सबने पहचानी थी,

दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी,

चमक उठी सन् सत्तावन में

वह तलवार पुरानी थी।

बुंदेले हरबोलों के मुँह

हमने सुनी कहानी थी।

ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो

झाँसी वाली रानी थी॥

कविताकेइसप्रथमपदमेंलेखिकासुभद्राकुमारीचौहानजीनेझाँसीकीरानीलक्ष्मीबाईकेसाहस,
पराक्रमऔरबलिदानकावर्णनकरतेहुएकहाहैंकिकिसतरहरानीनेगुलामभारतकोस्वतंत्रकरवानेकेलिए
हरभारतीयकेमनमेंचिंगारीलगादीथी।रानीलक्ष्मीबाईकेसाहससेहरभारतवासीजोशसेभरउठाऔरसबनेम
नमेंअंग्रेजोंकोदूरभगानेकीठानलिया। 1857
मेंउन्होंनेजोतलवारउठाईथीयानीअंग्रेजोंकेखिलाफजंगछेड़ीथी,
उससेसभीनेअपनीआज़ादीकीकीमतपहचानीथी।

कानपूर के नाना की मुँहबोली बहन 'छबीली' थी,

लक्ष्मीबाई नाम, पिता की वह संतान अकेली थी,

नाना के संग पढ़ती थी वह, नाना के संग खेली थी,

बरछी, ढाल, कृपाण, कटारी उसकी यही सहेली थी,

वीर शिवाजी की गाथाएँ

उसको याद ज़बानी थीं।

बुंदेले हरबोलों के मुँह

हमने सुनी कहानी थी।

ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो

झाँसी वाली रानी थी॥

झांसी की रानी कविता के इस दूसरे पद में लेखिका कहतीं हैं कि कानपुर के नाना साहब ने बचपन में ही रानी लक्ष्मीबाई की अद्भुत प्रतिभा से प्रभावित होकर, उन्हें अपनी मुंह-बोली बहन बना लिया था। लक्ष्मी बाई अपने पिता की एकमात्र संतान थीं, उनका बचपन , खेल कूद के दिन नाना के साथ ही बिता था, नाना साहब उन्हें युद्ध विद्या की शिक्षा भी दिया करते थे।

लक्ष्मीबाई बचपन से ही बाकी लड़कियों से अलग थीं। उन्हें गुड्डे-गुड़ियों के बजाय तलवार, कृपाण, तीर और बरछी चलाना अच्छा लगता था। बचपन से ही वीर शिवाजी की कहानी सुनती आई थीं, उनपर शिवाजी के जीवन का बड़ा प्रभाव था। तभी तो हर एक बुन्देल वासियों के मुंह पर रानी लक्ष्मी बाई की वीरता की कहानी हर समय रहती हैं।

लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरता की अवतार,

देख मराठे पुलकित होते उसकी तलवारों के वार,

नक़ली युद्ध, व्यूह की रचना और खेलना ख़ूब शिकार,

सैन्य घेरना, दुर्ग तोड़ना, ये थे उसके प्रिय खिलवार,

महाराष्ट्र-कुल-देवी उसकी

भी आराध्य भवानी थी।

बुंदेले हरबोलों के मुँह

हमने सुनी कहानी थी।

ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो

झाँसी वाली रानी थी॥

झांसीकीरानीकविताकेइसतीसरेपदमेंकवियत्रीनेबतायाहैंकिलक्ष्मीबाईमानोदेवीदुर्गाकीअवतारहों।उन कीकमालकीव्यूह-रचना, तलवारबाज़ी,

लड़ाईकाअभ्यासतथादुर्गतोड़नाइनसबखेलोंमेंउन्हेंमहारथथीं।यहदेखमराठेसरदारोंकीखुशियादुगनीहो जातीथीं।मराठाओंकीकुलदेवीभवानीउनकीभीपूजनीयथीं।वेवीरहोनेकेसाथ-साथधार्मिकभीथीं।

हुई वीरता की वैभव के साथ सगाई झाँसी में,

ब्याह हुआ रानी बन आई लक्ष्मीबाई झाँसी में,

राजमहल में बजी बधाई ख़ुशियाँ छाई झाँसी में,

सुभट बुंदेलों की विरुदावलि-सी वह आई झाँसी में,

चित्रा ने अर्जुन को पाया,

शिव से मिली भवानी थी।

बुंदेले हरबोलों के मुँह

हमने सुनी कहानी थी।

ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो

झाँसी वाली रानी थी।।

झाँसीकीरानीकविताकेइसचौथेपदमेंकवयित्रीसुभद्राकुमारीनेरानीलक्ष्मीबाईकेझांसीकेराजाश्रीगंगाधर रावकेसाथविवाहकाउल्लेखकियाहै।कवयित्रीकहतीहैंकीझाँसीऔरझाँसीकेमहलमेंचारोओरखुशियाउम ड़पड़ीथी।लेखिकाआगेकहतीहैंकिउनकीजोड़ीशिव-पार्वतीऔरअर्जुन-चित्राकीजैसीहै।उनकेआनेसेझांसीमेंख़ुशियाँऔरसौभाग्यआगयाथा।

उदित हुआ सौभाग्य, मुदित महलों में उजयाली छाई,

किंतु कालगति चुपके-चुपके काली घटा घेर लाई,

तीर चलानेवाले कर में उसे चूड़ियाँ कब भाई,

रानी विधवा हुई हाय! विधि को भी नहीं दया आई,

निःसंतान मरे राजाजी

रानी शोक-समानी थी।

बुंदेले हरबोलों के मुँह

हमने सुनी कहानी थी।

ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो

झाँसी वाली रानी थी।।

इसपदमेंलक्ष्मीबाईकेजीवनकेकठिनसमयकावर्णनकियागयाहै,
जिसमेंउनकेपतिकीअसमयमृत्युकेबादरानीअत्यंतदुखीथीं।उनकेकोईसंतानभीनहींथी।वेझांसीकोसंभालनेकेलिएबिल्कुलअकेलीरहगईथीं।

बुझा दीप झाँसी का तब डलहौज़ी मन में हरषाया,

राज्य हड़प करने का उसने यह अच्छा अवसर पाया,

फ़ौरन फ़ौजें भेज दुर्ग पर अपना झंडा फहराया,

लावारिस का वारिस बनकर ब्रिटिश राज्य झाँसी आया,

अश्रुपूर्ण रानी ने देखा

झाँसी हुई बिरानी थी।

बुंदेले हरबोलों के मुँह

हमने सुनी कहानी थी।

ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो

झाँसी वाली रानी थी।।

झाँसीकीरानीकविताकेइसपदमेंयहबतायागयाहैंकिझांसीकेराजाकीअसमयमृत्युकेबादउससमयकेअंग्रेज़अधिकारीडलहौजीकोझांसीकोहड़पनेकाअच्छाअवसरमिलगयाथा।उसनेअपनीसेनाकोअनाथहोचुकीझांसीपरकब्ज़ाजमानेकेलिएभेजदियाथा।

अनुनय-विनय नहीं सुनता है, विकट फिरंगी की माया,

व्यापारी बन दया चाहता था जब यह भारत आया,

डलहौज़ी ने पैर पसारे अब तो पलट गयी काया,

राजाओं नव्वाबों को भी उसने पैरों ठुकराया,

रानी दासी बनी, बनी यह

दासी अब महरानी थी।

बुंदेले हरबोलों के मुँह

हमने सुनी कहानी थी।

ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो

झाँसी वाली रानी थी।।

झाँसीकीरानीकविताकेइसपदमेंकवयित्रीबतारहीहैंकिअंग्रेज़लोगभारतमेंव्यापारीबनकरआएथेऔरफिर धीरे-धीरेउन्होनेयहांकेसभीबड़े-बड़ेराजा-महाराजाओंऔररानियोंसेदयाऔरसहायताकीभीखमांगकर, उनकाहीराज्यहड़पलियाथा।परंतुलक्ष्मीबाईअन्यराजा-रानियोंसेविपरीतथींऔरउन्होंनेविषमपरिस्थितियोंमेंभीएकमहारानीकीतरहझांसीकोसंभाला।

छिनी राजधानी देहली की, लिया लखनऊ बातों-बात,

क़ैद पेशवा था बिठूर में, हुआ नागपुर का भी घात,

उदैपूर, तंजोर, सतारा, करनाटक की कौन बिसात,

जबकि सिंध, पंजाब, ब्रह्म पर अभी हुआ था वज्र-निपात,

बंगाले, मद्रास आदि की

भी तो यही कहानी थी।

बुंदेले हरबोलों के मुँह

हमने सुनी कहानी थी।

ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो

झाँसी वाली रानी थी॥

इसपदमेंउनसभीराज्योंकीचर्चाकीगईहै, जिन्हेंअंग्रेज़ोंद्वाराहड़पलियागयाथा, जोकिनिम्नहैं – दिल्ली, लखनऊ, बिठुर, नागपुर, उदयपुर, तंजौर, सतारा, कर्नाटक, सिंधप्रांत, पंजाब, बंगालऔरमद्रास।अर्थात्ऐसाकोईक्षेत्रनहींबचाथा, जहांबेईमानअंग्रेज़ोंनेअपनाअधिकारनहींजमायाहो।

रानी रोई रनिवासों में बेगम ग़म से थीं बेज़ार

उनके गहने-कपड़े बिकते थे कलकत्ते के बाज़ार,

सरे-आम नीलाम छापते थे अंग्रेज़ों के अख़बार,

'नागपूर के जेवर ले लो' 'लखनऊ के लो नौलख हार',

यों पर्दे की इज़्ज़त पर—

देशी के हाथ बिकानी थी।

बुंदेले हरबोलों के मुँह

हमने सुनी कहानी थी।

ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो

झाँसी वाली रानी थी॥

झाँसीकीरानीकैसेक्रूरअंग्रेजोंकेद्वाराउनकेराजाओंऔररानियोंकेसाथअनैतिकताऔरअनादरकासामर्थ्य पूर्णवर्णनकियागयाहै।उनअंग्रेज़शासकोंनेराज्योंकाअधिकारहड़पलिया, रानियोंकीआदर्शोंऔरमर्यादाओंकोहीनकिया।चाहेवेलखनऊकीरानीहों, याकलकत्ताऔरनागपुरकीरानियां, उनकेवस्त्रऔरआभूषणउनसेछीनेऔरनीलामकरदिएजातेथे।औरअबइनघटनाओंकेबाद, झाँसीकीरानीकीओरआगेकाकदमथा।

कुटियों में थी विषम वेदना, महलों में आहत अपमान,

वीर सैनिकों के मन में था, अपने पुरखों का अभिमान,

नाना धुंधूपंत पेशवा जुटा रहा था सब सामान,

बहिन छबीलीनेरण-चंडी का कर दिया प्रकट आह्वान,

हुआ यज्ञ प्रारंभ उन्हें तो

सोयी ज्योति जगानी थी।

बुंदेले हरबोलों के मुँह

हमने सुनी कहानी थी।

ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो

झाँसी वाली रानी थी।।

इसपदमेंबतायागयाहैंकिचाहेवहगरीबहोयाअमीर,
सभीलोगोंकेमनमेंअंग्रेज़ोंकेखिलाफविद्रोहकीभावनाथी।यहभावनाउन्हेंबहुतउत्साहितकररहीथी।सभीसै निकनानासाहबकेनेतृत्वमेंयुद्धकेलिएतैयारथे।साथही,
उनकीसाहसीबहनलक्ष्मीबाईनेअंग्रेज़ोंसेलड़नेकानिर्णयलियाथाऔरहारमाननेकासोचाहीनहीं।

महलों ने दी आग, झोंपड़ी ने ज्वाला सुलगाई थी,

यह स्वतंत्रता की चिनगारी अंतरतम से आई थी,

झाँसी चेती, दिल्ली चेती, लखनऊ लपटें छाई थीं,

मेरठ, कानपूर, पटना ने भारी धूम मचाई थी,

जबलपूर, कोल्हापुर में भी

कुछ हलचल उकसानी थी।

बुंदेले हरबोलों के मुँह

हमने सुनी कहानी थी।

ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो

झाँसी वाली रानी थी॥

विद्रोहकीज्वालादेशकेहरराज्यमेंजलरहीथी, चाहेवहझांसीहोयालखनऊ।दिल्ली, मेरठ, कानपुरऔरपटनाजैसेराज्योंकेराजाओंनेइससंघर्षमेंअपनासहयोगदिया।इसकेसाथही, जबलपुरऔरकोल्हापुरजैसेमहत्वपूर्णशासकोंनेभी 1857 कीक्रांतिमेंप्रमुखभूमिकानिभाई।

इस स्वतंत्रता-महायज्ञ में कई वीरवर आए काम

नाना धुंधूपंत, तॉंतिया, चतुर अजीमुल्ला सरनाम,

अहमद शाह मौलवी, ठाकुर कुँवरसिंह सैनिक अभिराम,

भारत के इतिहास-गगन में अमर रहेंगे जिनके नाम,

लेकिन आज ज़ुर्म कहलाती

उनकी जो क़ुरबानी थी।

बुंदेले हरबालों के मुँह

हमने सुनी कहानी थी।

ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो

झाँसी वाली रानी थी॥

नानाधोंडूपंत, तातियाटोपे, चतुरअज़ीमुल्लाखां, अहमदशाहमौलवी, ठाकुरकुंवरसिंह, तथासैनिकअभिरामआदिऐसेहीवीरऔरसाहसीक्रांतिकारीथे, जिन्होंनेयुद्धमेंदुश्मनोंसेसशस्त्रलड़ाईचुनीऔरदेशकेस्वाधीनताकेलिएअपनीजाननन्यौछावरकरदी।

इनकी गाथा छोड़ चलें हम झाँसी के मैदानों में,

जहाँ खड़ी है लक्ष्मीबाई मर्द बनी मर्दानों में,

लेफ़्टिनेंट वॉकर आ पहुँचा, आगे बढ़ा जवानों में,

रानी ने तलवार खींच ली, हुआ द्वंद्व असमानों में,

ज़ख्मी होकर वॉकर भागा,

उसे अजब हैरानी थी।

बुंदेले हरबोलों के मुँह

हमने सुनी कहानी थी।

ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो

झाँसी वाली रानी थी॥

झांसीकेयुद्धमें, जबलेफ्टिनेंटवॉकरअंग्रेज़सेनाकीओरसेयुद्धकरनेआए,
तबरानीलक्ष्मीबाईअकेलीहीकाफीथींउनसेसामनेलड़नेकेलिए।वहदोनोंहाथोंमेंतलवारेंलेकरवॉकरपररण
-
चंडीकीतरहहमलाकिया।इसहमलेसेवॉकरबहुतज़्यादाचोटखायाऔररानीकीवीरताउसेभीअचंभितकरग
ई।

रानी बढ़ी कालपी आई, कर सौ मील निरंतर पार

घोड़ा थककर गिरा भूमि पर, गया स्वर्ग तत्काल सिधार,

यमुना-तट पर अंग्रेज़ों ने फिर खाई रानी से हार,

विजयी रानी आगे चल दी, किया ग्वालियर पर अधिकार,

अंग्रेज़ों के मित्र सिंधिया

ने छोड़ी रजधानी थी।

बुंदेले हरबोलों के मुँह

हमने सुनी कहानी थी।

ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो

झाँसी वाली रानी थी॥

कवयित्रीनेबतायाहैंकिरानीसौमीलघोड़ेपरबैठकरअंग्रेज़ोंकोयमुनातटतकलेआई,
औरअंग्रेज़वहांरानीसेहारगए।परंतुइसीसमय, रानीकेघोड़ेनेवीरगतिप्राप्तकरली,
अर्थातउसकीमृत्युहोगई।इसकेबाद, रानीनेग्वालियरपरभीअपनाअधिकारजमाया,
जहांकेराजासिंधियानेअंग्रेज़ोंकेडरसेउनसेमित्रताकरलीथी,
औरवहांसेअपनीराजधानीकोछोड़करचलेगएथे।

विजय मिली, पर अंग्रेज़ों की फिर सेना घिर आई थी,

अबके जनरल स्मिथ सन्मुख था, उसने मुँह की खाई थी,

काना और मंदरा सखियाँ रानी के सँग आई थीं,

युद्ध क्षेत्र में उन दोनों ने भारी मार मचाई थी,

पर, पीछे ह्यूरोज़ आ गया,

हाय! घिरी अब रानी थी।

बुंदेले हरबोलों के मुँह

हमने सुनी कहानी थी।

ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो

झाँसी वाली रानी थी।।

अबजनरलस्मिथनेसेनाकीकमानसंभाललीथी।रानीलक्ष्मीबाईकेसाथदेनेकेलिएउनकीदोसहेलियाँ,
कानाऔरमंदरा,
युद्धमैदानमेंउतरगईथीं।इनतीनोंनेअपनीवीरताऔरसाहसकेदमपरकईअंग्रेज़सैनिकोंकीलाशेंबिछादीथीं।
परंतुतभीपीछेसेजनरलह्यूरोजनेआकररानीकोघेरलियाथाऔरयहींरानीउसकेशिकंजेमेंफंसगईथीं।

तो भी रानी मार-काटकर चलती बनी सैन्य के पार,

किंतु सामने नाला आया, था वह संकट विषम अपार,

घोड़ा अड़ा, नया घोड़ा था, इतने में आ गए सवार,

रानी एक, शत्रु बहुतेरे, होने लगे वार पर वार,

घायल होकर गिरी सिंहनी

उसे वीर-गति पानी थी।

बुंदेले हरबोलों के मुँह

हमने सुनी कहानी थी।

ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो

झाँसी वाली रानी थी॥

रानीनेसंघर्षकरतेहुएदुश्मनोंकेबीचसेबचतेहुएबाहरआनेकाप्रयासकियाथा,
लेकिनअचानकउनकेसामनेएकचौड़ानालाआगया।उनकेघोड़ेकेनएहोनेकेकारणवहपारनहींकरसका औरवहींठिठकगया।इसमौकेकालाभउठातेहुएशत्रुओंनेअचानकरानीपरअनेकबारहमलाकियाऔरझांसी कीरानीनेअपनीआखिरीसांसतकसंघर्षकियाऔरवीरगतिकोप्राप्तकी।

रानी गई सिधार, चिता अब उसकी दिव्य सवारी थी,

मिला तेज़ से तेज़, तेज़ की वह सच्ची अधिकारी थी,

अभी उम्र कुल तेइस की थी, मनुज नहीं अवतारी थी,

हमको जीवित करने आई बन स्वतंत्रता नारी थी,

दिखा गई पथ, सिखा गई

हमको जो सीख सिखानी थी।

बुंदेले हरबोलों के मुँह

हमने सुनी कहानी थी।

ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो

झाँसी वाली रानी थी॥

रानीअबपरलोकमेंसिधारचुकीथीं,
लेकिनउनकेचेहरेपरसूरजकीतरहचमकथी।उनकीआयुकेवलतेईससालथी,

इतनीछोटीउम्रमेंवहएकअवतारी-
नारीकीतरहहमसभीदेशवासियोंकोजीवनकेसहीमार्गकाप्रदर्शनकरगईथीं।क्रांतिकीचिंगारीकाबीजउ
न्हींनेसहीमायनोंमेंदेशवासियोंकेमनमेंबोयाथा।

जाओ रानी याद रखेंगे हम कृतज्ञ भारतवासी,

यह तेरा बलिदान जगावेगा स्वतंत्रता अविनाशी,

होवे चुप इतिहास, लगे सच्चाई को चाहे फाँसी,

हो मदमाती विजय, मिटा दे गोलों से चाहे झाँसी,

तेरा स्मारक तू ही होगी,

तू ख़ुद अमिट निशानी थी।

बुंदेले हरबोलों के मुँह

हमने सुनी कहानी थी।

ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो

झाँसी वाली रानी थी।।

कविताकेइसपंक्तिमेंबतायागयाहैंकिरानीलक्ष्मीबाईकाबलिदानहमसभीदेशवासियोंकेदिलोंमेंसदैवबसार
हेगा।चाहेवेदुश्मनकेसामरिकजयघोषकेबीचलहराएंयाफिरवेअपनेवीरतापूर्णशस्त्रोंसेझांसीकोभीमिटादें,
लेकिनझांसीकीरानीलक्ष्मीबाईहमारेदिलोदिमागमेंहमेशाजीवितरहेंगी।यदिउनकीकोईस्मारकनबने,
तोभीवेवीरताऔरसाहसकाअद्वितीयउदाहरणबनकरहमारेइतिहासमेंसदैवअमररहेंगी।

प्रश्न अभ्यास

झांसी की रानी किस की मुंहबोली बहन थी?
झांसी की रानी को उनके मुंह बोले भाई प्यार से किस नाम से बुलाते थे?
रानी लक्ष्मीबाई किसके साथ खेलती थी?
सिंहासन कब हिल उठे थे?
प्रस्तुत पंक्तियों में किस समय की बात की जा रही है?
झांसी की रानी की तुलना निम्नलिखित में से किससे कर रहे हैं?

नागार्जुन

नागार्जुनकाजन्मबिहारकेदरभंगाजिलेकेसतलखागाँवमेंसन् 1911
मेंहुआ।उनकामूलनामवैद्यनाथमिश्रथा।आरंभिकशिक्षासंस्कृतपाठशालामेंहुई,
फिरअध्ययनकेलिएवेबनारसऔरकलकत्ता (कोलकाता) गए। 1936 मेंवेश्रीलंकागए,
औरवहींबौद्धधर्ममेंदीक्षितहुए।दोसालप्रवासकेबाद 1938
मेंस्वदेशलौटआए।घुमक्कड़ीऔरअक्खड़स्वभावकेधनीनागार्जुननेअनेकबारसंपूर्णभारतकीयात्राकी।स
न् 1998 मेंउनकादेहांतहोगया।
नागार्जुनकीप्रमुखकाव्यकृतियाँहैं-युगधारा, सतरंगेपंखोंवाली, हज्जार-हजारबाँहोंवाली, तुमनेकहाथा.
पुरानीजूतियोंकाकोरस, आखिरऐसाक्याकहदियामैंने,
मैंमिलटरीकाबूढ़ाघोड़ा।नागार्जुननेकविताकेसाथसाथउपन्यासऔरअन्यगद्यविधाओंमेंभीलेखनकियाहै।
उनकासंपूर्णकृतित्वनागार्जुनरचनावलीकेसातखंडोंमेंप्रकाशितहै।साहित्यिकयोगदानकेलिएउन्हेंअने
कपुरस्कारोंसेसम्मानितकियागयाजिनमेंप्रमुखहैंहिंदीअकादमी, दिल्लीकाशिखरसम्मान,
उत्तरप्रदेशकाभारतभारतीपुरस्कारएवंबिहारकाराजेंद्रप्रसादपुरस्कार।मैंथिलीभाषामेंकविताकेलिएउन्हें
साहित्यअकादेमीपुरस्कारप्रदानकियागया।
राजनैतिकसक्रियताकेकारणउन्हेंअनेकबारजेलजानापड़ा।हिंदीऔरमैंथिलीमेंसमानरूपसेलेखनकरने
वालेनागार्जुननेबांग्लाऔरसंस्कृतमेंभीकविताएँलिखीं।मातृभाषामैंथिलीमेंवे 'यात्री' नामसेप्रतिष्ठितहैं।
लोकजीवनसेगहरासरोकाररखनेवालेनागार्जुनभ्रष्टाचार,
राजनीतिकस्वार्थऔरसमाजकीपतनशीलस्थितियोंकेप्रतिअपनेसाहित्यमेंविशेषसजगरहे।वेव्यंग्यमेंमा
हिरहैं,इसलिएउन्हेंआधुनिककबीरभीकहाजाताहै।छायावादोत्तरदौरकेवेऐसेअकेलेकविहैं,
जिनकीकवितागाँवकीचौपालोंऔरसाहित्यिकदुनियामेंसमानरूपसेलोकप्रियरही।वेवास्तविकअर्थोंमेंज
नकविहैं।सामयिकबोधसेगहराईसेजुड़ेनागार्जुनकीआंदोलनधर्मीकविताओंकोव्यापकलोकप्रियतामिली
।नागार्जुननेछंदोंमेंकाव्यरचनाकीऔरमुक्तछंदमेंभी।

प्रेतकाबयान

"ओ रे प्रेत -"
कडककर बोले नरक के मालिक यमराज
-"सच - सच बतला !
कैसे मरा तू ?
भूख से , अकाल से ?
बुखार कालाजार से ?
पेचिस बदहजमी , प्लेग महामारी से ?
कैसे मरा तू , सच -सच बतला !"
खड़ खड़ खड़ खड़ हड़ हड़ हड़ हड़
काँपा कुछ हाड़ों का मानवीय ढाँचा
नचाकर लंबे चमचों - सा पंचगुरा हाथ
रूखी - पतली किट - किट आवाज़ में
प्रेत ने जवाब दिया -

" महाराज !
सच - सच कहूँगा

झूठ नहीं बोलूँगा
नागरिक हैं हम स्वाधीन भारत के
पूर्णिया जिला है , सूबा बिहार के सिवान पर
थाना धमदाहा ,बस्ती रुपउली
जाति का कायस्थ
उमर कुछ अधिक पचपन साल की
पेशा से प्राइमरी स्कूल का मास्टर था
-"किन्तु भूख या क्षुधा नाम हो जिसका
ऐसी किसी व्याधि का पता नहीं हमको
सावधान महाराज ,
नाम नहीं लीजिएगा
हमारे समक्ष फिर कभी भूख का !!"

यह कविता "ओ रे प्रेत" एक गहरी समाजिक संदेश लेकर आती है और एक अद्वितीय तरीके से मृत्यु के कारणों को उजागर करती है। प्रेत ने यमराज से कहा कि उसे भूख या क्षुधा नहीं हुई थी, जैसा कि उसे व्याधियों से नहीं मरना था। उसने अपने समय को गवाया था अपने प्राइमरी स्कूल के बच्चों को शिक्षा देने में। इसके बदले उसे नागरिकों के सम्मान और गर्व का अनुभव हुआ था। इस प्रकार, वह स्वतंत्र भारत का एक विशेष नागरिक था, जो अपने कर्तव्यों को समझकर उन्हें पूरा किया

निकल गया भाप आवेग का
तदनंतर शांत - स्तंभित स्वर में प्रेत बोला -
"जहाँ तक मेरा अपना सम्बन्ध है
सुनिए महाराज ,
तनिक भी पीर नहीं
दुःख नहीं , दुविधा नहीं
सरलतापूर्वक निकले थे प्राण
सह न सकी आँत जब पेचिश का हमला .."

सुनकर दहाड़
स्वाधीन भारतीय प्राइमरी स्कूल के
भुखमरे स्वाभिमानी सुशिक्षक प्रेत की
रह गए निरूत्तर
महामहिम नर्केश्वर |

इस भाग में प्रेत अपनी मृत्यु के बाद अपने अनुभवों को यमराज के सामने रखता है। उसने बताया कि जब उसे पेचिश का हमला हुआ तो उसने बिना किसी दुःख या दुविधा के अपने प्राण त्याग दिए। यह दिखाता है कि वह अपने अंतिम क्षणों में भी अपने कर्तव्यों में समर्पित था।

उसकी बात सुनकर यमराज ने दहाड़ा, जिससे उसके व्याख्यान से स्पष्ट होता है कि प्रेत की आत्मा में एक स्वाभिमानी और समर्पित शिक्षक की भावना थी। यमराज के निरूत्तर रहने की स्थिति श्रद्धान्जलि का प्रतीक है, जो शिक्षकके उपकरणीय कार्यों और स्वाधीनता कi प्रतीक है।

प्रश्न अभ्यास

1. प्रेत का बयान नामक कवि के लेखक कौन हैं?
2. प्रेत का बयान कविता का प्रतिपाद्य क्या है?
3. कविता का मुख्य उद्देश्य क्या हैं?
4. कविता के मुख्य तत्व क्या हैं?
5. कविता की विशेषताएं क्या हैं?

शिरीष के फूल -हजारी प्रसाद द्विवेदी

हजारीप्रसादद्विवेदीकाजन्मगाँवआरतदुबेकाछपरा, जिलाबलिया (उ.प्र.) मेंहुआथा।संस्कृतमहाविद्यालय, काशीसेशास्त्रीपरीक्षाउत्तीर्णकरनेकेबादउन्होंने 1930
मेंकाशीहिंदूविश्वविद्यालयसेज्योतिषाचार्यकीउपाधिप्राप्तकी।
इसकेबादवेशांतिनिकेतनचलेगए। 1940-50 तकद्विवेदीजीहिंदीभवन,
शांतिनिकेतनकेनिदेशकरहे।वहाँउन्हेंगुरुदेवरवींद्रनाथटैगोरऔरआचार्यक्षितिमोहनसेनकासान्निध्यप्राप्तहुआ।सन् 1950 मेंवेवापसवाराणसीआएऔरकाशीहिंदूविश्वविद्यालयमेंहिंदीविभागकेअध्यक्षबने। 1952-53 मेंवेकाशीनागरीप्रचारिणीसभाकेअध्यक्षथे। 1955
मेंवेप्रथमराजभाषाआयोगकेसदस्यराष्ट्रपतिकेनामिनीनियुक्तकिएगए। 1960-67
तकपंजाबविश्वविद्यालयचंडीगढ़मेंहिंदीविभागाध्यक्षकापदग्रहणकिया। 1967
मेंकाशीहिंदूविश्वविद्यालयमेंरेक्टरनियुक्तहुए।यहाँसेअवकाशग्रहणकरनेपरवेभारतसरकारकीहिंदीविषयकअनेकयोजनाओंसेसंबद्धरहे।जीवनकेअंतिमदिनोंमेंउत्तरप्रदेशहिंदीसंस्थानकेकार्यकारीअध्यक्षथे।
आलोकपर्वपुस्तकपरउन्हेंसाहित्यअकादमीपुरस्कारदियागया।लखनऊविश्वविद्यालयनेउन्हेंडी.
लिटकीमानदउपाधिदीऔरभारतसरकारनेउन्हेंपद्मभूषणअलंकरणसेविभूषितकिया।
द्विवेदीजीकाअध्ययनक्षेत्रबहुतव्यापकथा।संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, बाँग्लाआदिभाषाओंएवंइतिहास, दर्शन, संस्कृति,
धर्मआदिविषयोंमेंउनकीविशेषगतिथी।इसीकारणउनकीरचनाओंमेंभारतीयसंस्कृतिकीगहरीपैठऔरविषयवैविध्यकेदर्शनहोतेहैं।वेपरंपराकेसाथआधुनिकप्रगतिशीलमूल्योंकेसमन्वयमेंविश्वासकरतेथे।
द्विवेदीजीकीभाषासरलऔरप्रांजलहै।व्यक्तित्वव्यंजकताऔरआत्मपरकताउनकीशैलीकीविशेषताहै।व्यंग्यशैलीकेप्रयोगनेउनकेनिबंधोंपरपांडित्यकेबोझकोहावीनहींहोनेदियाहै।भाषा-
शैलीकीदृष्टिसेउन्होंनेहिंदीकीगद्यशैलीकोएकनयारूपदिया।
उनकीमहत्त्वपूर्णरचनाएँहैंअशोककेफूल, विचारऔरवितर्क, कल्पलता, कुटज, आलोकपर्व (निबंध-संकलन), चारूचंद्रलेख, बाणभट्टकीआत्मकथा, पुनर्नवा, अनामदासकापोथा (उपन्यास), सूर-साहित्य, कबीर, हिंदीसाहित्यकीभूमिका, कालिदासकीलालित्य-योजना
(आलोचनात्मकग्रंथ)।उनकीसभीरचनाएँहजारीप्रसादद्विवेदीग्रंथावली (केग्यारहखंड) मेंसंकलितहैं।

“शिरीष के फूल” लेखक हजारी प्रसाद द्विवेदी जी द्वारा लिखा गया एक निबंध है। इस निबंध में लेखक ने शिरीष के फूल के माध्यम से संदेश दिया है कि जिस तरह शिरीष के फूल आँधी, लू, भयंकर गर्मी

आदि विपरीत परिस्थितियों का सामना करते हुए भी अपनी कोमलता व सुंदरता को बनाए रहता है, उसी तरह हमें भी अपने जीवन की विपरीत परिस्थितियों में अपने धैर्य व संयम को बनाए रखते हुए अपने जीवन में आगे बढ़ते रहना चाहिए। शिरीष का फूल हमें जीवन में लगातार संघर्ष करने की प्रेरणा देता हैं।

लेखक इस निबंध को जेठ की तपती गर्मी में शिरीष के पेड़ों के एक समूह के बीच बैठ कर लिख रहे हैं जो ऊपर से नीचे तक फूलों से लदे हैं। वैसे तो जेठ की भयंकर गर्मी में बहुत कम फूल ही खिलने की हिम्मत कर पाते हैं। इन फूलों में अमलतास भी शामिल है। किन्तु इसकी तुलना शिरीष के फूलों से है की जा सकती। क्योंकि वह केवल 15 से 20 दिनों के लिए ही खिलता है। जैसे बसंत ऋतू में पलाश का फूल। हालांकि कबीरदास जी को 10-15 दिन के लिए खिलने वाले फूल पसंद नहीं है। परन्तु शिरीष के फूल लम्बे समय तक खिले रहते हैं। वो बसंत के शुरुआत में खिलना प्रारंभ होते हैं और आषाढ़ तक खिले रहते हैं। लेखक ने शिरीष को कालजयी अवधूत कहा है। "कालजयी" अर्थात जिसने काल पर विजय प्राप्त कर ली हो और "अवधूत" यानि एक ऐसा सन्यासी जिसे सुख-दुख, अच्छे-बुरे से कोई फर्क न पड़ता हो। जिसके भाव हर परिस्थिति में एक समान रहते हों। यही सब लक्षण शिरीष के फूल में भी हैं जिस कारण लेखक ने शिरीष के फूल को कालजयी अवधूत कहा है। क्योंकि शिरीष का फूल भयंकर गरमी, उमस, लू आदि के बीच सरस रहता है। वसंत में वह लहक उठता है तथा भादों मास तक फलता-फूलता रहता है। उस पर ना भयंकर गर्मी का असर दिखाई देता है और ना ही तेज बारिश का कोई प्रभाव। वह काल व समय को जीतकर एक सामान लहलहाता रहता है। यह हमें विषम परिस्थितयों में भी प्रसन्नता व मस्ती के साथ जीवन जीने की कला सिखाता हैं।

शिरीष के वृक्ष बड़े और छायादार होते हैं और पुराने समय में इन वृक्षों को मंगल कारक मानकर इन्हें बाग़ -बगीचों में लगाया जाता था। वात्स्यायन कहते हैं कि बगीचे में घने व छायादार वृक्षों और बकुल के पेड़ों में ही झूला लगाना चाहिए। लेकिन लेखक मानते हैं कि शिरीष के पेड़ भी झूला झूलने के लिए प्रयोग में लाए जा सकते है। भले ही शिरीष के पेड़ की डालें कुछ कमजोर होती हैं। इसीलिए उसे झूला झूलने योग्य नही समझा जाता। परन्तु लेखक कहते हैं कि शिरीष के पेड़ भी झूला झूलने के लिए प्रयोग में किए जा सकते है क्योंकि झूला झूलने वालों अर्थात बच्चे व् किशोरियों का वजन भी तो ज़्यादा नहीं होता।

शिरीष के फूल को संस्कृत साहित्य में बहुत ही कोमल माना गया है। यहाँ तक की कालिदास तो यह कह गए हैं कि शिरीष के फूल केवल भौंरों के पैरों का दबाव ही सहन कर सकते हैं पक्षियों के पैरों का दबाव वे सहन नहीं कर सकते। लेखक यहाँ महाकवि कालिदास की इस बात का न तो विरोद्ध करना चाहता है और न ही लेखक की कुछ ऐसी इच्छा भी है। परन्तु लेखक कहता है कि महाकवि कालिदास की इस बात से दूसरे कवियों ने यह समझ लिया कि शिरीष के पेड़ का सब कुछ ही कोमल है जबकि इसके फल बहुत मजबूत होते हैं। इसके फल इतनी मजबूती से अपने स्थान पर या डालियों पर चिपके रहते हैं कि नए फलों के आने पर भी वो अपना स्थान आसानी से नहीं छोड़ते हैं। वो अपना स्थान तभी छोड़ते हैं जब नए पत्तों व् फूलों द्वारा उन्हें जबरदस्ती धकेला जाता है। नहीं तो सूखकर भी वो डालियों में ही खड़खड़ाते रहते हैं। इन पुराने फलों को देखकर लेखक को उन नेताओं की याद आ जाती है जो बदलते समय की परस्थितियों को नहीं पहचानते और अपने पद को तब तक नहीं छोड़ते, जब तक उन्हें नयी पीढ़ी के नेता जबरदस्ती धक्का मारकर पद छोड़ने को विवश ना कर दें।

यहाँ कहते हैं कि पुरानी पीढ़ी को समय रहते ही अपने अधिकार करने के लोभ को छोड़ देना चाहिए और नई पीढ़ी के लिए स्थान बनाना चाहिए। लेखक मानते हैं कि वृद्धावस्था और मृत्यु, इस जगत के सत्य है और शिरीष के फलों को भी यह समझना जाना चाहिए कि जब वह फूला है तो उसका झडना भी निश्चित है। परंतु सुनता कोई नहीं। मृत्यु के देवता निरंतर कोड़े चला रहे हैं उसमें जर्जर व् कमजोर समाप्त हो जाते हैं। और जिसमें प्राणकंण थोड़ा भी विपरीत है वे बच जाते हैं। जीवनधारा व सब कुछ अपने में विलीन करने वाले समय के बीच संघर्ष चालू है। लेखक शिरीष के फलों को मुर्ख मानते हुए कहते हैं कि वे समझते हैं कि एक ही जगह पर बिना हिले-डुले रहने से मृत्यु के देवता से बचा जा सकता है जबकि हिलने -डुलने वाले कुछ समय के लिए तो बच सकते हैं पर झड़ते ही मृत्यु निश्चित है।

प्रश्न अभ्यास

1. **लेखकनेशिरीषकेफूलको "कालजयीअवधूत (सन्यासी)" कीतरहक्योंमानाहै?**

2. **द्विवेदीजीनेशिरीषकेमाध्यमसेकोलाहलवसंघर्षसेभरेजीवनमेंअविचलरहकरजिन्दारहने कीसीखदीहै।स्पष्टकीजिए?**

3. **शिरीषके फूलनिबंधकेलेखककौनहैंऔरवेइसनिबंधकेमाध्यमसेक्यासन्देशदेनाचाहतेहैं?**

4. **शिरीषकेपेड़ोंकीडालोंकेकमजोरहोनेपरभीलेखकक्योंमानतेहैंकिउनपरझूलाबनायाजास कताहै?**

5. **शिरीषकेपुरानेफलोंसेलेखककोकिनकीयादआतीहै?**

विजयदानदेथा

राजस्थानीलोकसंस्कृतिकीप्रमुखसरक्षकसंस्थारूपायनसंस्थानबोरून्दा (जोधपुर) केप्रमुखसचिवश्रीविजयदानदेथा (बिज्जी) काजन्मश्रीमतिसिरेकुंवरकीकोखसे 01 सितम्बर 1926 कोजोधपुरजिलेकेबोरुंदागाँवमेहुआ।
आपकेपिताकानामश्रीसबलदानदेथाथा।आपकेपिताकासाथज्यादानहीरहपायाऔर 4 सालकीउम्रमेंहीउनकास्वर्गवासहोगया।बिज्जीकाविवाहबीकानेरजिलेकेदेशनोकगाँवमेंश्रीरामदयालकी सुपुत्रीश्रीमतिशायरकुँवरकेसाथहुआ
बिज्जीकीकर्मभूमिराजस्थानस्वयंपैतृकगाँवबोरुंदाहीरही।प्रारम्भमें 1953 से 1955 तकबिज्जीनेहिन्दीमासिक 'प्रेरणा' कासम्पादनकिया।तत्पश्चातहिन्दीत्रैमासिकरूपम, राजस्थानीशोधपत्रिकापरम्परा, लोकगीत, गोराहटजा, राजस्थानकेप्रचलितप्रेमाख्यानकाविवेचन, जैठवैरासोरठावऔरकोमलकोठारीकेसाथसंयुक्तरूपसेवाणीहऔरलोकसंस्कृतिकासम्पादनकिया।विज यदानदेथाकीलिखीकहानियोंपरदोदर्जनसेज्यादाफिल्मेंबनचुकीहैं, जिनमेंमणिकौलद्वारानिर्देशित 'दुविधा' परअनेकराष्ट्रीयऔरअन्तर्राष्ट्रीयपुरस्कारमिलचुकेहैं।इसकेअलावावर्ष 1986 मेंउनकीकथापरचर्चितफिल्मनिर्माता-निर्देशकप्रकाशझाद्वारानिर्देशितफिल्म "परिणीति" काफीप्रशंसनीयरहीराजस्थानसाहित्यअकादमी 1972-73

मेंउन्हेंविशिष्टसाहित्यकारकेरूपमेंसम्मानितकरचुकीहै।रंगकर्मीहबीबतनवीरनेविजयदानदेथाकीलोक प्रियकहानी 'चरणदासचोर'
कोनाटककास्वरूपप्रदानकियाथाऔरश्यामबेनेगलनेइसपरएकफिल्मभीबनाईथी।दुविधापरअमोलपालेकरद्वाराबनाईगईफिल्म 'पहेली' कोऑस्करपुरस्कारहेतुनामांकितकियागया।
राजस्थानीभाषामेकरीब 800 सेअधिकलघुकथाएंलिखनेवालेविजयदानदेथाकीकृतियोंकाहिंदी, अंग्रेजीसमेतविभिन्नभाषाओंमें,
अनुवादकियागया।विजयदानदेथानेकविताएँभीलिखींऔरउपन्यासभी।राजस्थानीभाषामे 14 खण्डोंमेंप्रकाशित "बातारीफुलवारी"
केदसवेंखण्डकोभारतीयराष्ट्रीयसाहित्यअकादमीद्वारापुरस्कृतभीकियागयाहैं, जोकिराजस्थानीकृतिपरपहलापुरुस्कारहै। 2007
मेंपद्मश्रीपुरस्कारसेसम्मानितविजयदानदेथाकोइसकेअतिरिक्तराजस्थानरत्नअंलंकरणसेसम्मानित कियागया।यहसम्मानप्राप्तकरनेवालेवेप्रथमराजस्थानीव्यक्तिहै।उन्हेंसाहित्यअकादमीपुरस्कार, मरूधरापुरस्कार, भारतीयभाषा 2 परिषदपुरस्कार, चूड़ामणिपुरस्कारभीप्रदानकिएगए 87 वर्षकीउम्रमें 10 नवंबर, 2013 रविवारकेदिनदिलकादौरापड़नेसेबोरुंदागांव (जोधपुर)
मेंआपकानिधनहोगयाजोसमाजकेऔरसाहित्यजगतकेलिएअपूरणीयक्षतिहै।

उजालेकेमुसाहिब

कहरेचकवाबात।कटेज्योंरात।घरबीतीयापरबीती।घरबीतीतोघर-घरजाने।अपनी-अपनीसबकोईताने।परबीतीमेंपरमानन्द।सुनतेहीकटजाएफन्द।जैसीबुद्धिवैसीबोली।किसनेमापी, किसनेतौली? जैसीमेहनत,
वैसअनाज।खायेमुँहऔरऑखियनमेंलाज।तोअमरअवधूतसाँईसबकोसुमतिदेकिएकथाअनामराजा।जिस कावहीरागऔरवहीबाजा।उसकीसमझकाबोझअतिशयभारी।एकपलडेमेंराजातोदूजेमेंरैयतसारी।बिनबुला येक्योंकरमरता! वहतोकरताज्योंहीकरता।जिसकेदरबारमेंचुनिन्दानौरतन।मंशामुताबिकसारेजतन-ही-जतन।अखूटहीरे-मोतीऔरअखूटखजाना।जैसाबढ़ियारूप,
वैसाहीबाना।कहूँझूठफिरभीसचमाने।कहूँसाँचतोउसेभीझूठजानो।बताऊँरात,
फिरभीदिनमानो।कहूँदिनतोउसेभीरातजानो।

उसराजाकीबुद्धिलीकतोङकरबहतीथीऔरदरबारकेनौरत्नोंकीअक्लहरदमछलकतीरहतीथी।फिरभीराजाकेपासहमेशाऋषि, मुनि, औघङ, महात्मावसन्त-
ज्ञानियोंकाताँतालगारहता।एकजाताऔरइक्कीसआते।औरउनकेप्रवचन-दर-प्रवचनऐसीबौछारहोतीकिराजाऔरदरबारियोंकीअक्लकापानीसवाबाँसऊँचाचढ़जाता।फिरतोवहकगार-किनारेतोङताकलकलकरतासारेराज्यमेंहवाकीगतिसेफैलजाता।राजाकाजैसा-तैसाभीआदेशमिलतातोरियासतकीतमामप्रजाउसमुताबिककाममेंजूझपङती।नकोईशंकानकोईविवाद। निरीहप्रजातोराजाकेहाथ-पाँव, वहज्योंसोचे, त्योंडोले।नकोईबूझे, नकोईबोले।

राजाऔररैयतकाअहोभाग्यकिएकबारसाधु-सन्तोंकासिरमौर,
ज्ञानियोंकागुरुएकतीर्थंकरऐसाप्रकटहुआकिराजासहिततमामदरबारियोंकीबुद्धिचकरागयी।मानोप्रत्यक्षपरमेश्वरहीअवतरितहुआ।जिसनेभीसुना,
सबकामछोङकरउसकाप्रवचनसुननेकेलिएदरबारमेंहाजिरहुआ।सबकाजीवनएकसाथहीसार्थकहोजाएगा।

एकहीप्राणऔरएकहीजत्थेकेसाँचेमेंढलीभीड़महात्माकेदर्शनकीप्रतीक्षामेंअविचलितखड़ीथीकिअचान कराजाकेसाथतीर्थंकरपधारतेदीखे।आँख-
आँखकीज्योतिमेंमहात्माकीछविउतरगयी।हवाऔरउजालेकेसाँचेमेंढलीपवित्रकाया, जैसेहैऔरनहींभीहै।कुदरतकासाम्प्रतसृजनहारतोमानोआजहीअवतीर्णहुआहो।प्रवचनसुनातेहीकलुषित कायाकामलधुपजाएगा।

प्रत्येकबन्देकीयाचकदीठमहात्माकेचरणोंमेंलोटनेलगी।आशीर्वचनकेउपरान्तमहात्माकेहोंठखुले।जैसे स्वयंकुदरतकीअपनेमुँहसेबखानसुनारहीहो।प्रजाकेकानोंमेंअमृत-
साघुलनेलगा।बिजलीकीलहरोंकेउनमानमहात्माकेश्रीमुखसेशब्दोंकीआभानिःसृतहोरहीथी, 'काले-बहेरेअँधियारेकोमिटाकरतुम्हेंसम्पूर्णउजियाराजगमगानाहै।केवलचिरन्तनप्रकाशसेहीमनुष्य-जीवनसार्थकहोगा।अँधियारेमेंऔंधीसूझतीहै।उजियारेमेंसब-
कुछस्पष्टनजरआताहै।निर्धूमआलोकआत्माकेसम्मुखझिलमिलानेलगताहै।जिसकीजोतकेदर्शननिता न्तअन्धामानुषभीकरसकताहै।अँधियारेमेंजीनानिपटअकारथहै।सम्यक्उजालेमेंमरनाभीश्रेयस्करहै।

इसलिएअँधियारेकोहरघड़ीहरपलमिटानेकाप्रयासकरोऔरअनन्तउजियारेकीअखण्डजोतजलाओ।अधि कभागवतबाँचनेमेंकोईसारनहीं।इसबखानकेबहानेतुम्हेंसूरजकीयहदिव्यकिरणसौंपरहाहूँ।इसकेचम त्कारसेअभेद्यअँधियारेकोमिटानेकाप्रयासकरना।तभीतुम्हारेअन्तस्काअकलुषितउजियारेसेसाक्षात्कार होगा।परब्रह्मकीअनुभूतिहोगी।अँधियारानरककीअमिटकालिमाहैऔरअनिन्द्यउजियारास्वर्गकाप्रत्यक्षरू प।जबतकसाँसहैमेरीबातकोनहींभूलेतोसबकाकल्याणहोगा।'

प्रवचनकेउपरान्तराजाऔरसमस्तदरबारियोंनेहाथजोड़करबेहदनिहोरेकियेपरमहात्मानेप्रसादग्रहणक रनेकीहामीनहींभरीसोनहींभरी।बार-बारएकहीउत्तरदेतेकिराज्यकाअँधियारामिटनेपरवेबिन-
बुलायेसरकेबलचलेआएँगे।तबतकवेइसधरतीपरपानीकीबूँदतकनहींचखेंगे।वेजिसतरहअवरोहितहुए, उसीतरहसपनेकीनाईअन्तर्धानहोगये।

उसराजाकोतोबसकोईबहानाभरमिलनाचाहिएथा,
फिरतोउसकेदिमागमेंजुगनूझिलमिलानेलगते।बरसोंकेबादऐसासुनहरासुयोगमिलातोवहगुरमुखीराजा दूसरेदिनहीराजकेनौरत्नवदरबारियोंकेसाथबैठकरअन्धकारकोमिटानेकीखातिरआमादाहोगया।सिंहा सन,
मुकटऔरखजानाउसीदिनसार्थकहोंगेजबचिरन्तनप्रकाशकीबधाईसुनकरमहात्मासोनेकेथालमेंप्रसाद ग्रहणकरेेंगे।परराजातोराजाहीहोताहै।पूरेराज्यकाएकछत्रअधिपति।बुद्धिकेबिनाइतनीबड़ीरियासतए कघड़ीभीनहींचलसकती।शरीरकीताकततोबुद्धिकेपीछेचलतीहै।वरनाशेर, सूअर,
हाथीयाभेड़ियाहीमनुष्योंकाराजाहोता।

घड़ीभरतकराजा,
दीवानऔरनौरत्नसभीचुपचापविचारकरतेरहेकिउनकेराज्यसेअँधेरेकोहमेशाकेलिएकैसेखदेड़ाजाए?
दुनियामेंऐसाकौन-सामसलाहैजोगहराईसेसोचनेपरनहींसुलझे!
अकस्मात्राजाकीछलकतीबुद्धिमेंबिजलीकेउनमानएकविचारकौंधा।गहरेचिन्तनकीमुद्राबनाकरउसनेदी वानसेपूछा, 'क्यूँदीवानजी, पिछलेसाल............नहींनहीं,
तीनसालपहलेराजमहलकातहखानाबाढ़केकारणपूराभरगयातोउलीच-
उलीचकरसारापानीबाहरउछालाथाकिनहीं?'
'हाँ, हाँउछालाथाअन्दाता।'

'मुझेआजकीतरहयादहै।तुमसबलोगअच्छीतरहजानतेहोकिमैंयादरखनेवालीबातकभीभूलतानहीं……।'
दीवानसिरझुकाकरबीचमेंबोला, 'हुजूरकेभूलनेपरतोसर्वत्रप्रलयहोजाएगा।'

'मैंतोप्रवचनकेदौरानहीमहात्माजीकेमनकीबातभाँपगयाथा।'
गुलाबीअधरोंपरगुमानकीमुस्कराहटछितरातेराजानेकहा, 'अँधेरामिटानेकीआधी-
दूधीतरकीबतोउसीसमयसोचलीथी।मुझेपक्काभरोसाहैंकितहखानेकेपानीकीतरहअँधेराभीउलीचनेपर
समाप्तहोजाएगा।क्यूँ, उलीचनेकेबादवहपानीतहखानेमेंवापसतोनहींआया?'
'नागरीब-परवर, ना! क्यामजालकिएकबूँदभीवापसआयीहो!'
दीवानअपनीचतुराईकेप्रतिपूर्णतयाआश्वस्तथा।

राजानेनाभितकगहरीहामीभरी, 'हुँ…….!
तबतोयहबातदिनकेउजालेकीतरहसाफहैंकिअँधेराभीउलीचनेपरवापसनहींआएगा।'
'हाँगरीब-नवाज!' दीवाननेमिलती-मारतेकहा, 'हमेशा-हमेशाकेलिएइसकाकालामुँहहोजाएगा।'
एकरत्ननेगरदनखुजातेआशंकाप्रकटकी, 'पानीतोउलीचकरतहखानेसेबाहरउछालदिया,
मगरअँधेरेकोकहाँउछालेंगे? वहतोचारोंदिशाओंमेंछायारहताहै।'
'सवेरेसूरजउगनेपरअँधेराअपनाठिकानाछोङकरकहीं-न-कहींतोजाताहीहै।'
दूसरेरत्ननेउसकाखण्डनकरतेकहा, 'जरा……..सोच-
विचारकरजवाबदोकिवहअपनीजगहछोङताहैंकिनहीं?'
'हाँ, जगहछोङनेपरहीतोओझलहोताहै।' पहलेवालारत्नमुँहउतारकरबोला।
करनेकाजिम्मातुम्हारा! अलबत्तातुम्हारेसाथबैठनेसेमुझेदूरकीसूझतीहै।'

हुजूरतोआज्ञाफरमातेरहें, हमकुछभीकरनेकोतैयारहैं।' एकरत्ननेहाथजोङतेहुएकहा।

'दीवानजी, सारेराज्यमेंघर-
घरडोंडीपिटवादोकिइसीअमावसकेशुभमुहूर्तमेंदिनढलतेहीहरव्यक्तिअँधेराउलीचनेलगेसोतबतकनहींरु
के, जबतकउसकापूरासफायानहोजाए।' राजानेधमकातेकहा,
'किसीनेभीइसकाममेंढिलाईबरतीतोउसकीआँतेंचील-
कौओंकोफिंकवादूँगा।महात्माजीकोजितनीजल्दीभोजनकाआमन्त्रणदूँ, तभीमुझेचैनमिलेगा।'
एकरत्ननेवाजिबसुझावदिया, 'हुजूर! अँधेराउलीचनेकेलिएयथायोग्यठाँव-बासनभीतोहोनेचाहिए।'
'वहीतोबतारहाहूँ।ज्यादाउतावलीठीकनहीं।' राजानेउसेझिङकतेकहा,
'तुमसमझतेहोकिउलीचनेकेबासनोंकामुझेध्याननहींहै?'
दीवाननेफिरवहीरटी-रटायीउक्तिचुपङतेकहा,
'अन्नदाताकाध्यानचूकनेपरतोसूरजकाउगनाहीबन्दहोजाएगा।'
राजाअपनागुस्साभूलकरहिदायतकेलहजेमेंबोला, 'जिसकेघरमेंजोबासनहो,
उसीसेउलीचनेकाकामकरे।'
ज्यों-ज्योंयादआतेरहेसभीरत्नआपसमेंमिलजुलकरबरतन-बासनोंकेनामबतानेलगे, 'तगारी, हाँडी,
परात, कटोरा-कटोरी, घडा, मटकी, चरी, टोकरी, मूण…….।'

एकबुद्धिमानरत्ननेतुरन्तबीचमेंशंकाकी, 'मूणतोकाफीभारीहोतीहै, आसानीसेउठेगीनहीं।'
राजानेखुलासाकरतेपूछा, 'मूणभरीकिखाली?'
'भरीहुईगरीब-नवाज!'
'ना, तुमयहींपरभारीभूलकरगये।'
अभिमानसेछितरीमुस्कराहटकोदबाकरराजानेगम्भीरसुरमेंसमझातेकहा,
'अँधेरेसेभरीहोनेपरभीमूणमेंवजनतोरत्तीभरभीनहींबढ़ेगा।क्योंकिअँधेरानजरतोआताहै,
परउसकाठोसआकारनहींहोता।फिरतोहाथीकीछायाहाथीजितनीहीभारीहोनीचाहिए?'
दीवानकेसाथ-साथसभीरत्नोंनेजयघोषकिया, 'खम्मा-घणी, खम्मा-घणी! भला,
अन्दाताकेअलावाइतनीगहरीबातेंऔरकिसेसूझसकतीहैं?'

राजाकेचिर-अभ्यस्तकानोंकीखातिरअबकैसीभीखुशामदकाकोईस्वादनहींरहगयाथा।सुनी-
अनसुनीकरकेझुँझलातेकहा, 'यहाँबैठे-बैठेखम्मा-
घणीचिल्लानेसेकुछपारनहींपडेगा।जितनीजल्दीहोसके,
सारेराज्यमेंडोंडीपिटवानेकाइन्तजामकरो।जिसघरकेआस-पासअंधेरानजरआएगा,
उसेभरपूरदण्डमिलेगा।'

दीवाननेझुककरबन्दगीकी, 'तीसरेदिनहीघर-घरखबरनहोतोदीवानगिरीछोडूँगा!'
परउसेदीवानगिरीछोडनेकीकभीजरूरतनहींपडी।बल्किसमय-समयपरपुरस्कार-
सिरोपावभीमिलतेरहे।राजाकेआदेशकीअनुपालनामेंवहबेहदपारंगतथा।औरउधरडोंडीकाफरमानसुनने
केबादप्रजानेभीकतईढिलाईनहींबरती।अमावसकीसाँझघिरतेहीजिसकेहाथजोबासनपडाउसीसेअँधियारा
उलीचनेमेंमुस्तैदहोगया।

यहाँतकआते-आतेचकवाकिसीभीसूरतमेंअपनीहँसीरोकनहींसका।खिल-
खिलहँसीकेसाथउसकीचोंचसेचिनगारियाँझडनेलगीं।हँसते-हँसतेहीकहनेलगा,
'अबउसराज्यकेसौभाग्यकीक्यासीमा! आठपहरबत्तीसघडीफकतप्रकाश-ही-
प्रकाशजगमगाएगा।इतनेबरसयहछोटी-सीबातभीकिसीकीसमझमेंक्योंनहींआयी?
दुगुनाकामनिपटेगा।दीयाजलानेकीआफतमिटजाएगी।तेलकाखर्चबचेगासोनफेमें।मगरचोरोंकेमनमेंस
नसनीदौडगयी।अँधेरामिटगयातोउन्हेंजबरदस्तहानिपहुँचेगीपरराजाकेआदेशकीभलाकौनअवज्ञाकरस
कताहै? चोरभीप्रजाकेसाथअँधेराउलीचनेमेंजुटगये।'

राजमहलकेइर्द-गिर्दहो-
हल्लेकातूफानमचगया।आधीरातढलनेपरराजाकोनींदसतानेलगीतोदीवानकोहिदायतदेतेबोला,
'अबतोनींदकेमारेमेराजगनामुश्किलहै,
वरनासारीरातयहनजारादेखता।मगरतुमपूरेचौकसरहना।ऐसानहोकिमेरेजातेहीलोगढीलेपडजाएँ!'
'नहींअन्दाता, सपनेमेंभीकोईऐसीगुस्ताखीनहींकरेगा।आपकिसीबातकीचिन्तानकरें।'
'परअँधेरेकासफायाहोतेहीमुझेबेधडकजगादेना, समझे!'
दीवाननेकोरनिशकरतेहुएअतिशयआदरकेसाथहामीभरीतोराजानिश्चिन्तहोकररंग-
महलमेंसोनेकेलिएदासियोंकेसाथरवानाहोगया।औरघोडेपरचढ़ादीवानसारीरातप्रजाकोजोशदिलातारहा
किवहपलभरकेलिएभीविश्रामनकरे।ऐसाशानदारकामदुनियाकेकिसीराजानेआजदिनतकनहींकिया।य
हबाततोअन्दाताकोसूझीजैसेहीसूझी।बुद्धिकेसागरअपनेहुजूरकीभलाकौनबराबरीकरसकताहै?
दूसरेसभीराजा-महाराजाइनकेसामनेछछूँदरहैं, छछूँदर!

अँधेराउलीचते-उलीचतेप्रजाकीकमरटूटनेलगी।हाङ-हाङटीसनेलगा।बाँहेंफटनेलगीं।बच्चे, बूढ़े, जवानऔरमहिलाएँ-कोईभीपीछेनहींरहा।बङाकामतोसबकेजुटनेपरहीसम्भवहोताहै।

सवेरेकीमंगलवेलाजबनगरवासियोंकोयहआशाबँधीकिउलीचते-उलीचतेआखिरअँधेराकाफीकमपङनेलगाहैतोउनकेजोशकोबङासहारामिला।वहचौगुनेउत्साहसेउसकाममेंतल्लीनहोगये।

सचमुच,
राजाकीबाततोएकदमसहीनिकली।ऐसेराजाकीरियतहोनेसेबङाअहोभाग्यऔरक्याहोसकताहै?....देखते-
देखतेअँधेरातोबिलकुलसमाप्तहोगया।घोङेपरसवारदीवानकीखुशीकापारनहींथा।चरवादारकोघोङेकीलगामथमाकरवहतोसीधारंग-महलपहुँचा।बाहरखङे-खङेहीजोरसेफरियादकी, 'अन्दाता, अँधेरातोएकदमनष्टहोगया।पहाङोंकेआर-पारदिखेजैसाप्रकाशहुआहुजूर! ईश्वरकीतरहआपकीटेकभीरहगयी।'

हुजूरतोनींदमेंसोते-सोतेहीचिरन्तनप्रकाशकेसपनेदेखरहेथे।राजाअपनेहठपरअङाथाऔरमहात्माअपनेसिद्धान्तपरडटेहुएथे किसोनेकेबाजोटऔरथालकोअदेरपरेहटाले, वरनावेभूखेहीलौटजाएँगे।इसतकरारकेबीचबधाईकीगुहारसुनीतोवहसोनेकेपलंगसेतत्कालउठबैठा।उन्मादकेआवेशमेंउछलते-फाँदतेबाहरआया।चारोंओरगरदनफुलाकरदेखा।सर्वत्रउजाला-ही-उजाला! ऐसातेजप्रकाशतोकभीनजरनहींआया।समस्तदरबारियोंकेबीचराजाभीबावरेकीतरहनाचनेलगा।सारेराज्यमेंखुशीकासमन्दरहिलोरेंभरनेलगा-दिप-दिप!

फटाफटदरबारजुङा।राजानेदीवान, नौरत्नोंऔरसबदरबारियोंसेबार-बारपूछाकिवेअच्छीतरहसेछानबीनकरकेबताएँकिआजवालेप्रकाशवपहलेवालेप्रकाशमेंक्याअन्तरहै?

सभीसत्यवादियोंनेसमवेतसुरमेंकहाकिआजवालाप्रकाशबहुत-बहुतश्रेष्ठहै।यहीअसलीऔरसच्चाप्रकाशहै।पहलेवालाप्रकाशतोकुछधुँधला-धुँधलाथा।ऐसीअपूर्वनिष्ठाऔरअथकमेहनतसेउलीचनेकेबादउजियारेकीचमकमेंक्याखामी! पहलेवालेप्रकाशपरछिपेहुएअँधियारेकीछायापङतीथी।परआजकेप्रकाशमेंतोकुदरतकारूपहीबदलगया। मानोकुदरतप्रमूदितहोकरमुस्करारहीहो।
आनन्दमेंसराबोरराजानेखूबदान-पुण्यकिया।फिरचतुरदीवानकोआदेशदियाकिजहाँ-कहींभीहोंउनपहुँचेहुएमहात्माकोलानेकेलिएसौघोङेदौङाएँ।उनकेचरणपखालनेपरहीउसकाजीवनसार्थकहोगा।

एकरत्ननेधीमेसेकहा, 'हुजूर, दो-तीनदिनतोइसप्रकाशकीजाँच-पङतालकरलेते.....!''
'कैसीबहकी-बहकीबातेंकररहेहो?' राजाबीचमेंटोककरबोला,
'कुछभीजाँचकरनेकीजरूरतनहीं।अबतोइसकेपुरखेभीअपनेराज्यकीओरमुँहनहींकरसकते।तुम्हेंइसनयेप्रकाशकीकुछविशेषतानजरनहींआयी?'
'नजरतोआयीअन्दाता.....लेकिन.....।'
दीवाननेहँसकरटालतेकहा, 'अबलेकिन-वेकिनकाकोईलफङानहीं।'
'फिरभीएकदिनतोऔर.....।'
'दिन?' दूसरेरत्ननेउसकीबातकाविरोधकरतेकहा,

'रातहोनेपरहीदिनकाहिसाबरहताहै।अबतोआठोंपहरफकतउजाला-ही-
उजालाजगमगाएगा।अबनतोरातहोगीऔरनदिन!'

इसबातकाध्यानतोराजाकोभीनहींथा।समझदाररत्नकीरायसुनतेहीराजानेजोशियोंकोखरीहिदायतदी
किवेघड़ियोंकीगिनतीकेहिसाबसेवार-तिथिकालेखा-जोखारखें, वरनाबहुतझमेलापड़जाएगा!
किन्तुजोशियोंकासौभाग्यकिझमेलापड़नेकीनौबतहीनहींआयी।उजालेकीखुशियाँमनाते-
मनातेदिनतोचटपटबीतगया।हमेशाहीतरहपश्चिमदिशाकीगोदमेंसूरजधीरि-
धीरिसमानेलगातोएकसाथसबकेमुँहउतरगये।मगरराजाकाबुलन्दहौसलाकिउसनेहारनहींमानी।दरबारि
योंकोधैर्यपूर्वकसमझानेलगा,
'युगयुगान्तरसेयहचिरअभ्यस्तअँधेराआसानीसेहमारापीछानहींछोड़ेगा।तुमसभीजानतेहोकिगुमशुदागा
यभीएकबारतोपुरानेखूँटेपरलौटआतीहै।यहअँधेराभीकमढीठनहींहै।परहमेशाइसतरहउलीचनेसेवहजरूर
हार-थकेगा।पस्तहोगा।दीवानजी, इसकामकोतुमपूरीमुस्तैदीसेचालूरखो।'
'जोहुक्मअन्दाता!'

लेकिनकुदरततोदीवानऔरदरबारियोंकेउनमानराजाकालिहाजनहींरखती।कईपखवाड़ोंतकउलीचनेके
उपरान्तभीअँधेरेकासफायानहींहुआ।वहतोप्रतिदिनसूर्योदयकेसाथलोपहोजाताऔरउसकेअस्तहोतेहीअप
नाविकरालरूपलेकरवापसप्रकटहोजाता।आखिरउसकीहठधर्मीकेसामनेराजाकोभीझुकनापड़ा।

मगरअभीतोफकतएकहीउपायगलतसाबितहुआ।योंचुपचापबैठनेसेराजाकाकामनहींचलता।कुछ-न-
कुछतरकीबतोफिरसोचनीहोगी।बेचारीतरकीबकाक्याबूताकिवहराजाकेसोचनेपरनहींसूझे!

उसराजाकोअपनेदीवानऔरनौरत्नोंपरबेहदअभिमानथा।वैसेधुरन्धरविद्वान्किसीदूसरेराज्यमेंनहींथे।औ
रनउसजोड़काराजाभीदुनियामेंकोईदूसराथा।सबकेसाथबैठकरराजाफिरअँधेरेकोमिटानेकाउपायसोचने
लगा।मनुष्यकीबुद्धिकाअन्यप्राणियोंसेकोईमुकाबलानहीं।तिसपरराजाकीशानतोकुछऔरहीहै।स्वयंईश्व
रभीउसकीमान-मर्यादाकाध्यानरखताहै।

दरबारियोंकोभीनये-नयेउपायसूझते,
परवेराजाकोकुछभीसुझावदेनेमेंसंकोचकरते।राजाकाभयभीमौतकेभयसेकमनहींहोता।भयमिटजाएतोरा
जचलताहीनहीं।सचमुचभयकेबगैरतोप्रीतभीनहींहोती।तोनयाउपायसोचनेकीकरामातराजाकेअलावाप
ण्डितोंमेंभीनहींथी।आखिरमगजमारीकरते-करतेराजाकोएकनामीउपायसूझा।खुशीमेंबौराया-
साकहनेलगा, 'लाखबुरामानो,
तुमसबमेंएकबड़ीखामीहैंकिअपनीआँखेंखुलीनहींरखते।वरनामेरीतरहबीसियोंउपायसूझनेलगें।बोलो,
रसोईकीदीवारेंईधनकेधुँएसेकालीहोतीहैंकिनहीं?'
'क्योंनहींहोतीं?' दीवानकेसाथ-साथनौरत्नोंनेभीजवाबदिया, 'सफेददीवारेंदेखते-देखतेकाली-
स्याहपड़जातीहैं, अन्दाता।'
'औरवेकाली-स्याहदीवारेंवापससफेदकैसेहोतीहैं?'

इसबारअकेलेदीवाननेहीकहा, 'कैसेक्याहुजूर, दो-तीनबारकूँचीसेकलईपोतनेपरवापससफेदहोजातीहैं।'
राजानेपरिहासकेआशयसेमुस्कराकरपूछा, 'अबभीनहींसमझे?'
राजाकेमनकाभेदउसकेबिनाकहेहीसबसमझजातेथे।फिरभीनजानेकिसमजबूरीकेकारणदीवानकोकह
नापड़ा, 'नहींहुजूर, हमारीबुद्धिआपजैसीकहाँचलतीहै?'

'तोअबसारीबातखुलासाकरकेसमझानीहोगी?' राजानेगुमानकीमुद्रामेंफिरएकसवालपूछा, 'बताओ, यहअँधेराक्याहै?'
बङाकठिनसवालथा।सभीदरबारीएक-दूसरेकामुँहजोहनेलगेतोदीवाननेहिम्मतजुटाकरकहा,
'अँधेरातोअँधेराहीहै, गरीब-परवर!'
'यहीतोगङबङहै!' राजानेजंघापरथापदेतेकहा,
'इतनाभीनहींजानतेकियहअँधेरातोफकतसूरजकीलपटोंकाधुआँहै!'
सभीदरबारीखुशीमेंउछलतेबोले, 'हाँअन्दाता,
अबकहींसारीबातसमझमेंआयी।रसोईकेधुएँकीतरहअँधेरेकोपोतनेसेवहभीसफेद-झक्कहोजाएगा!'

स्वयंआश्वस्तहोनेकेलिएराजानेजोरसेपूछा, 'बोलो, होगाकिनहीं?'
'क्यूँनहींहोगाहुजूर, जरूरहोगा!'
'तोदीवानजी, अबसारेराज्यमेंफरमानभिजवानेकाजिम्मातुम्हारा।देखोढीलनहो।'
राजाकेकहनेपरढीलहोनेकीगुंजाइशहीकहाँथी!
ढिंढोरापिटवानेकीपूरीतैयारीतोपहलेहीकररखीथी।सोतीसरेदिनहीराज्यकीप्रजादिनअस्तहोतेहीकलई काघोलऔरकूँचियाँलेकरअँधेरेकोपोतनेलगीतोफिरविश्रामकानामहीनहीं।वहींअँधेराऔरवेहीकूँचियाँ!

आधीरातढलनेपरकृष्णपक्षकीपंचमीकाचाँदगगनकीकोखसेबाहरआयातोधीरे-
धीरेचाँदनीघुलनेलगी।हाँ, इसबारयहउपायकुछतोकारगरसाबितहुआ।कलईपोतनेसेअँधेराथोङा-
थोङासफेदहोनेलगाथा।महाबलीमनुष्यकेहाथोंप्रपंचकरनेपरऐसीकौन-सीबातहैजोपारनपङे!

आखिरपुताईकरते-करतेअँधेरातोदिप-दिपचमकनेलगा।ऐसाउजालातोपहलेकभीनहींहुआ!
सूरजकीधूपकोभीमातकरेजैसीपुताई! दीवाननेफिररंग-महलकेबाहरखङेहोकरखुश-खबरीसुनायी,
'अन्दाता, यहउपायतोजबरदस्तकामयाबरहा।फकतहोली-
दीवालीपोतनेपरहीसूरजकीलपटोंकाधुआँसफेद-झक्कहोजाएगा।'
राजानेरंग-
महलसेबाहरआकरदेखातोदीवानकीबातपूरमपूरसहीनिकली।दमकतेप्रकाशकीओरराजासेदेखातकन हींगया।आँखेंटमकारतेबोला, 'पुताईज्यादाकरदी? आँखेंचुँधियारहीहैं!'
'हाँ, जहाँपनाह, भूलहोगयी।' दीवाननेहाँ-में-हाँमिलातेकहा, 'कुछतोकलईगाढ़ीथीऔरकुछपुताई.....।'
'डरनेकीकोईबातनहीं।' ढाढ़सबँधानेकीमंशासेराजाबीचहीमेंबोला,
'पहलीबारभूलहोहीजातीहै।आगेध्यानरखना।'
दीवाननेहाथजोङकरकहा, 'पूराध्यानरखूँगा, गरीब-परवर।'

'शाबाश! अच्छीतरहध्यानरखनेसेकभीकिसीकाममेंखोटनहींरहती।'
परदीवानकीचौकसीकेबावजूदपुताईकेकाममेंपूरीखोटरहगयी।कुदरतकोकिसीकाकुछभीध्याननहींथा।
हमेशाकीतरहदिनअस्तहोतेहीअन्धकारतोफिरप्रकटहोगया।वैसाहीअथाहऔरवैसाहीकाला-स्याह!
सभीदरबारियोंकेमुँहसाँवलेपङगये।परबुलन्दहौसलेवालाराजाहताशनहींहुआ।
चकवेनेपूछा, 'ध्याननसेसुनरहीहोन?'
'उफ्फ! बीचमेंरसभंगमतकरो।' चकवीनेचौककरकहा,
'दुनियामेंएकभीऐसाप्राणीहैजोतुम्हारीबातकोध्याननसेनसुने? खाने-पीनेकीभीसुधनहींरहती!
औरयहबाततोइतनीशानदारहैंकिकानोंकेबिनाभीसुनीजासकतीहै! बस,
तुमकहतेजाओऔरमैंसुनतीरहूँ, सुनतीरहूँ!'

चकवेकेकण्ठमेंजानेकितनीबातेंबसीहुईथीं!
जीवनसहचरीकेमुँहसेऐसीप्रशंसासुनकरउसकेउत्साहमेंउफानआगया।ठाटसेकहनेलगा,
'कुछदिनठहराकरनौरत्नोंकोराजानेअपनेपासबुलाया।उन्हेंकाफीदेरसमझानेकेउपरान्तउसनेअन्तमेंक
हा,
'योंनिराशहोनेसेकामनहींचलेगा।तुममेरेराज्यकेनौसूरजहो।थोड़ादिमागलड़ाओतोबेचारेअँधेरेकीक्याऔ
कातजोतुम्हारेसामानेटिकसके।आजही,
दिनउगनेसेघड़ीभरपहलेएकमामूलीदीयेकीलौदेखकरमुझेएकनयीबातसूझी।बड़ेगौरसेसमझनेकीको
शिशकरना।दीयाजलानेपरउजालाहोताहैंकिनहीं?' 'होताहैअन्दाता, हमेशाहोताहै।'
दीवाननेसबसेपहलेहामीभरी।
'घरमेंचूल्हाजलानेपरउजालाहोताहैंकिनहीं?'

इसबारनौरत्नोंनेएकसाथस्वीकारकिया, 'होताहैअन्दाता, हमेशाहोताहै।भला,
चूल्हाजलानेपरउजालाक्योंनहींहोगा?'
'बस, यहीबातअच्छीतरहसमझनेकीहै।' राजादृढ़विश्वासकेसाथकहनेलगा,
'हमअँधेरेकोजलातेहैंतोउजालाहोताहै।उसकेजलतेहीप्रकाशप्रकटहोताहै।कुछसमझेयानहीं?'
दीवानऔरनौरत्नोंनेजोशकेसाथजवाबदिया,
'समझगयेगरीबपरवरअच्छीतरहसमझगये।आपसमझाएँऔरहमनसमझें, भलायहकैसेहोसकताहै?'

'तोफिरढीलकिसबातकी?' राजाउतावलीदरसातेबोला,
'मेरेराज्यमेंलाखोंआदमीहैं।यदिहरआदमीदोनोंहाथोंमेंमशालेंलेकरअँधेरेकोजलानेलगेतोपीछेमुट्ठीभरराख
भीनहींबचेगी! पूरानष्टहोनेकेबादवहचूँतककरनेकेकाबिलनहींरहेगा!'
'हाँ, गरीब-नवाज, यहउपायतोवाकईबेमिसालहै।बस, राज्यमेंडोंडीपिटवानेभरकीदेरहै,
फिरतोअखूटआलोकहरदमजगमगातारहेगा।'
इतनाकहकरदीवानतोअदेरवहाँसेरवानाहोगया।उसकेजीकोभीकमबवालनहींथे।
राज्यकाफरमानजारीहोनेपरकिसकीहिम्मतजोविरोधकरे।सारेराज्यकीरैयतदोनोंहाथोंमेंमशालेंलेकरअँ
धेरेकोजलानेलगीसोसवेरेतकजलातीरही।पैरोंपरखड़ेहोसकनेवालेबच्चेभीउसमहायज्ञमेंशामिलहोगये।
मनुष्यइतनाप्रपंचकरेतोकुछभीअसम्भवनहीं! अँधेरातोजलकरभस्महोगयाऔरआहतकनहींभरसका!

राजानेअपनीबातकोप्रमाणितकरनेकेआशयसेपूछा,
'क्योंदीवानजीपहलेकीतरहयहउजियारासूरजकाप्रकाशतोनहींहै?'
राज-दरबारकेदीवानतोसवालोंकेपहलेहीजवाबतैयाररखतेहैं।हाथजोड़करबोला, 'नहींजहाँपनाह,
हरगिजनहीं।बेचारेसूरजकीऐसीसूरतहीकहाँ! यहतोसाम्प्रतजलेहुएअँधेरेकाउजालाहै।'
फिरउसनेनौरत्नोंकीओरदेखकरपूछा, 'क्यूँ, आपकोभीकुछफर्कनजरआरहाहैंकिनहीं?'
'फर्कहैतोनजरक्यूँनहींआएगा?' नौरत्नोंनेएकसाथगरदनेंहिलाकरजवाबदिया,
'इसतरहजलाहुआअँधेराअबतोशायदहीजिन्दाहोसके!'

दीवानऔरनौरत्नोंकेअडिगविश्वाससेराजाकोभीअपनेउपायपरपुख्ताभरोसाहोगया।शायददान-
पुण्यवनिछरावलकरनेसेभरोसाऔरभीदृढ़हो, इसउद्देश्यसेराजानेदान-
पुण्यमेंकोईकसरनरखीऔरननिछरावलमें।

मगरकुदरतवामन-पण्डितोंकीनाईनदान-पुण्यसेराजीहोतीहैं, नदीवानवनौरत्नोंकेउनमानइनाम-
इकरारसेऔरनभिखारियोंकीतरहनिछरावलसे।वहतोअपनीमतिसेचलतीहै।अपनीगतिसेघूमतीहै।अपने

निर्दिष्टस्थानपरसाँझहोतेहीपूनमकाचाँदउगा।हौले-हौलेचाँदनीकीआभासर्वत्रफैलनेलगी।दीवान, नौरत्नऔरदरबारियोंनेसोचाकिअँधेरेकोपूराजलानेमेंथोडीखामीरहगयी।पाँच-सातबारअच्छीतरहजलानेसेराजाकीतरकीब-निस्सन्देहकारगरसाबितहोगी, इसमेंकोईमीनमेखनहीं।

आखिरअँधेरेकोजलानेकाउपायभीव्यर्थहुआ।सभीदरबारियोंकेमुँहपरकालिखपुतगयी।मगरराजाकातेज स्वीमनोबलरंचमात्रभीमलिननहींहुआ।नयाउपायसोचनेमेंसिरखपानेलगा।भलाऐसीकौन-सीगुत्थीहैजोमनुष्यकेचाहनेपरनसुलझे! कुछदिनअकेलेसोचते-सोचतेउसेएकनयीयुक्तिसूझी।औरसूझतेहीस्वयंआश्वस्तहोनेकेलिएसमस्तदरबारियोंकीविशेषबैठकबुलायी।दीवानऔरनौरत्नोंकोअपनीसमझपरभलेहीअविश्वासहो,
किन्तुराज्यकेएकछत्रअधिपतिकीसूझबूझपरउन्हेंइक्कीसआनाभरोसाथा।
राजानेभिङतेहीउनसेपूछा, 'बोलो, हाथीमेंजबरदस्तताकतहोतीहैंकिनहीं?'
'होतीहैअन्दाता, उसमेंबेजोङताकतहोतीहै।'
'फिरभीसाँकलसेबाँधनेपरउसेकाबूकियाजासकताहैंकिनहीं?'
'कियाजासकताहैअन्दाता, बछङेकीतरहकाबूकियाजासकताहै।'

'तबइतनापरेशानहोनेकीक्यावजहहै? सूरजअस्तनहोतोअँधेराभीनहो।पतली-पतलीकिरणोंकोरस्सियोंसेबाँधकरहमसूरजकोएकजगहरोकलेंतोचिरन्तनप्रकाशहोगाकिनहीं?'
'होगाअन्दाता, जरूरहोगा।' दीवाननेमस्तकनवातेकहा,
'लेकिनइसकेलिएसारेराज्यमेंढिंढोरापिटवानेकीदरकारनहीं।सूरजकीकिरणोंकोतोशहरकेवासीहीजकङकरबाँधलेंगे।फिरहुजूरकेतपतेजकीतुलनामेंबेचारेसूरजकीक्याऔकात!'

ज्यों-ज्योंशासनकीबागडोरढीलीपङतीगयी,
दीवानकीचाटुकारितासीमाकाअतिक्रमणकरनेलगी।परकुदरतनकिसीराजाकीखुशामदकरतीहैऔरन उसकाअंकुशमानतीहै।वहतोअपनीमतिसेचलतीहै।अपनीगतिसेघूमतीहै।शहरकेतमामनागरिकोंनेसूरज कीकिरणोंकोबाँधनेकाखूबप्रयत्नकिया,
परसबअकारथ।नउसकेतपतेजमेंकुछखामीपङीऔरनउसकेनितनेममें!
वहतोहमेशाकीतरहसमयपरपश्चिमदिशामेंडुबकीलगाकरअदीठहोजाता।औरउसकेअदीठहोतेहीअँधेरासाँवलारूपधरकरधीरि-धीरिआकाशमेंव्याप्तहोनेलगता।इसबारराजाकोभीअंधेरेकेसामनेपस्तहोनापङा।नदरबारियोंकीखुशामद कामआयीऔरननौरत्नोंकीसूझबूझ।

तत्पश्चात्राज्यकाएकमात्रअधिष्ठाताहोतेहुएभीराजानेविख्यातपण्डितोंकोबुलाकरपूछा,
'आजदिनतकमेराकोईउपायअकारथनहींगया।इसबारयहक्याअनहोनीहुई?
मेरेनक्षत्रअचानकइतनेखराबकैसेहोगये? अच्छीतरहपंचांगदेखकरइसकामायनाबताओ।'
राजानेपूछातोपण्डितोंकोमायनाबतानाहीथा।स्वामीकेआदेशकीअवहेलनाकैसेकरते?
पंचांगमेंकाफीदेरगङाकरउन्होंनेपुख्तादिनमानबताये।अन्तमेंक्षमामाँगतेहुएअरदासकी, 'गरीब-परवरइसकेलिएआपकोएकटोटकासारनाहोगा।शंकरभगवानकेनन्दीजितनाप्रचण्डखरेसोनेकासाँडदानकरकेहुजूरकोसातदिनकाअखण्डमौनरखनाहोगा.....।'

मेरातोपेटहीफटजाएगा!.....सातदिनकामौन?'
'हाँ, गरीब-नवाज, पूरेसातदिनकामौन! एकघडीभीकमनहीं।'
'अच्छा!' पण्डितोंकेज्ञानसेप्रभावितहोकरराजानेमाकूलसवालपूछा, 'किसेदानकरनाहोगा? गरीब-

गुरबोंको?''
''नहीं, करुणा-निधान,
पण्डितोंको।नन्दीकास्वर्णदानतोहमेशापण्डितोंकोहीदियाजाताहै।फिरभीहुजूरकेदिलमेंगरीबोंकेलिएदया
-मायाहोतोगणेशभगवानकेचूहेकादान.....!''
''खूब, बहुतखूब!'' दयावन्तराजानेपण्डितोंकोबीचमेंटोककरकहा, ''गणेशभगवानभीकिसरूपमेंकमहैं?
शंकरजैसाऔघड़पिताऔरपार्वतीजैसीममतामयीमाँ!''

''खम्मा-घणीअन्दाता, खम्मा-घणी।आपसेक्याछिपाहै? आपतोसर्वज्ञहैं।एकमामूली-
सीअरदासआपकेचरण-कमलोंमेंप्रस्तुतकरनाचाहतेहैंकिनगरकेभीम-
तालाबमेंसतहसेसवाहाथनीचेसातघोंसलेखुदवानेकाश्रीमुखसेआदेशफरमाएँगरीब-
परवर।जबउनघोंसलोंमेंशकुनचिड़ियाअलग-अलगअण्डेदेगी,
तबआपकाकोईभीउपायव्यर्थनहींजाएगा।फिरतोसूरजकोहथेलीमेंखिलाएँतोअन्दाताकीमरजीऔरचाँद
कोठोकरसेउछालेंतोहुजूरकीइच्छा.....।''

बातकेबीचमेंसहसाचकवेनेयोंहीखिजानेकीमंशासेपूछा, ''रातअबढलनेपरहै, तुझेनींदतोनहींआरहीहै?''
तबपतिकीअक्लपरगुमानकरतेचकवीबोली, ''ऐसीउम्दाबातसुनकरतोनींदकीभीऊँघउड़जाए,
फिरभलामेरीपलकेंक्योंझपकसकतीहैं?''

अपनीसुमधुरवाणीमेंचकवाआगेकहनेलगा,
''राजाकोअपनेपण्डितोंकेपंचांगपरपक्काभरोसाहै।उससुभदिनकीमंगलवेलासेहीहजारों-
हजारचाकरतैनातहुएसोआजदिनतकउसभीम-
तालाबकेपानीमेंसातघोंसलेखोदनेकाअविरलप्रयासकररहेहैं।जानेकबपानीमेंघोंसलेंखुदें,
कबशकुनचिड़ियाउनमेंअलग-अलगअण्डेदेऔरजानेकबराजाकाउपायसफलहो?
पण्डितोंकेज्ञानपरराजाकोपूराविश्वासहैंकियहटोटकासम्पन्नहोनेपरउसकेराज्यमेंचिरन्तनप्रकाशजग
मगाउठेगा।मनुष्यकीआस्थाऔरविश्वासहीबड़ीबातहै।हमपंछी-
जानवरोंकीक्याहस्तीकिउसकेविश्वासपरसन्देहकरें।बस, इत्ती-सीबातऔरइत्ती-
सीरात।अबसोजाएँतोबिनासुनेहीमैंराजाकेशानदारसपनोंकासुरागलगालूँगा।यहतोउसकेजागतेसमय
कीकहानीहै।

1-अँधेरेकोभगानेकेलिएज्योतिषियोंनेअंतिमउपायक्याबताया ?

इकाई 3
हिंदी भाषा का विकास

शिक्षणअधिगम –
इसकेअध्ययनसेविद्यार्थीजानेंगेकिभाषालिपिएकसांकेतिकप्रणालीहैजोभाषाकेव्यक्तिकरनेकेलिएउपयोगहोतीहै।भाषालिपिकाविकासप्राचीनकालसेआधुनिककालतककईमाध्यमोंसेहुआहै।प्राचीनकालमें, भारतीयसभ्यताओंनेब्राह्मीलिपि, कारोष्ठीलिपि,
औरनागरीलिपिजैसीविभिन्नलिपियोंकाप्रयोगकिया।मध्यकालीनअवस्थामें,
इनलिपियोंमेंसुधारकिएगएऔरउन्हेंभाषाओंकेलिएअनुकूलबनायागया।आधुनिकयुगमें,
भाषाओंकेलिएलिपिकाविकासऔरसुधारतेजीसेहुआहै,
जिसमेंतकनीकीप्रगतिऔरभाषाईअध्ययनकामहत्वपूर्णयोगदानरहाहै।

भाषा परिवार
भाषा परिवार - किसी मूल भाषा से विकसित अन्य सभी भाषाओं के समूह को एक भाषा-परिवार कहते हैं। जिस प्रकार मनुष्यों का परिवार होता है, उसी प्रकार भाषाओं का भी परिवार होता है। किसी एक भाषा-परिवार की भाषाओं का जन्म किसी एक मूल भाषा से हुआ माना जाता है।
समय के साथ-साथ एक भाषा बोलने वाली कई जातियाँ विश्व के अलग-अलग क्षेत्रों या देशों में जाकर बसती चली गईं, जिससे उनकी भाषाओं में कहीं कम, कहीं ज़्यादा परिवर्तन आता चला गया और इतिहास के क्रम में कई नई भाषाएँ बनती चली गईं।
ऐसे भाषाएँ जो एक ही वंश या मूल भाषा से निकलकर विकसित हुई या फैली हैं, एक भाषा-परिवार का निर्माण करती हैं। फिर उनके भी उपपरिवार बनते चले जाते हैं।
भाषा परिवार एवं विश्व-भाषाएँ
हिंदी तथा उत्तर की अधिकांश भाषाएँ जैसे बांग्ला, गुजराती, पंजाबी, मराठी, आदि आर्य परिवार की भाषाएँ मानी जाती हैं जिनका मूल स्रोत संस्कृत है। संस्कृत स्वयं जिस मूल भाषा से विकसित हुई उसी से ग्रीक, ईरानी आदि भाषाएँ भी निकली हैं, जिनकी आज अंग्रेजी, जर्मन आदि अनेक वंशज हैं।
इस समस्त परिवार को भारत-यूरोपीय भाषा परिवार कहा जाता है। भारत-यूरोपीय भाषा परिवार की वे भाषाएँ जो भारत में बोली जाती हैं, भारतीय आर्य भाषाएँ कहलाती हैं। भारत में एक दूसरा भाषा परिवार द्रविड़ कुल है, जिसकी मुख्य भाषाएँ हैं: तमिल, तेलुगु, मलयालम और कन्नड़। विश्व में इन भारत-यूरोपीय और द्रविड़ भाषा परिवार के अतिरिक्त अनेक भाषा परिवार है।
भारतीय आर्य भाषा-परिवार
भारत-यूरोपीय भाषा परिवार की एक महत्वपूर्ण शाखा भारतीय आर्यभाषा है, जिसका प्राचीनतम रूप हमें वैदिक संस्कृत में सुरक्षित मिलता है। वैदिक संस्कृत से आधुनिक युग की भारतीय भाषाओं तक आने में इसे इन चार चरणों से होकर गुजरना पड़ा।

1. वैदिक संस्कृत
2. लौकिक संस्कृत
3. पालि और प्राकृत
4. अपभ्रंश

वैदिक सस्कृत (छान्दस्) – 1500 ई ० पू०-1000 ई ० पू ० – इस काल में ऋग्वेद की रचना हुई थी जो वैदिक संस्कृत में है।
लौकिक सस्कृत (संस्कृत) – 1000 ई ० पू०-500 ई ० पू ० – इस काल में पुराण अथर्ववेद उपनिषदों तथा विभिन्न ब्राह्मण ग्रंथों की रचना हुई जो लौकिक संस्कृत में है।
इसके बाद मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा की शुरुआत होती है।

मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा

इस काल में भी 3 भाषाएं थी जो निम्नलिखित है-

प्रथम प्राकृत काल : पालि – 500 ई.पू. – 1 ई.

- भारत की प्रथम देश भाषा , बुद्ध के सारे उपदेश पालि भाषा में ही हैं।
- इसी मागधी भाषा के नाम से भी जाना जाता है

द्वित्तीय प्राकृत काल : प्राकृत 1 ई . -500 ई .

- भगवान महावीर के सारे उपदेश एवं सभी जैन साहित्य प्राकृत भाषा में हैं।
- उस समय सामान्य बोलचाल की भाषा थी इसमें व्याकरण का अभाव था

तृतीय प्राकृत काल : (1– अपभ्रंश 500-1000 ई . (2- अवहट्ट 900-1100 ई . —

अपभ्रंश (500-1000 ई .)

- इस भाषा में साहित्य का आरंभ स्वयंभू कवि के द्वारा 8वीं सदी में हुआ।
- इस काल में प्रमुख रचनाकार – स्वयंभू (पउम चरिउ), धनपाल (भाविस्स्यत कहा), पुष्पदंत (जसहरचरिऊ,महापुराण), सरहपा, कन्हपा इत्यादि हैं।

अपभ्रंश से विकसित हुई आधुनिक भाषाएं निम्नलिखित हैं-

अपभ्रंश के रूप	विकसित हुई आधुनिक भाषाएँ
शौरसेनी	पश्चिमी हिंदी, राजस्थानी गुजराती
अर्धमागधी	पूर्वी हिंदी
मागधी	बिहारी, उड़िया, बांग्ला, असमिया
खस	पहाड़ी
ब्राचड़	पंजाबी
महाराष्ट्री	मराठी

हिंदी तथा अन्य आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ

आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं का विकास अपभ्रंश से हुआ है जिसका प्रचलन एवं प्रयोग 500 से 1000 ई. के बीच हुआ करता था। देश में उस समय अपभ्रंश के कई रूप प्रचलित थे। जैसे शौरसेनी, मागधी, महाराष्ट्री। इन्हीं से विभिन्न आधुनिक भारतीय भाषाओं की धारा निकलती है। अपभ्रंश स्वयं पालि-प्राकृत से विकसित है और पालि-प्राकृत वैदिक संस्कृत से।

आर्य परिवार की आधुनिक भारतीय भाषाओं में प्रमुख हैं: हिंदी, पंजाबी, उर्दू, कश्मीरी, सिंधी, गुजराती, मराठी, बांग्ला, उड़िया और असमिया। संस्कृत से विकसित होने के कारण इन भाषाओं में न केवल संस्कृत के शब्द प्रचुर मात्रा में मिलते हैं, बल्कि व्याकरण के कई रूप भी इनमें समान या लगभग समान हैं। यही कारण है कि भारतीय आर्य परिवार की इन भाषाओं को परस्पर समझने या सीखने में कोई कठिनाई नहीं होती है।

किसी भी भाषा पर केवल अपने परिवार की अन्य भाषाओं का ही प्रभाव नहीं पड़ता, बल्कि पड़ोसी भाषाओं का भी पर्याप्त प्रभाव पड़ता है। चाहे वे भाषाएँ अन्य भाषा परिवार की हों। भारत के दक्षिण में द्रविड़ भाषा परिवार की भाषाएँ हैं, जिनके साथ शताब्दियों से आर्य भाषाओं का सम्पर्क रहा है। फलस्वरूप दोनों परिवारों की भाषाओं के बीच न केवल संस्कृति की समान धारा बहती है बल्कि ध्वनि, शब्द तथा व्याकरण के स्तर पर भी परस्पर आदान-प्रदान का अद्भुत दृष्टांत मिलता है।

संस्कृत भाषा के तत्व इन सभी भाषाओं में समान रूप से मिलते हैं। मुगल काल में हिंदी भाषा पर प्रभाव डालने वाली दो प्रमुख भाषाएँ थीं— अरबी और फ़ारसी, जिन्होंने विशेषतः उर्दू के माध्यम से हिंदी के शब्द-भंडार को अत्यधिक प्रभावित किया। इसी प्रकार आजकल हिंदी के शब्द-भंडार तथा वाक्य-रचना को गहराई से प्रभावित करने वाली दूसरी भाषा है अंग्रेजी। अंग्रेजी का प्रभाव मुख्यतः ज्ञान-विज्ञान की भाषा के रूप में अधिक महत्वपूर्ण है।

भाषा परिवार का वर्गीकरण और संख्या

ग्रियर्सन के अनुसार भारत में 6 भाषा-परिवार, 179 भाषाएँ और 544 बोलियाँ हैं।

- भारोपीय परिवार: उत्तरी भारत में बोली जानेवाली भाषाएँ।
- द्रविड़ परिवार: तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम।
- आस्ट्रिक परिवार: संताली, मुंडारी, हो, सवेरा, खड़िया, कोर्क, भूमिज, गदवा, पलौंक, वा, ख़ासी, मोनख्मे, निकोबारी।
- तिब्बती-चीनी: लुशेइ, मेइथेइ, मारो, मिश्मी, अबोर-मिरी, अक।
- अवर्गीकृत: बुरुशास्की, अंडमानी।
- करेन तथा मन: बर्मा की भाषा (जो अब स्वतंत्र है)

भाषा और लिपि

भाषा और लिपि का परस्पर अविनाभाव संबन्ध है। इनके उद्भव और विकास का इतिहास आज भी गवेषकों के लिए शोध का विषय बना हुआ है। मानव जब जंगलों एवं गुफाओं में रहता था तब वह अपनी गुफा में जादू—टोने के लिए विविध प्रकार की रेखाओं के माध्यम से कुछ आकृतियाँ बनाया करता था। अपने घोडों तथा अन्य पालतु जानवरों की पहचान के लिए उनके शरीर पर विविध कोटि के चिह्न बनाया करता था। किसी बात को स्मरण रखने के लिए बेलों तथा रस्सियों में गाँठ बांधकर रखता था।इस प्रकार प्राचीनकालीन मानव विविध साधनों के माध्यम से दीर्घकाल पर्यन्त अपने भावों को प्रकट करता रहा। इन्हीं साक्ष्यों के आधार पर समयानुसार विविध लिपियों का विकास होता चला गया। लिपि—विज्ञानियों ने चित्रों एवं लकीरों कसे विकसित कर वर्णाकार प्रदान किया और आकृतियों को लिपि नाम दिया गया। धीरे—धीरे विविध भाषाओं की अपनी —अपनी लिपियाँ बनने लगी। कुछ भाषाओं के उच्चारण — वैविध्य के कारण उनकी अपनी लिपियाँ विकसित हुई। जैसे गुजराती, बंगला, मैथिल, उडिया, तामिल, तेलगु, मलयालम आदि। ये लपियाँ भी हैं और भाषा भी हैं। जैसा कि हम ऊपर उल्लेख कर चुके हैं कि संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिंदी, मराठी आदि सिर्फ भाषा हैं , लिपि नहीं। अक्सर हम देखते हैं कि आज भी कई लोग हिंदी या संस्कृत—प्राकृत आदि भाषाबद्ध ग्रंथ जो नागरी लिपि में लिखे हुए होते हैं, को भी हिंदी लिपि में लिखा हुआ कहते हैं; जबकि हिंदी नाम की कोई लिपि नहीं है। सही में वह लिपि तो देवनागरी अथवा नागरी लिपि है। मनुष्य के विचारों को व्यक्त करने का माध्यम वाणी है। यह वाणी विभिन्न भाषाओं के माध्यम से संसार में प्रकट होती है। इन भाषाओं को लंबे समय तक स्थाई रूप से सुरक्षित रखने व एक स्थान तक ले जाने का काम लिपि करती है। अत: भाषा के दो प्रमुख आधार माने गये हैं— (१) ध्वनि या नाद और (२) दृश्य। किसी भाषा का पहले ध्वनि रूप प्रकट होता है। बाद में वह दृश्य स्वरूप के रूप में अपने विकास का मार्ग प्रशस्त कर लेती है। अत: हम कह सकते हैं कि भाव तथा विचारों के प्रकाशन का ध्वनि—स्वरूप भाषा है और उसका दृश्य—स्वरूप लिपि।अर्थात् भाषा को दृष्टिगोचर करने के लिए जिन प्रतीक—चिन्हों का प्रयोग किया जाता है। , उन्हें लिपि कहते हैं। भाषा और लिपि का संबन्ध सिक्के के दो पहलुओं के समान है। भाषा के बिना किसी लिपि की संभावना हो ही नहीं सकती। हाँ बिना लिपि के भाषा संभव है। अनेक बोलियाँ और उपभाषाएँ ऐसी हैं जो भावों और विचारों को व्यक्त करने का कार्य करती हैं, किन्तु लिपि के अभाव में उनका विशेष महत्व या प्रचार—प्रसार नहीं हो पाता। भाषा या बोली का ध्वनि स्वरूप स्थान—काल की सीमा में रहकर ही प्रकट किया जाता है, जबकि लिपि भाषा को स्थान और काल के बंधन से मुक्त कर देती है। इसका तात्पर्य यह है कि बोली गई भाषा किसी स्थान विशेष में उपस्थित व्यक्तियों तक ही सीमित रहती है, किन्तु लिखी गई भाषा दीर्घकाल पर्यन्त विस्तृत असीम भूमि पर कहीं भी उन विचारों और भावों को पहुँचा सकती है। इस लिए लिपि को भाषा का एक अनिवार्य एवं अत्युत्तम अंग माना गया है। भाषा को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने तथा दीर्घकाल पर्यन्त जीवित रखने का काम लिपि ही करती है। लिपि के अभाव में अनेक भाषाएँ उत्पन्न होकर नष्ट हो गई । आज उनका नामों—निशान तक नहीं

रहा। लिपि भी इसके अछूती नहीं रही। ललितविस्तर आदि प्राचीन ग्रंथों में तत्कालीन प्रचलित लगभग चौंसठ लिपियों का नामोल्लेख मिलता है, लेकिन आज उसमें में अधिकांश लिपियाँ अथवा उनमें लिखित साहित्य उपलब्ध नहीं है। कुछ प्राचीन लिपियाँ आज भी एक अनसुलझी पहेली बनी हुई हैं। उनमें लिखित अभिलेख आज—तक नहीं पढ़े जा सके हैं। मध्यप्रदेश के जबलपुर शहर के आस—पास विस्तृत पर्वतों एवं गुफाओं में टंकित 'शंख लिपि' के सुन्दर अभिलेखों को भी आज—तक नहीं पढ़ा जा सका है। इस लिपि के अक्षरों की आकृति शंख के आकार की है। प्रत्येक अक्षर इस प्रकार लिखा गया है कि उससे शंखवाद आकृति उभरकर सामने दिखाई पड़ती है। अत: अनुमान लगाया जा रहा है कि शायद यही शंख लिपि है। विद्वान गवेषक इन लेखों को पढने का प्रयास कर रहे हैं लेकिन अभी तक योग्य सफलता नहीं मिल सकी है। खरोष्ठी लिपि को भी पूर्णत: नहीं पढ़ा जा सका है। आज भी विविध सिक्कों, मृद्पात्रों एवं मुहरों पर लिखित ऐसी कई लिपियाँ और भाषाएँ हमारे संग्रहालयों में विद्यमान हैं जो एक अनसुलझी पहेली बनी हुई है और हमारे भाण्डागारों की शोभा बढ़ रही हैं। अत: इतना तो निश्चित कहा जा सकता है कि भाषा और लिपि दोनों ही एक—दूसरे के विकास में गाड़ी के दो पहियों की तरह अहम भूमिका अदा करती हैं। लिपि के अभाव में कोई भी भाषा अपनी लिपि है वे आज खूब फल—फूल रहीं हैं। कुछ भाषाएँ ऐसी भी हैं जिनकी अपनी लिपि तो नहीं है लेकिन दूसरी लिपियों में आसानी से लिखी—पढ़ी जा सकती हैं। ये भाषाएँ इतनी शुद्ध, स्पष्ट और व्याकरणसम्मत हैं कि किसी भी लिपि में हूब—हू लिखी —पढ़ी जा सकती हैं। जैसे संस्कृत,प्राकृत, अपभ्रंश, हिंदी, मराठी आदि भाषाओं की अपनी कोई लिपि नहीं है, लेकिन इन्हें किसी भी लिपि लिखा—पढ़ा जा सकता है। एक प्रकार से देखें तो भाषाएँ देवनागरी लिपि पर आधारित हैं। इन्हों ने देवनागरी लिपि को विशेषरूप से अपनाया है, लेकिन अन्य लिपियों में भी इन भाषाओं का साहित्य प्राचीनकाल से लिखा जाता रहा है जो हमें विविध ग्रन्थकारों में पाण्डुलिपियों एवं अभिलेखों के रूप में प्राप्त होता है।

भाषा और लिपि साम्य—वैषम्य :

भाषा के विकास में लिपि का अत्यधिक महत्व है। लिपि के अभाव में भाषा अपनी सीमा और परिधि से बाहर नहीं जा पाती, किन्तु लिपि का आधार मिलते ही भाषा का विकास एवं विस्तार प्रारंभ हो जाता है। लिपि के द्वारा ही भाषा में अधिक सूक्ष्मता और निश्चितता आती है। विदित् हो कि प्राचीनकाल में धर्म, साहित्य तथा इतिहास का लिपि से उतना घनिष्ट संबंध नहीं था जितना आज है। आज लिपि के अभाव में साहित्य, इतिहास आदि का होना असंभव—सा प्रतीत होता है, परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है। लिपि के अभाव में भी साहित्य, इतिहास आदि हो सकते हैं और थे भी। अन्तर सिर्फ इतना हो जाता है कि लिपि के अभाव में वे अनिश्चित से रहते हैं; धर्म मंत्र—तंत्र का, साहित्य कविता का और इतिहास लोक—कथाओं का रूप ग्रहण कर लेता है। प्राचीन ग्रंथों में वर्णित कहानियाँ तथा विभिन्न देशों की परंपरागत लोक—कथाएँ इसके उदाहरण हैं। जिस प्रकार लेखनकला के अभाव में साहित्य का होना संभव है, उसी प्रकार वर्णमाला के अभाव में लिपि का होना भी संभव है। वर्णमाला के अभाव में मनुष्य रज्जु, रेखा—चित्र, लीपने, माढने आदि द्वारा अपने भावों तथा विचारों को लिपिबद्ध करता था। अत: लिपि के अन्तर्गत वर्ण—लिपि के अतिरिक्त रज्जु—लिपि, रेखा—लिपि, चित्र—लिपि आदि को भी शामिल किया जा सकता है। भाषा ध्वन्यात्मक होती है जबकि लिपि चिह्नात्मक अथवा अक्षरात्मक होती है। भाषा बाली जाती है जबकि लिपि लिखी जाती है। अर्थात् भाषा का उद्गम स्थान मुख है जबकि लिपि हाथ द्वारा लिखी जाती है। भाषा को दीर्घकाल पर्यन्त जीवित रखने का काम लिपि करती है। अर्थात् लिपि भाषा को स्थायित्व प्रदान करती है। भाषा को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने का काम भी लिपि ही करती है। प्राचीनकाल में यह कार्य पत्र द्वारा संदेश भेजने के रूप में किया जाता था, जिसमें काफी समय लगता था।लेकिन आज वैज्ञानिक साधनों के विकास के साथ यह कार्य ईमेल, एस.एम.एस, फैक्स अथवा वॉट्स्अप द्वारा तुरन्त हो जाता है। मुख से बोला गया शब्द शीघ्र ही बदला जा सकता है, परन्तु लिखी गई बात को बदलना सरल नहीं होता है। बोली हुई वाणी तुरन्त ही वायु में विलीन होकर नष्ट हो जाती है, लेकिन लिखित बातें हजारों वर्षों तक स्थिर रहती हैं। लगभग दो हजार वर्ष से भी

अधिक प्राचीन सम्राट अशोक के शिलालेख तत्कालीन ब्रह्मी लिपि के कारण आज भी हमारी मूल्यवान निधि के रूप में सुरक्षित हैं। अत: यह निश्चितरूप से कहा जा सकता है कि हमारे सामने आज जितना भी पुरातन साहित्य विद्यमान है, वह लिपि के स्थायित्व का ही परिणाम है। भाषा और साहित्य की सुरक्षा के लिए भी लिपि ही एकमात्र साधन है। इस प्रकार मानवजाति के विकास में भाषा और साहित्य का जो महत्व है, लिपि का भी उससे कम नहीं माना जा सकता है। वर्तमान में कई लिपियाँ एवं भाषाएँ आधुनिक विज्ञान, सभ्यता—संस्कृति एवं राष्ट्र के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं।

देवनागरी लिपि

देवनागरी लिपि अनेक विशेषताओं की स्वामिनी है और वास्तव में यह विश्व की समस्त वर्तमान लिपियों से श्रेष्ठ और वैज्ञानिक है। देवनागरी लिपि में एक आदर्श लिपि होने के सभी गुण विद्यमान हैं। यह लिपि अक्षरात्मक है। भारत की अनेक भाषाओं के लिए देवनागरी लिपि का प्रयोग लंबे समय से होता आ रहा है।

विनोबा भावे ने अपने एक भाषण में कहा था, "यदि हम सारे देश के लिए देवनागरी लिपि को अपना लें तो हमारा देश बहुत मजबूत हो जाएगा।" फिर तो देवनागरी लिपि ऐसी रक्षा कवच सिद्ध हो सकती है जैसे कोई भी नहीं। यह लिपि हर संदर्भ एवं स्थिति में उपयुक्त है और इतनी लचीली है कि हर ढाँचे में आसानी से ढल सकती है। देवनागरी लिपि की विभिन्न विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

यह लिपि भाषा के अंतर्गत आने वाले अधिक से अधिक चिह्नों से संपन्न है। जिसमें परंपरागत रूप से 11 स्वर और 33 व्यंजन हैं। इसके अतिरिक्त ड़, ढ़, क़, ख़, ग़, ज़, फ़ इन ध्वनियों के लिए भी चिह्न बने हैं। क्ष, त्र, ज्ञ, श्र संयुक्त व्यंजनों के लिए अलग चिह्न है।
यह लिपि समस्त प्राचीन भारतीय भाषाओं जैसे- संस्कृत, प्राकृत, पाली एवं अपभ्रंश की भी लिपि रही है।
जो लिपि चिह्न जिस ध्वनि का द्योतक है उसका नाम भी वही है जैसे- आ, इ, क, ख आदि। इस दृष्टि से रोमन लिपि में पर्याप्त भ्रम की स्थिति विद्यमान है। जैसे - C, H, G, W आदि।
हिन्दी में ऋ - रि, श - ष, को छोड़कर शेष सभी ध्वनियों के लिए स्वतंत्र लिपि चिह्न है।
नागरी लिपि में उच्चारण की दृष्टि से समान लिपि चिह्नों में आकृति में भी समानता देखने को मिलती है। रोमन लिपि में यह गुण ना के बराबर है- P, y, g, a, b आदि।
रोमन लिपि में कई बार वर्ण मूक रहते हैं, उनका उच्चारण नहीं किया जाता लेकिन उन्हें लिखा जाता है। जैसे- Know, Knife, Tsunami आदि लेकिन देवनागरी लिपि में यह दोष नहीं है। नागरी लिपि में प्रत्येक वर्ण का उच्चारण किया जाता है।
देवनागरी लिपि में रोमन के समान कैपिटल लेटर और स्मॉल लेटर का झंझट नहीं है। वास्तव में आदर्श लिपि वही है जिसमें एकरूपता हो।
देवनागरी लिपि में सभी नासिक्य ध्वनियों के लिए अलग-अलग चिह्न है। जैसे रोमन में- ड़, ञ, ण, सभी को N से लिखा जाता है। भारतीय भाषाओं के तृष्णा, विष्णु और प्राणायाम जैसे शब्दों को रोमन में लिख पाना असंभव है।
नागरी में अनुस्वार और चंद्रबिंदु की उपस्थिति इसकी ध्वनि वैज्ञानिक पूर्णता को प्रकाष्ठा पर पहुँचा देती है।

नागरी लिपि में अन्य भाषाओं की ध्वनियों को ग्रहण करने की अद्भुत क्षमता है। जैसे अंग्रेज़ी से- ऑ, क़, ग़, ज़, फ़ आदि।
उत्तर भारत की सभी लिपियाँ नागरी के ही रूप भेद है, यह संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, मराठी, नेपाली आदि अनेक भाषाओं की लिपि तो है ही साथ ही अन्य भाषा की लिपि होने का सामर्थ्य भी इसमें विद्यमान है।
देवनागरी लिपि सुपाठ्य एवं सुस्पष्ट है अर्थात इस लिपि का पाठ सुंदर रूप में किया जा सकता है। और यह अच्छे तरीके से स्पष्ट भी हो जाती है। देवनागरी लिपि में मुद्रण एवं टंकण के भी विशेष सुविधाएँ हैं।
देवनागरी लिपि की एक अन्य विशेषता यह है कि यह उत्तरी भारत मैं हिमालय से लेकर महाराष्ट्र और हरियाणा से लेकर बिहार और झारखंड तक फैली हुई है।
इस लिपि में भारत का विपुल साहित्य भंडार भी इसी लिपि में लिखित है। संस्कृत, पाली, प्राकृत और अपभ्रंश साहित्य इसी लिपि में विद्यमान है।
देवनागरी लिपि में अंको को भी लेकर अनेक चमत्कार पूर्ण कविताएं लिखी गई हैं जो अन्य लिपियों के अंको में संभव नहीं है।
इसका वर्तमान रूप नेत्रों के लिए अत्यंत आकर्षक है। इसके साथ साथ यह लिपि वैज्ञानिक और कंप्यूटर की दृष्टि से भी उपयुक्त है।
अतः इस प्रकार कहा जा सकता है कि नागरी लिपि में निश्चित रूप से विश्व का श्रेष्ठ ज्ञान है, और यह लिपि अनेक विशेषताओं की स्वामिनी है।

हिंदीकाविकास

वेद रचना जिस भाषा में हुयी उसे मूल भाषा कह सकते हैं। जब मूल भाषा में वेद जैसे उन्नत साहित्य का सृजन होने लगा तो उसका रूप संस्कृत के रूप में परिणित होने लगा। परन्तु विचारणीय है कि हिन्दी ने एकाएक साहित्यिक रूप धारण नहीं किया होगा। पहले वह साधारण बोलचाल की भाषा रही होगी। फिर धीरे-धीरे उसका साहित्य में प्रयोग हुआ होगा। इस प्रकार वेद काल में जन-सामान्य की भाषा प्राकृत ही रही, परन्तु साहित्यिक रूप को व्याकरणों ने बांधना प्रारम्भ कर दिया। 500 ई.पू. के लगभग पाणिनी के व्याकरण नियमों में वह ऐसी आबद्ध हुयी कि उनमें परिवर्तन होना रुक गया। आर्यों की भाषा का यह साहित्यिक रूप संस्कृत के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस तरह इसका प्रयोग साहित्य की रचना के क्षेत्र में होने लगा। अतः इस मूल भाषा के दो रूप- -वेदों की भाषा संस्कृत तथा लोक व्यवहार की प्राकृत भाषा हो गये, जबकि दूसरी ओर बोलचाल की भाषा लगातार विकास के मार्ग पर बढ़ती रही। साहित्यिक प्राकृत भाषाओं की तुलना में इन बोलचाल की भाषाओं के व्याकरणों से अपभ्रंश भाषा उत्पन्न हुयी। अपभ्रंश भाषाओं का समय 500 ई . से 1000 ई . तक माना जाता है। इस प्रकार विभिन्न प्रदेशों में बोली जाने वाली प्राकृत भाषा इन अपभ्रंश भाषाओं के विकास का स्रोत बन गयी। धीरे-धीरे ये अपभ्रंश भाषायें साहित्य का माध्यम बनने लगीं तथा हिन्दी की 1000 ई. तक आते-आते ये अपभ्रंश भाषायें पूर्णरूप से साहित्यिक बन गयीं।

1. आदिकाल

हिन्दी का विकास प्राकृत एवं अपभ्रंश के बाद हुआ है। हिन्दी के विकास का उद्घाटन चन्द बरदाई के समय से होने लगता है। हिन्दी का प्राचीनतम उपलब्ध विकास का उद्घाटन ग्रन्थ चन्दबरदाईकृत पृथ्वीराज रासो है। इस ग्रन्थ में हमको हिन्दी भाषा के सर्वप्रथम दर्शन होते हैं, इस ग्रन्थ का स्वरूप इतना मिश्रित एवं वैविध्यपूर्ण है कि उसके मूल रूप का पता लगाना कठिन हो रहा है। यह समय 12 वीं शताब्दी का अंतिम लेकिन अर्द्ध भाग था, किन्तु उस समय में भी इसकी भाषा हिन्दी से अत्यधिक

भिन्न हो गयी थी। जिस समय हिन्दी भाषा का इतिहास आरम्भ होता है, उस समय हिन्दी प्रदेश तीन राज्यों में विभक्त था--

(अ) दिल्ली, अजमेर का चौहान वंश,

(ब) कन्नौज का राठौर वंश,

(स) महोबा का परमार वंश।

संस्कृत के अंतिम नैषध के रचयिता हर्ष जयचन्द्र के दरबार के राजकवि थे। महोबा के संस्कृत राजकवि जगनिक का नाम उनके रचित ग्रन्थ 'आल्हखण्ड' के कारण प्रसिद्ध है। 13 वीं शताब्दी के आरम्भ तक समस्त हिन्दी प्रदेश पर मुसलमानों का आधिपत्य स्थापित हो गया था। तीन सौ वर्षों से अधिक विदेशी शासन की कालावधि में दिल्ली के राजनीतिक केन्द्र से हिन्दी भाषा की प्रगति में कोई मदद प्राप्त नहीं हुयी। इस कालावधि में केवल अमीर खुसरो ने ही दिल्ली में मनोरंजन हेतु भाषा के प्रति रुचि दिखायी। इस युग के सम्बन्ध में निम्न बातें विशेष रूप से दिखायी देती हैं--

(अ) प्राचीनकाल विदेशी शासन का युग था।

(ब) प्राचीनकाल में नाथ पंथ और वज्रयानी सिद्ध साहित्य की रचना हुयी। इसके अनेक ग्रन्थों की प्रामाणिकता संदिग्ध है।

प्राचीन हिन्दी के ऊपर मुसलमानों की भाषाओं-- अरबी, तुर्की एवं फारसी का खूब प्रभाव पड़ा। यह हिन्दी का शैशव- काल है। इस काल की हिन्दी में अपभ्रंश के काफी रूप प्राप्त होते हैं।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि प्राचीन काल में हिन्दी भाषा व्याकरण के कठोर नियमों में जकड़ी नहीं थी। इस काल के प्रमुख कवि हैं- शालिभद्र सूरी, विजयसेन सूरी, चक्रधर स्वामी, कबीर, शाह, मीरा, ख्वाजा, बन्दा नवाज।

2. मध्यकाल

आदिकाल के पश्चात् हिन्दी के विकास का दूसरा चरण प्रारम्भ हुआ, जिसे मध्यकाल के नाम से जाना जाता है। हिन्दी का मध्यकाल लगभग 525 वर्षों तक चला। मध्यकाल तक आते-आते तुर्कों का महत्व समाप्त हो गया था तथा मुगलों का साम्राज्य स्थापित होने लगा था। आदिकाल में हिन्दी का सर्वमान्य साहित्यिक रूप बन चुका था। इस काल तक आते-आते हिन्दी का स्पष्ट स्वरूप निखर आया एवं उसकी प्रमुख बोलियाँ भी विकसित हो गयीं। ब्रजभाषा एवं अवधी के प्रचार का कारण धार्मिक आन्दोलन थे। ब्रजभाषा समस्त हिन्दी प्रदेश की साहित्यिक भाषा हो गयी थी। 17 वीं, 18 वीं शताब्दी में प्रायः समस्त हिन्दी साहित्य ब्रजभाषा में लिखा गया। मध्यकाल को दो भागों में विभाजित कर सरलता से समझा जा सकता है। मध्यकाल का प्रथम भाग 1375 से लेकर 1700 तक चला। इस काल में हिन्दी की पुरानी बोलियाँ परिवर्तित होकर ब्रज, अवधी तथा खड़ी बोली के रूप में स्थापित हो गयीं। हिन्दी विकास के व्यकाल का द्वितीय भाग 1700 से लेकर 1900 तक चला। इस काल में ब्रज, अवधी और खड़ी बोलियाँ परिष्कृत होकर परिमार्जित होती हैं तथा उनमें प्रौढ़ता आती है इस प्रकार ये बोलियाँ, बोलियाँ न रहकर भाषा के रूप में परिवर्तित हो गयीं।

अत: उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि मध्यकाल के प्रथम भाग में हिन्दी की पुरानी बोलियों ने विकसित होकर ब्रज, अवधी एवं खड़ी बोली का रूप धारण कर लिया। खड़ी बोली आंशिक रूप से राजनीतिक आश्रय प्राप्त करके विकसित होती रही। तात्पर्य यह है कि मध्यकाल में ब्रजभाषा , अवधी एवं खड़ी बोली के अनेक हिन्दू मुसलमान कवि हुये। डॉ . धीरेन्द्र वर्मा के शब्दों में," वास्तव में यह काल हिन्दी साहित्य का स्वर्णयुग कहा जा सकता हैं।"

3. आधुनिक काल

आधुनिक काल आते-आते साहित्य की भाषा के रूप में ब्रज, अवधी का उपयोग निरन्तर कम होता गया अर्थात् इनका प्रयोग घटता गया और इसके स्थान पर खड़ी बोली का अत्यधिक प्रचार बढ़ता गया। 19 वीं शताब्दी तक कविता की भाषा ब्रज भाषा रही एवं गद्य की भाषा खड़ी बोली रही। बीसवीं शताब्दी के आते-आते खड़ी बोली गद्य-पद्य दोनों की साहित्यिक भाषा बन गयी। भारतेन्दु-युगीन लेखकों में व्याकरण से सम्बन्धित बहुरूपता, कारक एवं लिंग, वचनों के प्रयोग अस्थिरता आदि जैसे दोष दृष्टिगोचर होते हैं, लेकिन इस काल में महावीर प्रसाद द्विवेदी ने भाषागत अशुद्धियों के दोषों को दूर करने का प्रशंसनीय कार्य किया। इस काल में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, हजारी प्रसाद द्विवेदी आदि जैसे समर्थ साहित्यकार हुये हैं। इस तरह साहित्य की सभी विधाओं का आधुनिक काल में पर्याप्त विकास हुआ।

इकाई-4
लेखन कौशल

शिक्षणअधिगम –

इनलेखनविधाओंकेमाध्यमसेछात्रोंकेव्यक्तित्वऔरभाषाकौशलकाविकासकरनाहै।येछात्रोंकोसमृद्ध, अद्वितीय, औरनैतिकमुद्दोंपरविचारकरनेकेलिएप्रोत्साहितकरनेकेसाथहीउनकेसामाजिकऔरसाहित्यिकसमझकोभीविकसितकरने मेंसहायकहोंगे।येउन्हेंसमाजसेवाकेमहत्वकोसमझानेऔरसमर्थनप्रदानकरनेकेलिएभीप्रेरितकरतेहैं।

उद्घोषणालेखन

जनसंचारमाध्यमरेडियोद्वाराजबभीकोईकार्यक्रमप्रस्तुतकरनाहोताहैतोइसकेपूर्वउद्घोषकउद्घोषणाकेद्वाराकार्यक्रम,
केंद्रतथासमयकीजानकारीश्रोताओंकोदेताहै।सुबहसेराततककेकार्यक्रमोंकीएकरूपरेखाप्रस्तुतकरदेताहै।डॉक्टरमधुकरगंगाधरनेलिखाहैंकि "यहउद्घोषणावास्तवमेंएकमुनादीहै,
यहरंगमंचपरहोनेवालेनाटकोंकासूत्रधारहै,
जोआगेआनेवालेकार्यक्रमकेसंबंधमेंसंक्षिप्तऔररोचकतरीकेसेश्रोताओंकोआकर्षितकरताहैऔरउन्हेंरेडियोसेटससेनउठनेदेनेकेलिएविवशकरताहै।" वेआगेलिखतेहैंकि
"आकाशवाणीकेकार्यक्रमोंमेंउद्घोषणाकाबड़ाहीमहत्वहै।जिसप्रकारपूजाकेलिएधूप-दीपवातावरणनिर्माणकरताहैउसीप्रकारउद्घोषणाभीकार्यक्रमकीरूपरेखाबनातीहै।"

इसमेंकोईसंदेहनहींहैंकिएकउद्घोषकद्वाराकीगईव्यवस्थितउद्घोषणाकार्यक्रमोंमेंजानलादेती है, सुननेवालोंकोकार्यक्रमोंकेप्रतिआकर्षणहोताहै।

ठीकइसकेविपरीतयदिउद्घोषकयाएनाउंसरकार्यक्रमोंकीउद्घोषणाठीकसेनहींकरतातो
"पहलेहीकौर मेंमक्खीकागिरना"
वालीकहावतचरितार्थहोतीहैऔरश्रोताकामनउखडजाताहै।इसलिएउद्घोषणावस्तुतःकार्यक्रमका 'लेबुल' है।एकअच्छासेल्समैनजानताहैंकि 'लेबल' काअसरमाल कीबिक्रीपरकितनापड़ताहै।

उद्घोषणामूलरूपसेश्रोताओंकोयहबतातीहैंकिअबकौनसाकार्यक्रमहोनेजारहाहै।किसकेंद्रसेकार्यक्रममें 'रिले'
किएजारहेहैं।कितनासमयहुआहै।यानीएनाउंसरकाकामसूचनादेनाहै।श्रोताअपनेकोअबअमुक कार्यक्रम केलिएतैयारकरें।इसतरहकीघोषणानिम्नांकितढंगसेकीजातीहै-

यहांआकाशवाणीबालाघाटहै।मीडियावेब 102.3 मीटरयानी 102.3 किलोहर्ट्ज पर।इससमयप्रातः 6:05 हुएहैं।अबप्रारंभहोताहैहमाराभजनोंकाकार्यक्रमसुगितम।

इसउद्घोषणामेंयहसूचितकियाजाताहैकिकौनसाकेंद्रहै, कितनासमयहैऔरकौनसाकार्यक्रमशुरूहोनेजारहाहै।यहउद्घोषणातथ्यपरकहैअतःइसेसीधेशब्दोंमें, छोटे-छोटेवाक्योंमेंसाफ-साफअभिव्यक्तिकेसाथलिखाजानाचाहिए।

ऐसीतथ्यपरकउद्घो**षणा केलिएकुछबातेंदष्टव्यहैं-**

1. कौनसाकेंद्रहै।
2. कौनसाकार्यक्रमहै।
3. क्यासमयहुआहै।
4. कोईविशेषसूचनाअगरदेनीहो।

इसकेबादकार्यक्रमकाविवरण।

जैसे- सदाबहारनग्में।

यहआकाशवाणीभोपालहैअबप्रेषितहैएकनाटकतेरीमेरीबातनहीं। लेखकऔरप्रस्तुतकर्ताहैंरमाभारद्वाज।

प्रत्येककार्यक्रमकीप्रारंभिकऔरअंतकीउद्घोषणाहोतीहै।अंग्रेजीमेंइसे 'ओपनिंग' तथा 'क्लोजिंग' कहतेहैं।नाटककीक्लोजिंगअनाउंसमेंटइसप्रकारहोगी।

"अभीआपनाटकसुन रहेथे 'लोरिकचंदा'। लेखकऔरप्रस्तुतकर्ताथे 'सामनाथा' इसमेंभागलेनेवालेकलाकारथेखिलावन पटेल।यहकार्यक्रमभोपालआकाशवाणीकेंद्रसेप्रसारितकियागया।"

कुछघोषणाएंकार्यक्रमपरआधारितहोतेहैं।जैसे - कल 15 अगस्तहै (आनंदऔरउत्साहभरा राष्ट्रीयपर्व।) इसअवसरपरराज्यकेमुख्यमंत्रीजनताकेनामसंदेशप्रसारितकररहेहैं।

इसीप्रकार-

"अभीआपग्रामीणभाइयोंकाकार्यक्रमचौपालसुनरहेथे। 8:02 होनेकोहै।अबकुछहीक्षणोंमेंसमाचारहोंगे।

अभीआपश्रीमतीप्राचीचौबेसेठुमरीसुनरहेथे।रातके 11:00 बजरहेहैंऔरहमारी अंतिमबैठकसमाप्तहोरहीहै।कलसुबहतककेलिएहमेंविदादीजिए।शुभरात्रि"

इनघोषणाओंसेस्पष्ट होताहैकि उद्घोषणालेखनमेंनिम्नलिखितविशेषताएंहोतीहैं -

1. सूचना
2. उत्सुकता
3. रोचकता
4. संक्षिप्तता
5. सुलझी हुईअभिव्यक्ति
6. सरलता
7. तथ्यपरकता
8. विविधता

डॉमधुकरगंगाधरनेअपनेउद्घोषणासंबंधीलेखमेंलिखाहैंकि -

"उद्घोषणाऔरमुख्यरूपसेकार्यक्रमकीसूचनाहै,
किंतुहोशियारउद्घोषणालेखकमात्रचंदशब्दोंकेप्रयोगसेउसेऐसाबनालेतेहैंकिकार्यक्रमकेप्रतिसूचनातोमिलतीहीहै, सुननेकीजिज्ञासाभीउत्पन्नहोजातीहै।अतःएकअच्छेउद्घोषणाकेलिएयहआवश्यकहै-

1. सूचना
2. उत्सुकता
3. रोचकता

यहलेखकपरनिर्भरकरताहैंकिवहइनतीनगुणोंकाकोचंदवाक्योंमेंकैसेपिरोताहै।इसकेअलावासंक्षिप्तता तथासुलझीअभिव्यक्तिउद्घोषणाकेलिएअनिवार्यशर्तहै।"

अभ्यासप्रश्न

1. प्रश्न:
   आपकेकॉलेजमेंवार्षिकखेलकूदप्रतियोगिताकाआयोजनहोनेवालाहै।इसबारेमेंएकउद्घोषणालिखिए।
2. प्रश्न:
   कॉलेजमेंएकनएकंप्यूटरलैबकाउद्घाटनकियाजारहाहै।इसकार्यक्रमकीउद्घोषणातैयारकीजिए।
3. प्रश्न: कॉलेजमें 'स्वास्थ्यजागरूकतासप्ताह'
   काआयोजनकियाजारहाहै।इसआयोजनकेलिएउद्घोषणालिखिए।
4. प्रश्न:
   आपकेकॉलेजमेंएकराष्ट्रीयस्तरकीविज्ञानप्रदर्शनीकाआयोजनकियाजारहाहै।इसप्रदर्शनीकेबारेमेंउद्घोषणातैयारकीजिए।
5. प्रश्न:
   कॉलेजकेपुस्तकालयमेंनईपुस्तकेंआईहैंऔरएकविशेषप्रदर्शनीलगाईजारहीहै।इसबारेमेंउद्घोषणालिखिए।

समाचारलेखन

समाचारलेखनपत्रकारीयलेखनमेपहलेस्थानआताहै।सामान्यरूपसेसमाचारलेखनकाकार्यपूणकालिकयाअंशकालिकपत्रकारद्वाराहीकियाजाताहै।इनकोसंवाददातायारिपोर्टरकहाजाताहै।
समाचारलेखनमेंदोबातोंकोध्यानरखाजानाआवश्यकहै।
-उल्टापिरामिडशैलीकाप्रयोग

- छह: ककारोंकाप्रयोग

"उल्टापिरामिडशैलीकाइतिहास"
19वींसदीकेआरम्भतकभीसमाचारकहानीकीतरहलिखेजातेथे,
लेकिनअमेरिकीगृहयुद्धकेदौरानसंवाददाताओंकोअपनीखबरेंटेलिग्राफसंदेशोंकेमाध्यमसेभेजनीपड़ी,
जोउससमयअत्यंतमहंगी,
दुर्लभऔरअनियमितथीअबसंवाददाताओंनेसमाचारभेजनेकादूसरातरीकाचुना।इसमेंसमाचारकोविस्तार सेलिखनेकीबजाएसंक्षेपमेलिखाजानेलगा, इसमेंअपूर्णजानकारीपहले-पहलदेनेकीकोशिशकीगई,
फिरधीरे-धीरेलेखनकीयहशैलीमानकशैलीबनगई।
उल्टाएपिरामिडशैलीसमाचारलेखनकीअत्यंतलोकप्रियशैलीहै।यहकथालेखनकेबिल्कुलविपरितहै।क हानीलेखनमें 'क्लाइमेक्स' अंतमेंहोताहै, लेकिनसमाचारलेखनमें 'क्लाइमेक्स'
प्रारम्भमेंहीरखदियाजाताहै।समाचारलेखनकीइसीशैलीकेकारणपाठकसमाचारपढ़नेकीओरउत्सुकहो तेहै

उपर्युक्ततथ्योंपरआधारितजनकारीकोसमाचारकारूपदेतेसमय 6 ककारोंकाउल्लेखकरनाआवश्यकहै -- ये 6 ककारहैं:

१. क्या (घटनायास्थिति)

२. कब (समययातर)

३. कहां (स्थान)

४. क्यों (कारण)

५. कौन (घटनाकाकारक/करनेवाला)

६. कैसे (विवरण)

समाचारलिखतेसमयइन्हींछहककारोंयानीप्रश्नोंकेउत्तरयथासंभवप्रस्तुतकरनेकाप्रयासहोनाचाहिएस माचारकेपहलेअनुच्छेदयाखंडमेंइनसभीप्रश्नोंकेउत्तरकमसेकमशब्दोंमेंलिखेजातेहैंइसक्रममेंक्याप्रश्नस बसेपहलेआताहैऔरकैसेसबसेअंतमेंएकसंवाददाताद्वाराइसीव्यवस्थितक्रममेंलिखेगएसमाचारकालाभ उसेप्रकाशितयाप्रसारितकरतेसमयपताचलताहै।स्थानीयसमयकेअभावमेंकेवलपहलाखंडलियाजानापू रासमाचारबनजाताहै।आगेकेखंडोंमेंसमाचारकेमहत्वऔरउसकीउपयोगिताकेआधारपरउसकाउपयोग कियाजासकताहै।

समाचारलेखनकेतत्व:

१. नवीनता

२. सत्यता

३. स्पष्टता

४. संक्षिप्तता

५. सुरुचि

१. नवीनता:

नवीनतासमाचारकाप्रमुखतत्वहै
“प्रकृतिकेयौवनकाश्रृंगारकरेंगेतभीनाबासीफूल।”प्रसादकीइसउक्तिकेअनुसारबासीसमाचारपत्रोंकोगौर वान्वितनहींकरसकतेहैं।दैनिकपात्रोंमें 24 घंटेएवंसप्ताहिकपत्रोंमें 1
सप्ताहकेबादसमाचारछपनेपरसमाचारनहींरहजाता।आशययाहैंकिताजासेताजासमाचारपाठककोआक र्षितकरताहैंविलंबहोनेपरनिरर्थकहोजाताहैनवीनताकेअभावमेंसमाचारगल्पबातचीतआख्यानबनजाता है।समाचारकेलिएतत्कालतक्षणअनिवार्यहै (तत्कालतक्षणऔरअविलंबकोसमाचारकाप्राणकहागयाहै।)

२. सत्यता

समाचारकासबसेअनिवार्यतातत्वहैसत्यतासमाचारोंकोकेवलसहीतथ्योंपरआधारितहोनाचाहिएइसमेंअ नेकविचारअनुभवयाटिप्पणीआदिनहींजोड़ेजासकतेहैं।झूठयागलतबातेंजोड़नाअथवाअनुमानयास्वाकल नकेआधारपरसमाचारतैयारकरनेसेसमाचारकीविश्वसनीयतासमाप्तहोजातीहैं Gardeyan
केसंपादकसीपीस्कॉटकेअनुसारसमाचारभलेहीपत्रकारकीभावनापरआघातकरनेवालाहोअथवाउसके विचारोंकेअनुकूलनहींहोपरसमाचारकेतत्वोंमेंबदलावनहींकियाजानाचाहिएऔरनिरपेक्षयानीतथास्तुर हतेहुएसहीजानकारीऔरसूचनाजनतातकपहुंचानाचाहिए।

३. स्पष्टता:

अगरसहीबातयहजानकारीकोसाफ-
साफभाषामेंप्रस्तुतनहींकियाजाएतोपाठकोंश्रोताओंऔरदर्शकोंकेलिएसमाचारकोसमझनामुश्किलहोगा इसलिएसमाचारकोइतनास्पष्टहोनाचाहिएकिउसेकोईभीबिनाकिसीउलझनकेआसानीसेसमझसके।स माचारलिखतेसमयसरलभाषासहीघटनाक्रमऔरव्यवस्थितविस्तारपरविशेषध्यानदेनाचाहिएशब्दयथा संभवबोलचालवालीभाषाकेहोऔरभाषामेंप्रवाहहोतभीसमाचारस्पष्टरूपसेसमझेजासकेंगे।

४. संक्षिप्तता

समाचारसूचनायाजानकारीपहुंचानेकामाध्यमहैव्यर्थकेविस्तारसेसमाचारोंकेप्रतिलोगोंकीरूचिऔरउत्सुकतासमाप्तहोजातीहैंइसलिएसमाचारलिखतेसमयशब्दकेआडम्बरऔरअनावश्यकविवरणदेनेसेबचनाचाहिए।कमशब्दोंमेंप्राप्तजानकारीदेनासमाचारलेखनकीसबसेबड़ीविशेषतामानीजातीहैं।

५. सुरुचि

समाचारलेखनसुरुचिपूर्णहोनाचाहिएजहांलोगरुचिकेसमाचारोंकोआवश्यकविवरणदेकरसजायाजानाजरूरीहोताहैवहीवीभत्सऔरमनमेंभयउत्पन्नकरनेवालेसमाचारोंकोयथासंभवकमशब्दोंमेंकेवलसूचनादेनेकेरूपमेंलिखाजानाचाहिएअर्थात्जानभावनाकोध्यानमेंरखकरउन्हींसमाचारोंकोमहत्वदियाजानाचाहिएजिनमेंजनताकाहितहोऔरलोगजीनेपसंदकरतेहैं।

समाचारलेखनमेंक्यामहत्वपूर्णहोताहैयासमाचारलेखनमेंनिम्नलिखितबातोंपरध्यानदेनाआवश्यकहैः-

१. प्रसारक्षेत्रकीआवश्यकताऊपरध्यानरखनाआवश्यकहै।

२. पृष्ठपरउपलब्धस्थानअथवाचैनलकेलिएउपलब्धसमय।

३. राष्ट्रकीमर्यादाऔरसमाजकीपरंपराकाध्यानरखनाआवश्यकहै।

४. धर्म, जातिएवंसंस्कृतिकेसम्मानएवंहितकाध्यानरखनाआवश्यकहै।

५. समाचारवक्तव्ययहटिप्पणीकीप्रमाणिकताकीजांचकरनाजरूरीहै।

६. वक्ताकेकथनयावक्तव्यकोहू-ब-हूप्रस्तुतकियाजाताहै।

७. किसीअप्रियघटनाकीशिकारमहिलायुक्तिकीपहचानकोउजागरनहींकरना

८. शीर्षकरोचकहोनाचाहिए।

९. किसीभीमहत्वपूर्णघटनापरदोनोंपक्षोंकेविचारोंकोसमानमहत्त्वदेनापड़ताहै।

१०. व्यक्तिगतविचारोंयाअनुभवोंकोनहींजोड़नाचाहिए।

११. किसीभीघटनाकेसंबंधमेंविश्लेषणसमीक्षकयाज्ञानकारबननेसेबचनाचाहिए।

समाचारकोलिखतेसमयअन्यजरुरीध्यानदेनीवालीबाते

किसीभीसमाचारकोलिखतेसमयनिम्नलिखितबातोकोध्यानरखनाअनिवार्यहैं:

- समाचारमेंअधिकतमशब्दोंकीसीमा 500 शब्दहोतीहै.
  अगरइससेबड़ासमाचारहोगातोवहनिबंधमेंशामिलकियाजासकताहै.
- समाचारकोसच्चीघटनाकेआधारपरलिखनाचाहिए
  .अनावश्यकबातोकोसमाचारकेजगहनहींदेनीचाहिए.
- किसीभीव्यक्तिविशेषकीसमाचारमेंप्रंशसानहींकरनीचाहिए.
- समाचारलिखनाएकसामाजिकउत्तरदायित्वकार्यहोताहै.
  इसलिएयहकार्यपक्षपातरहितहोनाचाहिए.
- समाचारलिखतेसमयएकहीभाषाकोचुनेअगरआपहिंदीमेंसमाचारलिखरहेतोसिर्फहिंदीभाषामेंही पूरासमाचारलिखे.

निम्नलिखितएकसीधेसमाचारलीडकाउदाहरणहै:

बुधवारसुबहकरीब 3:50 बजेसाइकैमोरएवेन्यूपरआगलगगई, जिससे 12 संपत्तियांनष्टहोगईऔर 20 लोगबेघरहोगए।पुलिसआगजनीकीसंभावनाकीजांचकररहीहैआइएदेखेंकियहलीड 5W और 1H कोकैसेसंबोधितकरताहै:

क्या : आगजिसने 12 घरोंकोनष्टकरदिया

कौन : 20 निवासीजोप्रभावितहुए

कहाँ : साइकैमोरएवेन्यू

कब : बुधवारसुबह 3:50 बजे

क्यों : इसकामकसदअज्ञातहै, लेकिनपुलिसआगजनीमानरहीहै।

कैसे : यहभीस्पष्टनहींहै, लेकिनआगजनीकीप्रबलसंभावनाहै।

अभ्यासप्रश्न

1. प्रश्न:
   कॉलेजपरिसरमेंवार्षिकखेलकूदप्रतियोगिताकाआयोजनकियागया।इसआयोजनपरएकसमाचारलेखतैयारकीजिए।
2. प्रश्न:
   आपकेकॉलेजमेंपर्यावरणजागरूकतापरएककार्यशालाआयोजितकीगई।इसकार्यशालाकेबारेमेंसमाचारलेखलिखिए।

3. प्रश्न: कॉलेजकेछात्र-
   छात्राओंनेमिलकरएकसामाजिकसेवाअभियानचलाया।इसअभियानपरएकसमाचारलेखलिखिए।
4. प्रश्न:
   कॉलेजमेंएकसेमिनारकाआयोजनहुआजिसमेंमशहूरवैज्ञानिकनेव्याख्यानदिया।इससेमिनारकेबारेमेंसमाचारलेखतैयारकीजिए।

कहानीलेखन

सृष्टिकेशैशवकालमेंजबसेमानवनेहोशसंभालातभीसेकहानीसुननेकीप्रवृत्तिउसकेमनमेंजागी।यहमनकोरिझाने, दिलकोहौले-हौलेसहलानेऔरमनकोगुदगुदानेकाकार्यकरतीथी।कहानीपढ़ने-सुननेलिखनेकीएकसुदीर्घपरम्पराहै।कहानीसमानभावऔरचावसेसभीउम्रकेबच्चे, युवा, वृद्धसुननायापढ़नाचाहतेहैं।इसवजहसेसाहित्यकीअन्यविधाओंकीअपेक्षाकथालेखनकीलोकप्रियताअत्यधिकहै।

कहानीक्याहै ?

परिभाषा-
कहानीकीपरिभाषादेनाकठिनकार्यहै।फिरभीकहानीकारोंऔरविद्वानोंनेइसेपरिभाषाकेचौखटेमेंबाँधनेकाप्रयासकियाहै।भारतीयगाँवकीगीतागानेवाले,
कलमकेसिपाहीमुंशीप्रेमचंदनेकहानीकोइसप्रकारसेपरिभाषितकरनेकाप्रयासकियाहै-

"कथा लेखन एक रचना है, जिसमें जीवन के किसी एक अंग मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता है। उसके चरित्र, उसकी शैली, उसका कथा-विन्यास सब उसी एक भाव को पुष्ट करते हैं। वह एक ऐसा रमणीय उद्‌द्यान नहीं, जिसमें भाँति-भाँति के फूल, बेल-बूट सजे हुए हैं, बल्कि एक गमला है, जिसमें एक ही पौधे का माधुर्य अपने संपूर्ण रूप में दृष्टिगोचर होता है।"

कहानीलेखनकेतत्व

नाटक , उपन्यासआदिकीभांतिकहानीकेतत्वभीहोतेहैं।इन्हेंकेआधारपरपूरीकहानीकीरचनाहोती।

1. कथानक

कहानीकाकेंद्रबिंदुकथानकहोताहै।जिसमेंप्रारंभसेलेकरअंततककहानीकीसभीघटनाओंऔरपात्रोंकाउल्लेखहोताहै।

कथानककोकहानीकाप्रारंभिकनक्शामानाजाताहै।

कहानीकाकथानकआमतौरपरकहानीकारकेमनमेंकिसीघटनाजानकारीअनुभवयाकल्पनाकेकारण आतीहै।

कहानीकारकल्पनाकाविकासकरतेहुएएकपरिवेश, पात्रऔरसमस्याकोआकारदेताहै। तथाएकऐसाकाल्पनिकढांचातैयारकरताहैजोकोरीकल्पनानाहोकरसंभावितहोऔरलेखककेउद्देश्यसे मेलखाताहो।

कहानीमें**प्रारंभ**, **मध्य**और**अंत**कहानीकापूरास्वरूपहोताहै।

2. द्वंद्व

कहानीमेंद्वंद्वकेतत्वकाहोनाआवश्यकहै।द्वंद्वकथानककोआगेबढ़ाताहैतथाकहानीमेंरोचकताबनाएरख ताहै।

द्वंद्वकेतत्वोंसेअभिप्रायहहैंकिपरिस्थितियोंकेरास्तेमेंएकयाअनेकबाधाएंहोतीहै।उनबाधाओंकेसमाप्तहो जानेपरकिसीनिष्कर्षपरपहुंचकरकथानकपूराहोजाताहै।

कहानीकीयहशर्तहैंकिवहनाटकीयढंगसेअपनेउद्देश्यकोपूर्णकरतेहुएसमाप्तहोजाए।कहानीद्वंद्वकेकारण हीपूर्णहोतीहै।

3. देशकालऔरवातावरण –

हरघटनापात्रऔरसमस्याकाअपनादेशकालऔरवातावरणहोताहै।

कहानीकोरोचकऔरप्रमाणिकबनानेकेलिएआवश्यकहैंकिलेखकदेशकालऔरपर्यावरणकापूराध्यानर खें।

4. पात्र

पात्रोंकाअध्ययनकहानीकीएकबहुतमहत्वपूर्णऔरबुनियादीशर्तहै।हरपात्रकाअपनास्वरूपस्वभावऔरउ द्देश्यहोताहै।

कहानीकारकेसामनेपात्रोंकास्वरूपजितनास्पष्टहोगाउतनीहीआसानीसेउसेपात्रोंकाचरित्र-चित्रणकरनेऔरउसकेसंवादोंकोलिखनेमेंआसानीहोगी।

कहानीमेंमुख्यरूपसेदोपात्रहोतेहैं 1 प्रमुखपात्रतथा 2 गौणपात्र।

- प्रमुखपात्रकहानीकेनायक-नायिकाहोतेहैं।
- गौणपात्रवहहोतेहैंजोबीच-बीचमेंउपस्थितहोकरकथानककोगतिप्रदानकरतेहैंतथापाठकोंकाध्यानआकर्षितकरतेहैंउन्हें मनोरंजनकरातेहैं।

5 चरित्रचित्रण

पात्रोंकाचरित्र-
चित्रणपात्रोंकीअभिरुचियोंकेमाध्यमसेकहानीकारद्वारागुणोंकाबखानकरकेपात्रकेक्रियाकलापोंसंवादों केमाध्यमसेकियाजाताहै।

6. संवाद –

कहानीमेंसंवादकाविशेषमहत्वहै।संवादहीकहानीकोऔरपात्रोंकोस्थापितएवंविकसितकरतेहैं।

साथहीकहानीकोगतिदेतेहैंआगेबढ़ातेहैं।जोघटनायाप्रतिक्रियाकहानीकारघटतीहुईनहींदिखासकता।उ न्हेंसंवादोंकेमाध्यमसेसामनेलाताहै।

संवादपात्रोंकेस्वभावऔरपूरीपृष्ठभूमिकेअनुकूलहोतेहैं।

संवादलिखतेसमयकहानीकारकोचाहिएवहपात्रोंकेअनुकूलभाषातथाशब्दावलीहोकाचयनकरें।

शिक्षितव्यक्तिकेलिएउसकेअनुकूलशब्दोंकाप्रयोगकियाजानाचाहिए।वहीगांवकेव्यक्तिकेसंवादगांवकी शब्दावलीपरआधारितहो।

7 चरमोत्कर्ष (क्लाइमैक्स) –कथाकेअनुसारकहानीचरमोत्कर्षकीओरबढ़तीहै।

सर्वोत्तमयहहैंकिचरमोत्कर्षपाठककोस्वयंसोचनेकेलिएप्रेरितकरेंतथाउसेलगेकिउसेस्वतंत्रतादीगईहै।उ सनेजोनिष्कर्षनिकालेहैंवहउसकेसामनेहै।

कहानीलेखनकीविधियाँ

निम्नलिखितविधियोंसेकहानीलिखनेकाअभ्यासकरनाचाहिए।

(i) कहानीकेआधारपरकहानीलिखना।

(ii) रूपरेखाकेआधारपरकहानीलिखना।

(iii) अपूर्णकहानीकोपूर्णकरना।

(iv) चित्रोंकीसहायतासेकहानीपूर्णकरना।

प्रश्नउत्तर

अभ्यासकार्य–

1--कहानीकेविभिन्नतत्वोंकाविवेचनकीजिए।

2- sanket binduo ke aadhar par kahani likhe-

अभ्यास 1: "एकऐसादिनजबसबबदलगया"

- एकसाधारणदिनकीशुरुआतऔरफिरअचानकघटनेवालीघटनाओंकासिलसिला।
- नायककेजीवनमेंआएअप्रत्याशितपरिवर्तनऔरउनकीप्रतिक्रिया।

अभ्यास 2: "भविष्यकासपना"

- एकव्यक्तिकासपनाजिसमेंवहभविष्यमेंपहुँचजाताहै।
- भविष्यकीदुनिया, उसकीचुनौतियाँऔरअवसरोंकावर्णन।

अभ्यास 3: "पुरानीडायरीकारहस्य"

- एकपुरानीडायरीमिलतीहैजिसमेंकुछअनकहेरहस्यछिपेहोतेहैं।
- डायरीकेमाध्यमसेअतीतकीकहानियाँऔरउनकीवर्तमानसेकड़ी।

अभ्यास 4: "गुमशुदादोस्तकीखोज"

- एकदोस्तअचानकगायबहोजाताहैऔरउसकीखोजकीकहानी।
- इसखोजमेंआनेवालीचुनौतियाँऔररहस्यमयीघटनाएँ।

अभ्यास 5: "एकअनजानशहरमें"

- एकव्यक्तिकिसीअनजानशहरमेंपहुँचजाताहै।
- उसशहरमेंउसकेअनुभव, नईजगहकीसंस्कृतिऔरवहाँकीसमस्याएँ।

अभ्यास 6: "परीक्षाकादिन"

- एकछात्रकेदृष्टिकोणसेपरीक्षाकेदिनकीकहानी।
- उसकीतैयारी, तनाव, औरअंतमेंपरीक्षाकापरिणाम।

अभ्यास 7: "दूसरीदुनियाकीयात्रा"

- नायककिसीजादुईयाअजीबतरीकेसेदूसरीदुनियामेंपहुँचजाताहै।
- वहाँकेलोग, उनकीसमस्याएँऔरनायककीभूमिका।

अभ्यास 8: "समाजसेवाकाअनोखाअनुभव"

- एककॉलेजछात्रकासमाजसेवाकेदौरानअनुभव।
- समाजसेवाकीचुनौतियाँ, सीखऔरउसकासमाजपरप्रभाव।

अभ्यास 9: "मृत्युसेसामना"

- नायककाएकदुर्घटनायाघटनामेंमृत्युसेसामना।
- उसअनुभवकेबादउसकेजीवनमेंआएबदलाव।

अभ्यास 10: "अचानकमिलीविरासत"

- नायककोअचानकएकबड़ीविरासतमिलतीहै।
- उसकेबादकीघटनाएँ, रिश्तोंमेंबदलावऔरजिम्मेदारियोंकाएहसास।

पत्रलेखन

पत्रलेखनकावास्तविकअर्थ:- कागज़केमाध्यमसेअपनेविचारोंकाआदान-प्रदानकरनाहै।प्राचीनकालमेंपत्रलेखनकोकलामानाजाताथा।
औपचारिकऔरअनौपचारिकदोनोंप्रकारकेपत्रआजभीलिखेजातेहैं।बहुतसेलोगऐसेहैं, जोवर्तमानमेंभीपत्रकेमाध्यमसेहीअपनेरिश्तेदारोंवमित्रोंकीजानकारीप्राप्तकरतेहैंऔरअपनीजानकारीप्रदानकरतेहैं।
इसीप्रकारसरकारीकार्यों, व्यावसायिककार्योंऔरविद्यालयसबंधीकार्योंकेलिएभीकागजकेपत्रोंकेमाध्यमसेआचार-विचारकियाजाताहै।सामान्यत:पत्रमुख्यरूपसे 2 प्रकारकेहोतेहैं:- औपचारिकपत्रऔरअनौपचारिकपत्र।

पत्रकोप्रभावीबनानाचाहतेहैं, तोनिम्नलिखितबातोंकोध्यानमेंअवश्यरखें:-

1. भाषा

सबसेपहलेपत्रमेंप्रयुक्तभाषाकाविशेषस्थानहोताहै।पत्रमेंलेखककोहमेशासभ्यऔरअनाक्रमकभाषाप्रयुक्तकरनीचाहिए।पत्रमेंकृपया/धन्यवादजैसेशब्दोंकोलिखकरपाठककेमनकोप्रभावितकियाजासकताहै। हमकहसकतेहैंपत्रकोसभ्यऔरसाहित्यिकभाषाहीपाठककोप्रभावितकरदेतीहै।

2. संक्षिप्तता

तेज़ीसेभागनेवालेलोगोंकेपासकाफीकार्यहोतेहैं।अत:उनकासमयएकबहुमूल्यवस्तुबनचुकाहै।इसलिए, पत्रलिखतेसमयव्यर्थमेंशब्दोंकाप्रयोगकरनेसेलेखकऔरपाठकदोनोंकोसमयकेअतिरिक्तव्ययकासामनाकरनापड़ताहै।इसलिए, पत्रकेविषयसेसंबंधितबातोंकोसरलशब्दोंमेंव्यक्तकरनाचाहिए।

3. स्वच्छता

पत्रलिखतेसमयकागजकोशुरुसेअंततकसाफरहनेदेनाचाहिए।व्यर्थकीकाट-पीट, कागजकोमोड़ना, कलमकेअनावश्यकनिशानों, आदिसेहमेशाबचनाचाहिए।

टाइपकियेगएपत्रमेंकिसीभीप्रकारकीत्रुटिनहींहोनीचाहिए।ऐसानहींकरनेपरपाठकपत्रकोलेकरनीरसहो जाताहैऔरउसकेमनमेंशंकाभीउत्पन्नहोजातीहै।

4. रोचकता

पत्रमेंरूचिउत्पन्ननहींहोनेपरपाठकप्रभावितनहींहोसकताहै।इसलिए,
पत्रलिखतेसमयपत्रकीशुरूआततथाअंतमेंपाठककेस्वभावकोध्यानमेंरखतेहुएपत्रलेखनकरनाचाहिए। पाठककोइंगितकरतेहुएकुछविशेषशब्दोंकाप्रयोगअवश्यकरनाचाहिए।जैसे:- आदरणीय, प्यारे, श्रीमान, आदि।

5. उद्देश्य

लेखककोपत्रकेमुख्यउद्देश्यसेसंबंधिततथ्योंकोहीपत्रकेअंतर्गतसम्मिलितकरनाचाहिए।पाठककाध्यान उद्देश्यपररहनाअत्यंतआवश्यकहै, क्योंकिपत्रकाअंतिमलक्ष्यपाठककाध्यानउद्देश्यपरकेंद्रितकरनाहै।

पत्रमेंसरलभाषाकाप्रयोगकरेंऔरअपनेवाक्योंकोछोटाबनाएं।पत्रमें 2 अथवा 3
अनुच्छेदहोनेचाहिएऔरशब्दसीमाअधिकतम 150 से 200 शब्दोंकेबीचहोनीचाहिए।

प्रकार

आवेदनपत्र

(क) (विद्यालय-शुल्कमाफकरनेकेलिएप्रधानध्यापककेपास)

सेवामें,

श्रीमानप्रधानध्यापकमहोदय,

सरस्वतीशिशुविद्यामंदिर

Deelhi

Vishay - …..

महाशय,

सविनयनिवेदनयहहैंकिमैंआपकेविद्यालयकीदशमकाएकअत्यंतनिर्धनछात्रहूँ।मेरेपिताजीआपकेविद्याल यमेंहीशिक्षकहैं।उन्हेंजोवेतनमिलताहै, उससेआपभली-भाँतिपरिचितहैं।हमपाँचभाई-बहनहैं, जिनकेभरण-पोषणकासारादायित्वउन्हींकेऊपरहै।वेतनकेसिवाउनकीआयकाअन्यकोईस्रोतनहींहै।

अतःआपसेकरबद्धप्रार्थनाहैंकिआपमुझेविद्यालय-शुल्कसेपूर्णतःमुक्तकरदें,
जिससेमेराअध्ययनसंभवहोसके।आपकेइसउपकारकेलिएमेरारोम-रोमआपकाआभारीरहेगा।

आपकाआज्ञाकारीशिष्य

तिथि – ७जनवरी२०२२

रमाकांत

व

र्ग – १०

क्रमांक – ४५

(ख) (छात्रावासमेंरहनेकेलिएछात्रावास-अधीक्षककेपास)

सेवामें,

छात्रावास- अधीक्षकमहोदय,

जिलास्कूल, बिहार।

महाशय,

निवेदनहैंकिमैंआपकेविद्यालयमेंप्रथमवर्ष 'कला'
काछात्रहूँ।अबतकमैंअपनेपिताजीकेसाथरहताथा।मेरेपिताजीयहाँपुलिसविभागमेंकार्यरतथे,
किंतुउनकास्थानांतरणदुमकाहोगयाहै।मैंनहींचाहताकिआपकेविद्यालयकोछोड़करकहींदूसरीजगहजा
ऊँ।आपकेविद्यालयकीपढ़ाईजितनीअच्छीहै, इसेशिक्षा-
प्रेमीहीजानतेहैं।इसकेसिवाआपकास्नेहमेरेप्रतिइतनारहाहैंकिवहभीमुझेयहाँसेअन्यत्रजानेसेरोकताहै।

अतःश्रीमानसेविनम्रप्रार्थनाहैंकिआपकृपयाअपनेछात्रावासमेंएकस्थानदेकरमुझेकृतार्थकरें।

आप

काआज्ञाकारी

दिनांक- १३मई, २०२०रमेशकुमार

प्रथमवर्ष 'कला'

सरकारीपत्र

पत्र- संख्या६/३४/१०

भा

रतसरकार,

शिक्षामंत्रालय

प्रेषक,

श्रीगोपालचंद्रशर्मा, आइएएस

सहायकसचिव,

शिक्षामंत्रालय,

नयीदिल्ली, दिनांक२२जून२०१५

सेवामें,

मुख्यसचिव,

बिहारसरकार, पटना।

विषय-विज्ञान-स्नातकोंकोछात्रवृत्ति।

महोदय,

यहमुझेसूचितकरनेकाआदेशहुआहैकिभारतसरकारप्रत्येकविश्वविद्यालयकेपाँचमेधावीविज्ञान-स्नातकोंकोउनकेस्नातकोत्तरअध्ययनकेलिएदोहजाररूपयेकीछात्रवृत्तिदेनेजारहीहै।

अतःआपसेअनुरोधहैकिआपअपनेयहाँकेसभीविश्वविद्यालयोंसेपाँच-पाँचमेधावीविज्ञान-स्नातकोंकेनाम२जुलाई, २०१६तकमेरेपासभेजदें।ध्यानरखेंकिउनकीयोग्यता-सूचीमेंकिसीप्रकारकापक्षपातनबरताजाए।

आपकाविश्वासभाजन

गोपालचंद्रशर्मा

(हस्ताक्षरगोपालचंद्रशर्मा)

सहायकसचिव, शिक्षामंत्रालय

पत्र-संख्या६/३४/१०

नयीदिल्ली,

प्रतिलिपिनिम्नलिखितकोप्रोषित

१.....

२.....

आपकेक्षेत्रमेंसरकारीराशनकीदुकानकासंचालकगरीबोंकेलिएआएअनाजकीकालाबाजारीकरताहैऔरकुछबोलनेपरउन्हेंधमकताहैउसकीशिकायतकरनेहेतुजिलाधिकारीकोएकपत्रलिखिए।
(Sample paper term 2, 2021-22)
उत्तर:

सेवामें,
जिलाधिकारी
मेरठ
उत्तरप्रदेश

दिनांक: 12/08/2023

विषय: सरकारीराशनकीदुकानकेसंचालककीदबंगईकीशिकायतहेतुपत्र।

आदरणीयमहोदय,
मैंमेरठशहरकेश्यामनगरकस्बे,
फतेहगढ़तहसीलकानिवासीहूं।मैंआपकोयहपत्रइसलिएलिखरहाहूंक्योंकिहमारेश्यामनगरकस्बेमेंएकसरकारीराशनकीदुकानहैंजिसकोसरकारनेगरीबऔरजरूरतमंदलोगोंकोकममूल्यमेंसरकारीराशनदेनेकेलिएखोलाहैंकिंतुमुझेयहलिखतेहुएअत्यंतहीखेदऔररोषहोरहाहैंकिइससरकारीराशनकेदुकानकासंचालकचुपकेसेरातमेंअनाजकोशहरकेदुकानदारोंकोउच्चकीमतमेंबेचदेताहैंऔरजबलोगइसकेदुकानमेंराशनदेनेजातेहैंतोयहकोईनाकोईबहानाकरकेउनकोउचितमात्रामेंराशननहींदेताहै।

कुछदिनबादपताचलनेपरजबलोगोंनेइसकीशिकायतस्थानीयपुलिसकोदेनीचाहेतोउसनेउनलोगोंकोबहुतधमकाया।हमलोगोंनेइसकीशिकायतकईबारपुलिसचौकीमेंभीदर्जकरवाईकिंतुअबतककोईउचितकार्यवाहीनहींहुईहै।अतःअबअंतमेंकेवलआपहीहमगरीबोंकासहाराहैं।

आपसेविनम्रनिवेदनहैंकिआपइसगंभीरसमस्याकाशीघ्रहीनिस्तारणकरनेकीकोशिशकरेंतोआपकीअतिदयाहोगी।

आपकानिष्ठ,
सुरेश

अर्धशासकीयपत्र

अर्धशासकीयपत्रप्रेषितीकेव्यक्तिगतनामसेभेजेजातेहैं।जबकोईअधिकारीअर्धशासकीयपत्रप्रेषितीकेव्यक्तिगतनामसेभेजेजातेहैं।जबकोईअधिकारीकिसीदूसरेअधिकारीकाध्यानकिसीविशेषबातकीओरआकृ

ष्टकरनाचाहताहैतोवहअर्धशासकीयपत्रलिखताहै।ऐसेपत्रमेंसबसेऊपरपत्रांकएवंदिनांकअंकितरहताहै। संबोधनशब्दकेरूपमें 'महोदय' काप्रयोगनहींहोताहै,
बल्किप्रियडा०शर्माजीश्आदिरूपमेंलिखाजाताहै।प्रेषककानामऔरपतापत्रकेशीर्षपररहताहैऔरप्रेषिती कानाम-पतापत्रकेअंतमेंबायींओरलिखाजाताहै।समापनसूचकशब्दकेरूपमें 'भवनिष्ठ' अथवा 'आपकासबुद्धावी' लिखाजाताहैंजिसकेनीचेप्रेषककाहस्ताक्षरहोताहै,
लेकिनहस्ताक्षरकेनीचेपदकाउल्लेखनहींहोताहै।

अर्धशासकीयपत्रकानमूना

अ०शा०पत्रांक 201/(शि०)/74 दिनांक 5-10-74

डा०भारतभूषणस्वरूपरायजादा राजकीयकालेज,

प्रधानाचार्यरानीखेत (अलमोड़ा)

प्रियडॉ०शर्माजी,

इसकार्यालयकेपत्रांक 341/(शि०)/74 दिनांक 30 जुलाई 1974
कीओरमैंआपकाध्यानआकष्टकरनाचाहताहैंजिसमेंमैंनेनिवेदनकियाथाकिहिन्दीविभागमेंप्रतिसप्ताह 32
घंटीएकहीलेक्चररकोपढ़ानापड़ताहै।अध्यापनकायहकार्यभारनिर्धारितसीमासेबहुतज्यादाहै।इससेछात्रों केसाथन्यायनहींहोपाताहैयदिपाँचयाछहघंटी (पीरिएड)
एकलेक्चररप्रतिदिनपढ़ाताहैतोस्पष्टहैंकिवहबी०ए०केछात्रोंकेसाथन्यायनहींकरसकता।साथहीउक्तहि न्दीअध्यापककेप्रतियहअन्यायहै।अतःआपसेमेराअनुरोधहैंकिइससंबंधमेंआवश्यककार्रवाईकरमुझेअनु गृहीतकरें।

परमआदरसहित।

प्रति,

डॉ०रमेशचन्द्रशर्मा,

शिक्षानिदेशक (उ०शिक्षा),

शिक्षानिदेशालय, उ०प्र०

इलाहाबाद।

सरकारीपत्रकानमूना

पत्रांक 433 (1)/13, (ख)/74-75 दिनांक 3-1-75

प्रेषक,

सचिव, शिक्षाविभाग

उत्तरप्रदेशसरकार,

लखनऊ।

सेवामें,

शिक्षानिदेशक (उच्चशिक्षा),

उ०प्रदेश,

इलाहाबाद।

विषय–अनुमोदितअध्यापकोंकेस्थायीकरणकेविषयमें।

महोदय,

मुझेयहआपसेकहनेकानिर्देशमिलाहैंकिराज्यलोकसेवाआयोगद्वाराअनुमोदितहोनेकेबादविभिन्नराजकीयकालेजोंमेंअस्थायीरूपसेअध्यापनकरतेहुएजिनप्राध्यापकोंकोतीनवर्षसेअधिकहोगयेहों, उनकेस्थायीकरणकेसम्बन्धमेंअविलम्बकार्रवाईकरें।जिनलेक्चररोंअथवाप्राध्यापकोंकीगोपनीयआख्याप्रतिकूलहै, उनकेस्थायीकरणकीकार्रवाईअभीस्थगितरखीजाय।

भवदीय,

अबस

शिक्षासचिव

पृष्ठांकनसं0433 (1) 13 (ख)/74-75 दिनांक 3-1-75

प्रतिलिपिराजकीयकालेजोंकेसभीप्राचार्योंकोइसआशयसेप्रेषितकिवेअपनेअधीनस्थकार्यरतएवंलोकसेवाआयोगद्वाराअनुमोदितअध्यापकोंकीसूचीशिक्षानिदेशालयकोअविलंबभेजेंउन्हींअध्यापकोंकीसूचीभेजें जिन्हेंकार्यकरतेहुएतीनवर्षसेअधिकहोगयेहैं, परन्तुअभीतकउनकेस्थायीकरणकेआदेशनहींहुएहैं।

अबस

शिक्षासचिव

1-औपचारिकपत्रकिसेकहतेहैं tatha yah किसेभेजाजाताहै ?

2-आपकेनामसेप्रेषितएकहजाररु.
केमनीआर्डरकीप्राप्तिनहोनेकाशिकायतपत्रअधीक्षकपोस्टआफिसकोलिखिए।

3- आपगरिमाहैं, XYZ सॉफ्टेकमेंसीनियर कंटेंटराइटरकेरूपमेंकार्यरतहैं।
कंपनीपॉलिसीकेअनुसारछहमाहकेमातृत्वअवकाशकीमांगकरतेहुएएचआरडिपार्टमेंटकोपत्रलिखिए। आवश्यकविवरणभी दें।

निबंध

सामान्य शब्दों में कहें तो निबन्ध **गद्य की ऐसी विधा है जिसमें निबंधकार अपने भाव या विचार को सुसंगठित, व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध तरीके से प्रस्तुत करता है** । किसी भी साहित्यिक विधा को एक ऐसी परिभाषा में बांधना जिसमें उसके सभी तत्वों एवं पक्षों का समावेश हो, आसान नहीं।एक प्रभावशाली, अच्छी तरह से संरचित निबंध **तीन** महत्वपूर्ण भागों में आता है: परिचय, मुख्य भाग और निष्कर्ष।

हिंदीमेंनिबंधलिखतेसमयनिम्नलिखितबातोंपरध्यानदेनाचाहिए-

1-निबंधलिखनाशुरूकरनेसेपहलेसंबंधितविषयकेबारेमेंजानकारीइकट्ठाकरलें।
2-कोशीशकरेंकिविचारक्रमबद्धरूपसेलिखेजाएंऔरउनमेसभीमहत्वपूर्णबिंदुशामिलहों।
3-निबंधकोसरलभाषामेंलिखनेकाप्रयासकरेंऔररोचकबनाएं।
4-निबंधमेंउपयोगकिएगएशब्दछोटेऔरप्रभावशालीहोनेचाहिए।

निबंध चार प्रकार के होते हैं-वर्णनात्मक निबंध,विचारात्मक निबंध,भावात्मक निबंध तथा साहित्यिक या आलोचनात्मक निबंध

1-साइबर अपराध या कंप्यूटर उन्मुखी अपराध

डिजिटल दुनिया ऐसी परिस्थितियों का निर्माण करती है जहाँ कुछ भी गोपनीय या रहस्य नहीं रह जाता।'
कितनी सत्य हैं उपर्युक्त पंक्तियाँ? वर्तमान विश्व क्या सच में ऐसी स्थिति में पहुँच गया है जहाँ कुछ भी छुपा हुआ नहीं हैं? अगर गौर से देखा जाए तो हाँ, बहुत हद तक आज यह स्थिति आ गयी है। इंटरनेट ने समूचे विश्व की सीमाओं को लांघकर ज्ञान, सूचना और संपर्क संबंधी क्रांति को सभी व्यक्तियों तक उपलब्ध कराया है। गौरतलब है कि ज्ञान और अभिव्यक्ति के विस्तार से सुविधाओं में भी विस्तार हुआ है

लेकिन विकृत मानसिकताओं के चलते इस व्यवस्था के दुरूपयोग संबंधी मामले आए दिन सामने आ रहे हैं। वर्तमान में, प्राय: अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सभी सम्मेलनों में साइबर क्राइम चर्चा का विषय बन चुका है।

आज के समय में इंटरनेट समय-बचत का सबसे बड़ा माध्यम बन गया है क्योंकि किसी भी कार्य को करने हेतु लगने वाला खर्च आधे से भी कम रह गया है। इंटरनेट ने हमारी जिंदगी को अनुशासन, सलीका और सुनिश्चितता प्रदान की है, लेकिन इसके साथ-साथ इंटरनेट पर आज अपराध का एक समृद्ध संसार फल-फूल रहा है। इस आपराधिक संसार के ट्रोलिंग, सूचना एवं पहचान की चोरी, यौन अपराध, पोर्नोग्राफी, वायरस अटैक आदि मुख्य अवयव हैं।

साइबर अपराधों को दो तरह से वर्गीकृत किया जा सकता है-

1. **एक लक्ष्य के रूप में कंप्यूटर** (अन्य कंप्यूटरों पर आक्रमण करने के लिये एक कंप्यूटर का उपयोग) जैसे कि हैकिंग, वायरस आक्रमण, DOS आक्रमण आदि।
2. **एक शस्त्र के रूप में कंप्यूटर** अर्थात्, साइबर आतंकवाद, बौद्धिक संपदा अधिकारों के उल्लंघन, क्रेडिट कार्ड धोखाधड़ी, अश्लीलता का प्रसार इत्यादि।

साइबर क्राइम एक ऐसा गैर-कानूनी कार्य होता है जिसमें सूचना तकनीक या कंप्यूटर का उपयोग किया जाता है। सूचना तकनीकी में हुयी प्रगति ने आपराधिक गतिविधियों के क्षेत्र में नई संभावनाओं का मार्ग भी खोला है। इस प्रकार के अपराधों से निपटने हेतु साइबर कानून भी बनाए गए हैं।

साइबर क्राइम के तहत आने वाले विभिन्न कार्य:-

- **अनधिकृत पहुँच और हैकिंग:**
  किसी भी कंप्यूटर या कंप्यूटर नेटवर्क में बिना अनुमति प्रवेश करने को अनधिकृत पहुँच बनाना या हैकिंग कहते हैं। इस प्रकार के कार्य आमतौर पर वित्तीय अपराधों के संदर्भ में देखे जाते हैं। कुछ उदाहरण निम्न हैं-
    - किसी बैंक के खाताधारकों के अकाउंट से दूसरे अकाउंट में पैसे स्थानांतरित करना।
    - किसी व्यक्ति के क्रेडिट कार्ड की जानकारी चुरा कर उसका दुरूपयोग करना।
    - किसी वेबसाइट के घटक को अनधिकृत तरीके से परिवर्तित करना।

भारत के संदर्भ में हैकिंग संबंधित कार्यविधियों को गैरकानूनी दर्जा प्राप्त है एवं इनफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी एक्ट, 2008 के तहत सजा का प्रावधान है।

- **डाटा चोरी:**
  किसी संस्था या व्यक्ति या कंप्यूटर नेटवर्क में अनधिकृत व्यक्ति द्वारा बिना अनुमति लिये उसके कंप्यूटर के डाटा की कॉपी करना या उसे साझा करना डाटा चोरी अपराध के तहत माना जाता है।
- **कंप्यूटर वायरस का प्रसार:**
  किसी प्रोग्राम को किसी कंप्यूटर या कंप्यूटर नेटवर्क की अनुमति के बिना कंप्यूटर में प्रवेश कराना, कंप्यूटर वायरस को फैलाने की श्रेणी में आता है। आमतौर पर वायरस प्रोग्राम

का कार्य किसी अन्य के कंप्यूटर डाटा को खराब करना होता है। जैसे कि किसी विमान सेवा के कंप्यूटर में वायरस के प्रवेश द्वारा डाटा के बदलने से प्लेन के दुर्घटनाग्रस्त होने की संभावना बन सकती है।

- **पहचान की चोरी:**
  किसी अन्य व्यक्ति की पहचान चुराकर कंप्यूटर नेटवर्क पर कार्य करना इस अपराध की श्रेणी में आता है या फिर कंप्यूटर नेटवर्क पर स्वयं की पहचान छुपाते हुए स्वयं को दूसरे के नाम से उजागर करते हुए उस व्यक्ति के नाम पर धोखाधड़ी या घपला करना।
- **ट्रोजन हमला:**
  ट्रोजन प्रोग्राम वैसे प्रोग्राम होते हैं जो देखने में उपयोगी लगते हैं लेकिन उनके द्वारा कंप्यूटर या कंप्यूटर नेटवर्क को नुकसान पहुँचाया जाता है।

इस प्रकार साइबर अपराध के अंतर्गत ऐसे गैर-कानूनी कार्यों को सम्मिलित किया जाता है, जिनसे कंप्यूटर प्रणाली को हथियार के रूप में इस्तेमाल करके अन्य कंप्यूटरों को निशाना बनाया जाता है। वर्तमान में साइबर अपराध के जरिये सोशल नेटवर्किंग के माध्यम से किसी व्यक्ति की निजता में अनधिकार प्रवेश के अतिरिक्त उसकी गोपनीय सूचनाओं की जानकारी को साझा करके उससे धन की उगाही की जाती है। साइबर युद्ध के माध्यम से एक देश दूसरे देश के कंप्यूटर नेटवर्क को नष्ट कर देता है अथवा सामरिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण जानकारियों को हासिल करके राष्ट्र की संप्रभुता को चुनौती देता है। अमेरिका तथा इजरायल ने जहां वर्ष 2009 में ईरान के परमाणु कार्यक्रम के खिलाफ साइबर तकनीक का इस्तेमाल किया था तो वहीं 2016 में संपन्न हुए अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव में रूसी सरकार द्वारा हैंकिंग की बात सामने आयी थी। हैंकिंग का वह बहुचर्चित मामला संपूर्ण विश्व के लिये एक चेतावनी का विषय बन कर उभरा था। वैसे इस समस्या पर अंकुश लगा पाना किसी एक देश के बस की बात नहीं है। यह एक वैश्विक समस्या है और इसका समाधान भी वैश्विक स्तर पर ही तलाशा जा सकता है।

विचारणीय बिंदु यह है कि भारत अपनी विविधता के कारण इस तरह के हमलों के लिये एक मुफीद जगह बन कर उभरा है। भारत में साइबर सुरक्षा तंत्र का विकास अभी अपनी प्रारंभिक अवस्था में है। ऐसे समय में जहाँ हमारा देश 'डिजिटलीकरण' की ओर तेजी से बढ़ रहा है, साइबर सुरक्षा का खतरा भी बढ़ता जा रहा है। भारत में इंटरनेट पर निज़ता के हनन की समस्या भी गंभीर होती जा रही है। 'रैनसमवेयर' जैसे कंप्यूटर वायरस का भारत सहित दुनिया के देशों पर हुए हमले को संभवत: आजतक के इतिहास का सबसे बड़ा साइबर हमला माना जाता है।

अत: वर्तमान डिजिटल एवं सूचना-संचार तकनीकी के युग में, जबकि इंटरनेट का अत्यधिक प्रयोग बढ़ता जा रहा है, इन परिस्थितियों में एक बेहतर 'साइबर सुरक्षा' की आवश्यकता है। साइबर सुरक्षा का तात्पर्य साइबर स्पेस की हमले, क्षति, दुरूपयोग आदि आर्थिक जासूसी से सुरक्षित करना है। साइबर अपराधों के बढ़ते हुए वैविध्य तथा गहनता को देखते हुए सभी राष्ट्रों को मिल जुलकर इस समस्या के समाधान की ओर अग्रसर होने का प्रयास करना चाहिये, क्योंकि वैश्विकरण सूचना एवं संचार तकनीकी के युग में सभी राष्ट्रों के समन्वित प्रयासों से ही इस समस्या का समुचित समाधान निकाला जा सकता है। इसी दिशा में 2004 में 'बुडापेस्ट' से अवांछित साइबर गतिविधियों पर रोक के लिये एक सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य साइबर अपराध से समाज को सुरक्षा उपलब्ध कराए जाने के लिये एक सामान्य नीति बनाना था। इसमें कुछ विशेष शक्तियों और प्रक्रियाओं का उल्लेख है, जिनमें हानिकारक कंप्यूटर नेटवर्क की खोज तथा उन पर रोक शामिल है। भारत में भी साइबर हमलों की बढ़ती संख्या को देखते हुए समय-समय पर इस दिशा में प्रयास किये गए हैं, जैसे- सूचना प्रौद्योगिकी (संशोधन) अधिनियम-2008 भारत की नई साइबर नीति-2013, सूचना

प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा साइबर सुरक्षा के लिये एक संस्थान 'सर्ट इन' इत्यादि का प्रावधान किया गया है।

डिजिटल होती दुनिया में साइबर अपराध एक गंभीर एवं जटिल समस्या है। हैकरों द्वारा प्राय: उन्हीं कंप्यूटर नेटवर्कों में सेंध लगायी जाती है जिनका सुरक्षा-नेटवर्क कमजोर होता है। अत: तकनीक को उन्नत करते हुए तकनीकी रूप से सुदृढ़ नेटवर्क का निर्माण करना हमारी प्राथमिक आवश्यकता होनी चाहिए। इसके लिये आईटी तकनीकों, बायोमेट्रिक तकनीक प्रणाली इत्यादि का उपयोग करके साइबर अपराधों को रोका जा सकता है। साइबर सुरक्षा के आर्थिक पक्ष के तहत 'साइबर बीमा' एक बेहतर प्रयास हो सकता है।

आज जबकि इंटरनेट क्रांति अपनी पाँचवीं पीढ़ी में प्रवेश कर गई है तो ऐसे में यदि हमने साइबर हमलों की चुनौती को पार कर इंटरनेट को सुरक्षित एवं भरोसेमंद बनाने में सफलता प्राप्त कर ली तो अवश्य ही सूचना की यह क्रांति हमारे लिये वरदान सिद्ध होगी

2-बेरोज़गारी निवारण में शिक्षा की भूमिका

घरकीदीवारभीअबटूटकरमुँहचिढ़ारही,
बेरोज़गारीकेजश्नमेंसबकोशरीकहोनाथा।

बेरोज़गारी के दर्द को बयाँ करती ये पंक्तियाँ बोल रही हों जैसे कि अब तो घर की दीवारों को भी इंतजार है, अगली पीढ़ी के रोज़गार का। बेरोज़गारी आज भारत की ही नहीं वरन् विश्व की सबसे बड़ी सामाजिक-आर्थिक समस्याओं में से एक है। भारत में इस समय करोड़ों लोग बेरोज़गारी का सामना कर रहे हैं। कार्य अनुभव तथा आय के निश्चित क्षेत्र की अनुपस्थिति निर्धनता को जन्म देती हैं तथा इसके बाद निर्धनता व बेरोज़गारी का यह दुश्चक्र सदा चलता रहता है। बेहतर अवसरों की तलाश में युवा गाँव, प्रदेश अथवा देश से पलायन करते रहते हैं। ऐसे पलायन के फलस्वरूप उनका शोषण किये जाने का संकट बना रहता है।

बेरोज़गारी की अधिकता से उनका शोषण किये जाने का संकट बना रहता है। बेरोज़गारी की अधिकता राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की प्रगति को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करती है।

युवाओं में बेरोज़गारी का मूल कारण अशिक्षा तथा रोज़गारपरक कौशल की कमी है। बेरोज़गारी व निर्धनता के निवारण का सबसे सशक्त माध्यम शिक्षा ही है। शिक्षा व्यापक अर्थों में लगभग हर सामाजिक-आर्थिक समस्या का समाधान बन सकती है, परंतु बेरोज़गारी निवारण में इसकी भूमिका अतुलनीय है। यदि भारत में शिक्षा तंत्र को जड़ से लेकर उच्चतम स्तर तक सशक्त बना दिया जाए तो बेरोज़गारी की समस्या का हल ढूँढना बेहद आसान हो जाएगा। यह ध्यान देने योग्य है कि प्राथमिक स्तर पर अवधारणा विकास तथा उच्च स्तरों पर रोज़गारपक कौशल विकास आधारित शिक्षा तंत्र को विकसित किया जाए।

प्राचीन समय में शिक्षा बिना किसी औपचारिक शिक्षण संस्थाओं के माध्यम से दी जाती थी किंतु कालांतर में 'शिक्षा' संस्थाओं के माध्यम से दी जाने लगी। पहले मनुष्य प्रकृति, परिवेश एवं अपने अनुभवों तथा जीवन के संघर्षों के माध्यम से सीखता था। जब शिक्षा का संस्थानीकरण हुआ तो भेदभाव की भी शुरुआत हुई। हालाँकि शिक्षा सभी को समान रूप से प्रदान की जाती है लेकिन उसे ग्रहण करना व्यक्ति विशेष की मानसिक क्षमता पर निर्भर करने लगा। इससे सबकी योग्यताओं में भिन्नता आने लगी एवं ऐसे लोगों की संख्या में वृद्धि होने लगी। आगे चलकर जब उन्हें अपनी योग्यता अनुरूप कार्य नहीं मिला तो वे बेरोज़गार की श्रेणी में शामिल होते गए। हालाँकि शिक्षित या गैर-शिक्षित मनुष्य का बेरोज़गार होना 'उत्पादन प्रणाली' से जुड़ा हुआ मुद्दा माना जाता है। वर्तमान समय में शिक्षा सभी के लिये सुलभ नहीं है परंतु शिक्षा प्राप्त करने के उपरांत भी रोज़गार प्राप्त नहीं हो रहा। इसलिये शिक्षा प्राप्त करने भर से रोज़गार मिलना ज़रूरी नहीं है। बेरोज़गारी एक सापेक्षिक अवधारणा है एवं

शिक्षा द्वारा समझ विकसित की जाती है जिससे चेतना का आविर्भाव होता है। अतएव बेरोज़गारी एवं शिक्षा को दो भिन्न प्रकार से देखने की आवश्यकता है। बेरोज़गारी की समस्या का वास्तविक हल रोज़गार सृजन में ही निहित है।

यहाँ पर गांधी जी की प्रासंगकिता बढ़ जाती है जिन्होंने 'चरखा' को आधुनिक मशीनी सभ्यता के विकल्प के तौर पर प्रस्तुत किया था। वर्तमान समय में भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व की सर्वाधिक तीव्र गति से विकास करती अर्थव्यवस्थाओं में शामिल है। देश की तीव्र आर्थिक विकास दर को बनाए रखने के लिये हमें बड़े पैमाने पर कुशल मानव श्रम की आवश्यकता है। वर्तमान कोविड महामारी के दौरान बेरोज़गारी की संख्या में भी वृद्धि हुई है एवं लोगों के समक्ष जीविका का प्रश्न उपस्थित हो गया है। साथ ही इस विपदा के समय कुशल श्रम की आवश्यकता में भी वृद्धि हुई है। लेकिन यह विडंबना ही है कि भारत जैसे युवा देश में कुशल मानव कार्यबल की अत्यधिक कमी है। यह भी देखा गया है कि भारतीय युवा विनिर्माण उद्योगों में कार्य हेतु आवश्यक योग्यता नहीं रखते। ऐसे में यह आवश्यक है कि युवाओं को कौशल प्रशिक्षण एवं रोज़गारपरक शिक्षा दी जाए। इस समस्या के समाधान हेतु ही भारत सरकार द्वारा ''स्किल इंडिया'' कार्यक्रम चलाया जा रहा है जिसका उद्देश्य युवाओं को रोज़गारपरक कौशल प्रशिक्षण प्रदान करना है।

भारत सरकार द्वारा 'प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना' के तहत युवाओं में कौशल निर्माण के उद्देश्य से जगह-जगह कौशल विकास केंद्रों की स्थापना की गई है। इन केंद्रों के माध्यम से विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षणों द्वारा युवाओं के कौशल का विकास किया जाता है। स्टार्टअप इंडिया, स्टैंडअप इंडिया जैसी योजनाएँ भी इस संदर्भ में उल्लेखनीय है। इन योजनाओं के तहत भारत में प्रौद्योगिकी आधारित उद्योगों को विभिन्न प्रकार के अनुदान तथा कर लाभ प्रदान किये जाते हैं। इन योजनाओं के माध्यम से सरकार का लक्ष्य देश को विनिर्माण गतिविधियों का हब बनाना है, जिसके लिये लाखों की संख्या में कौशल प्रशिक्षित युवाओं की आवश्यकता है। यदि इन योजनाओं को सुचारु रूप से संचालित किया जाए तो न केवल उच्च आर्थिक संवृद्धि दर प्राप्त की जा सकती है बल्कि काफी हद तक बेरोज़गारी की समस्या का भी समाधान किया जा सकता है।

शिक्षा बेरोज़गारी दूर करने का लगभग अकेला माध्यम है, परंतु यह भी सुनिश्चित व विनियमित किया जाना आवश्यक है कि कितने लोगों को गुणवत्तापरक शिक्षा प्रदान की जा रही है तथा शिक्षा प्राप्ति के बाद उनकी रोज़गार तक पहुँच सुनिश्चित हो पाती है या नहीं। शिक्षित बेरोज़गारी की समस्या उत्पन्न होने पर यह स्थिति राष्ट्र व अर्थव्यवस्था के लिये अच्छी नहीं मानी जाती। भारत वर्ममान में शिक्षित बेरोज़गारी की समस्या से ग्रस्त है। ऐसे में आगे बढ़ने के लिये अशिक्षितों को शिक्षा तथा शिक्षितों को उनकी क्षमता के अनुरूप रोज़गार दिलाने हेतु पर्याप्त प्रयास किये जाने चाहिये।

वर्तमान भूमंडलीकरण के दौर में शिक्षा व्यवस्था का स्वरूप कैसा हो तथा आधारभूत संरचनात्मक संसाधनों की प्रकृति कैसी हो? यह एक विवाद का विषय है। देखा जाता है कि सरकारी प्राइमरी स्कूलों में कक्षा पाँच के छात्रों के पास न्यूनतम सामान्य ज्ञान भी नहीं होता। इस तरह से प्राथमिक स्तर पर ही असमान शिक्षा प्रणाली दो भिन्न मानसिक स्तर एवं योग्यता वाले छात्रों को जन्म देती है, जिन्हें रोज़गार प्राप्त करने हेतु भविष्य में एक ही प्रतियोगी परीक्षा में प्रतिस्पर्द्धी बनना पड़ता है। सरकारी हाईस्कूल व इंटर कॉलेजों में पढ़ाए जाने वाले पाठ्यक्रम व उनमें पढ़ाने वाले अध्यापकों की योग्यता भी वर्तमान समय की मांग अनुरूप नहीं है। वहीं दूसरी तरफ सीबीएसई व आईएससी जैसे केंद्रीय बोर्डों से निकलने वाले छात्र अपेक्षित रूप से राज्य बोर्ड के छात्रों से कुशल व भिन्न सोच वाले होते हैं। इस तरह माध्यमिक स्तर पर भी असमान प्रतिभा व योग्यता वाले छात्रों का एक वर्ग तैयार हो जाता है।

ऐसे में आवश्यक है कि प्राथमिक स्तर से लेकर उच्च स्तर तक एक समान शिक्षा प्रणाली लागू की जाए। स्कूलों के विभिन्न स्तरों को समाप्त कर एक समान स्कूल प्रणाली अगर लागू कर दी जाए तो गरीब व अमीर परिवार दोनों के बच्चों की मानसिक योग्यता एक प्रकार की होगी। शिक्षण संस्थानों में पढ़ाने वाले अध्यापकों के लिये निरंतर मूल्यांकन प्रक्रिया का होना बहुत आवश्यक है। इसके अलावा

शिक्षा संस्थानों को अत्याधुनिक संसाधनों जैसे- कंप्यूटर, प्रोजेक्टर, वाई-फाई अरि सुविधाओं से भी सुसज्जित होना चाहिये।
हम पाते हैं कि शिक्षा समाज में आमूलचूल परिवर्तन लाने में सक्षम एक अस्त्र है, परंतु उसे कारगर बनाने हेतु उसका कुशल संचालन तथा लक्ष्य तय करना आवश्यक है। शिक्षा को रोज़गार से जोड़कर बेरोज़गारी एवं अन्य कई सामाजिक-आर्थिक समस्याओं का हल निकाला जा सकता है।

3-जनरेशन गैप (पीढ़ी अंतराल)

जनरेशन गैप को विभिन्न पीढ़ियों के लोगों के बीच विश्वास और विचारों के अंतर के रूप में जाना जाता है। यह एक सामान्य सी बात है जो कई वर्षों से जारी है। जनरेशन गैप अक्सर बच्चों और माता-पिता या दादा-दादी के बीच के विचारों के अंतर को बताता है।

जनरेशन गैप शब्द की उत्पत्ति

1960 के दशक में जनरेशन गैप के अंतर का सिद्धांत पेश किया गया था। उस समय के आसपास ऐसा देखा गया कि, युवा पीढ़ी से उनके माता-पिता के विश्वास के बारे में लगभग सभी चीजों के बारे में पूछताछ की गई और वे लगभग हर चीज़ में अपने माता-पिता से अलग निकले। इसमें उनके धार्मिक विश्वासों, राजनीतिक विचारों, नैतिक मूल्यों, रिश्ते की सलाह और यहां तक कि उनका मनपसंद संगीत जो वे पसंद करते हैं शामिल थे। प्रतिष्ठित समाजशास्त्रियों जैसे कार्ल मैनहेम ने पीढ़ियों के बीच मतभेदों को देखा की कैसे विभिन्न स्थितियों में पीढ़ियों ने एक-दूसरे से खुद को अलग किया।

जनरेशन गैप – एक दिलचस्प अवधारणा

जनरेशन गैप आमतौर पर बच्चों और उनके माता-पिता के बीच संघर्ष का कारण है। यह वास्तव में एक दिलचस्प अवधारणा है। अगर दुनिया में इस तरह का अंतर नहीं होता तो दुनिया वास्तव में काफी अलग होती। प्रत्येक पीढ़ी अपनी फैशन प्रवृत्तियों को स्थापित करती है, अपनी मनपसंद भाषा में बात करती है, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास को बढ़ाती है और नए आविष्कारों की ख़ोज करती है।
जनरेशन गैप के कारण समाज में कई बदलाव हुए हैं विशेषकर भारत में जहां संयुक्त परिवार प्रथा पहले से ही प्रचलित थी। बाद में भारत में अलग परिवार बसाने की अवधारणा शुरू हो गई और यह भी पीढ़ी के अंतराल का ही एक परिणाम है। लोग इन दिनों गोपनीयता की लालसा रखते हैं और अपने जीवन को अपने तरीके से जीना चाहते हैं परन्तु संयुक्त परिवार प्रथा इसमें मुख्य बाधा है। इस प्रकार बहुत से लोग अलग-अलग परिवार बसा रहे हैं। इसी प्रकार समाज के विभिन्न स्तरों पर होने वाले कई बदलाव जनरेशन गैप के परिणाम हैं।

निष्कर्ष जैसा की धरती पर सब कुछ अवधारणा है उसी तरह जनरेशन गैप में भी अच्छाई और बुराई है। इस अंतर को खत्म करने के लिए समझ और स्वीकृति को विकसित करने की आवश्यकता है।

विज्ञान और तकनीकी

हम विज्ञान और तकनीकी के समय में रह रहे हैं। हम सभी का जीवन वैज्ञानिक आविष्कारों और आधुनिक समय की तकनीकों पर निर्भर है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी ने लोगों के जीवन को बड़े स्तर पर प्रभावित किया है। इसने जीवन को आसान, सरल और तेज बना दिया है। नए युग में, विज्ञान के विकास ने हमें बैलगाड़ी की सवारी से हवाई यात्रा की सुविधा तक पहुंचा दिया है।

4-विज्ञान और तकनीकी के प्रयोग

विज्ञान और प्रौद्योगिकी आधुनिकरण के हर पहलू को प्रत्येक राष्ट्र में लागू किया गया है। जीवन के हरेक क्षेत्र को सही ढंग से संचालित करने और लगभग सभी समस्याओं को सुलझाने के लिए आधुनिक उपकरणों की खोज की गई है। इसे चिकित्सा, शिक्षा, बुनियादी ढांचा, ऊर्जा निर्माण, सूचना प्रौद्योगिकी और अन्य क्षेत्रों में लागू किए बिना सभी लाभों को प्राप्त करना संभव नहीं था।

विज्ञान और तकनीकी का महत्व

हम विज्ञान में प्रगति नहीं करते तो आज भी हमारा जीवन पहले की तरह दुष्कर और कठिन होता। नवीन आविष्कारों ने हमें बहुत लाभ पहुँचाया है। हमारे चारों तरफ अनेक तकनीकी मौजूद है। मोबाइल फोन, टीवी, कम्प्यूटर, इंटरनेट, ओवन, फ्रिज, वाशिंग मशीन, पानी निकालने वाली मोटर, मोटर साइकिल, जहाज, ट्रेन, बस, यातायात के साधन, सभी कुछ आधुनिक तकनीकी की सहायता से सम्भव हो सका है। नई तरह की दवाइयां, चिकित्सा उपकरणों की सहायता से अब जटिल रोगों का इलाज भी सम्भव हो गया है। इस तरह से हम कह सकते हैं कि आज के समय में आधुनिक तकनीकी के बिना हमारा जीवन भी संभव नही है।

निष्कर्ष

देश के उचित विकास और वृद्धि के लिए, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के साथ-साथ चलना बहुत आवश्यक है। गाँव अब कस्बों के रुप में और कस्बे शहरों के रुप में विकसित हो रहे हैं और इस प्रकार से अर्थव्यवस्था के क्षेत्रों में भी काफी विकास देखने को मिला है।

5-भारतीय संस्कृति

भारत संस्कृतियों से समृद्ध देश है, जहाँ अलग-अलग संस्कृतियों के लोग रहते हैं। हम भारतीय संस्कृति का बहुत सम्मान और आदर करते हैं। संस्कृति सबकुछ है जैसे दूसरों के साथ व्यवहार करने का तरीका, विचार, प्रथा जिसका हम अनुसरण करते हैं।कला, हस्तशिल्प, धर्म, खाने की आदत,त्यौहार, मेले, संगीत और नृत्य आदि सभी संस्कृति का हिस्सा है।भारतीय संस्कृति विभिन्नता में एकता का अनूठा संगम प्रस्तुत करती है।

भारत की विभिन्न संस्कृतियाँ

भाषा , धर्म और पंथ – भारत की राष्ट्रीय भाषा हिन्दी है हालाँकि विभिन्न राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों में लगभग 22 आधिकारिकभाषाएँ और 400 दूसरी भाषाएँ प्रतिदिन बोली जाती हैं। इतिहास के अनुसार, हिन्दू और बुद्ध धर्म जैसे धर्मों की जन्मस्थली के रुप में भारत को पहचाना जाता है। भारत की अधिकांशजनसंख्या हिन्दू धर्म से संबंध रखती है। हिन्दू धर्म की दूसरी विविधता शैव, शक्त्य, वैष्णव और स्मार्ता है।

वेशभूषा और खानपान – भारत अधिक जनसंख्या के साथ एक बड़ा देश है जहाँ विभिन्न धर्मों के लोग अपनी अनोखी संस्कृति के साथ एकसाथ रहते हैं। देश के कुछ मुख्य धर्म हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, जैन और यहूदी हैं। भारत एक ऐसा देश है जहाँ देश के अलग-अलग हिस्सों में भिन्न –

भिन्न भाषाएँ बोली जाती हैं। आमतौर पर यहाँ के लोग वेशभूषा, सामाजिक मान्यताओं, प्रथा और खाने की आदतों में भिन्न होते हैं।

पर्व और जयंतियाँ – विभिन्न सामाजिक कार्यक्रमों सहित हम कुछ राष्ट्रीय उत्सवों को एकसाथ मनाते हैं जैसे गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस, गाँधी जयंती आदि। बिना एक-दूसरे में टाँग अड़ाये बेहद खुशी और उत्साह के साथ देश के विभिन्न भागों में विभिन्न धर्मों के लोग अपने त्योंहारों को मनाते हैं।

निष्कर्ष

कुछ कार्यक्रम जैसे बुद्ध पूर्णिमा, महावीर जयंती, गुरु पर्व आदि कई धर्मों के लोगों द्वारा एकसाथ मनाया जाता है। भारत अपने विभिन्न सांस्कृतिक नृत्यों जैसे शास्त्रीय (भरत नाट्यम, कथक, कथक कली, कुच्ची पुड़ी) और अपने क्षेत्रों के लोक नृत्यों के अनुसार बहुत प्रसिद्ध है। पंजाबी भाँगड़ा करते हैं, गुजराती गरबा करते हैं, राजस्थानी घुमर करते हैं, आसामी बिहू करते हैं। इसलिए भारत दुनियाभर में अपने विभिन्न संस्कृतियों के लिए प्रसिद्ध है।

अभ्यासकार्य–

1: "ग्लोबलवार्मिंगऔरपर्यावरण"

- **परिचय:**ग्लोबलवार्मिंगकामहत्व।
- **मुख्यभाग:**ग्लोबलवार्मिंगकेकारण, प्रभाव, औरसमाधान।
- **उपसंहार:**हमारीजिम्मेदारीऔरभूमिका।

2: "महिलासशक्तिकरण"

- **परिचय:**महिलासशक्तिकरणकामहत्व।
- **मुख्यभाग:**वर्तमानस्थिति, चुनौतियाँ, औरसमाधान।
- **उपसंहार:**समाजमेंमहिलासशक्तिकरणकाभविष्य।

3: "भारतमेंशिक्षाप्रणाली"

- **परिचय:**शिक्षाकामहत्व।
- **मुख्यभाग:**वर्तमानशिक्षाप्रणालीकीस्थिति, समस्याएँ, औरसुधारकेउपाय।
- **उपसंहार:**शिक्षाप्रणालीकाभविष्य।

4: "डिजिटलइंडियाकामहत्व"

- **परिचय:**डिजिटलइंडियाकीपरिकल्पना।
- **मुख्यभाग:**डिजिटलइंडियाकेलाभ, चुनौतियाँ, औरवर्तमानस्थिति।
- **उपसंहार:**डिजिटलइंडियाकाभविष्य।

अभ्यास 5: "सामाजिकमीडियाकाप्रभाव"

- **परिचय:**सामाजिकमीडियाकापरिचय।
- **मुख्यभाग:**सामाजिकमीडियाकेसकारात्मकऔरनकारात्मकप्रभाव।
- **उपसंहार:**सामाजिकमीडियाकाविवेकपूर्णउपयोग।

अभ्यास 6: "धार्मिकसहिष्णुताऔरसमाज"

- **परिचय:**धार्मिकसहिष्णुताकामहत्व।
- **मुख्यभाग:**धार्मिकसहिष्णुताकीवर्तमानस्थिति, चुनौतियाँ, औरसमाधान।
- **उपसंहार:**सहिष्णुसमाजकीपरिकल्पना।

अभ्यास 7: "भारतीयअर्थव्यवस्थाऔरवैश्वीकरण"

- **परिचय:**वैश्वीकरणकाअर्थऔरमहत्व।
- **मुख्यभाग:**वैश्वीकरणकेभारतीयअर्थव्यवस्थापरप्रभाव, लाभ, औरचुनौतियाँ।
- **उपसंहार:**वैश्वीकरणकाभविष्यऔरसंभावनाएँ।

अभ्यास 8: "कलाऔरसंस्कृतिकासंरक्षण"

- **परिचय:**कलाऔरसंस्कृतिकामहत्व।
- **मुख्यभाग:**वर्तमानस्थिति, संरक्षणकेउपाय, औरचुनौतियाँ।
- **उपसंहार:**कलाऔरसंस्कृतिकाभविष्य।

अभ्यास 9: "स्वस्थजीवनशैलीकामहत्त्व"

- **परिचय:**स्वस्थजीवनशैलीकीआवश्यकता।
- **मुख्यभाग:**स्वस्थजीवनशैलीकेउपाय, चुनौतियाँ, औरलाभ।
- **उपसंहार:**स्वस्थजीवनकेप्रतिजागरूकता।

अभ्यास 10: "मानवाधिकारऔरउनकासंरक्षण"

- **परिचय:**मानवाधिकारकापरिचय।
- **मुख्यभाग:**मानवाधिकारोंकीस्थिति, चुनौतियाँ, औरसंरक्षणकेउपाय।
- **उपसंहार:**मानवाधिकारसंरक्षणकीमहत्ता।

-